पाठशाला के लिए उपयोगी

बालसभा

भाग-1

प्रकाशक
धर्मोदय परीक्षा बोर्ड
सागर (म.प्र.)

❑ **कृति**
बालसभा भाग -1

❑ **सर्वाधिकार**
प्रकाशकाधीन

❑ **लागत मूल्य**
40/-

❑ **प्राप्तिस्थान**
धर्मोदय परीक्षा बोर्ड
सागर- 470001 (म.प्र.)

I

कहाँ /क्या

1.	बालसभा आयोजन	3
2.	हमारी पाठशाला है	5
3.	नमोऽस्तु	7
4.	बड़ा ही महत्त्व है	9
5.	अष्टक	13
6.	गद्य-पाठ	14
7.	चुटकुले	30
8.	इनकी जिंदगी आपका फैशन	63
9.	मुक्तक	69
10.	काव्य-पाठ	83
11.	लौकिक पहेली	103
12.	खेल-खेल में	112
13.	सामान्य ज्ञान	143
14.	नियमावली	157

दो शब्द

रात्रिकाल में चलने वाली पाठशाला में सप्ताह के एक दिन बच्चों के मनोरंजन के लिये बालसभा का आयोजन किया जाता है। बालसभा के आयोजन हेतु एक ऐसे संकलन की मांग होती रही है, जिसमें मनोरंजन के साथ उनमें धार्मिक संस्कार, ज्ञान-विज्ञान का भी विकास हो। तभी किया बालसभा भाग-1 पुस्तक का संयोजन।

इसमें सर्वप्रथम बालसभा का आयोजन कैसे करें इसकी विधि पश्चात् हमारी पाठशाला है गीत, आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज को नमोऽस्तु , बड़ा ही महत्त्व है, बड़ा ही अन्तर, अष्टक, 37 गद्य-पाठ, 202 चुटकुले, इनकी जिंदगी आपका फैशन, 117 मुक्तक, 27 काव्य-पाठ, 100 लौकिक पहेली, 24 खेल, सामान्य ज्ञान एवं नियमावली है ।

इस पुस्तक में जिन मुनिराजों, आर्यिकाओं, त्यागी वृतियों, ब्रह्मचारी भाईयों एवं विद्वान गृहस्थ श्रावकों की रचनाओं का समावेश किया गया है ।उन सबके प्रति मैं अपने हृदय के गहनातिगहन तल से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

इस पुस्तक के प्रकाशन में गुना के श्रावक श्री अनिलकुमार जी जैन खैरा को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने अर्थ सहयोग प्रदान किया।

प्रकाशक

बालसभा आयोजन

1. बालसभा शनिवार अथवा अन्य किसी अनुकूल दिवस में आयोजित करें।

2. सामूहिक सभी कक्षाओं के एक साथ आयोजित करने हेतु आवश्यक सामग्री एवं व्यवस्था– सभा संचालक, दो माईक, सभा का अध्यक्ष बनाना, पुरुस्कार वितरण हेतु मुख्य अतिथि।

3. बालसभा प्रारम्भ करने के पूर्व मंगलाचरण, दीपप्रज्जवलन, अध्यक्ष, मुख्यअतिथि की घोषणा एवं सम्मान आदि करें।

4. बालसभा की पूर्व तैयारी एवं प्रक्रिया– एक दिन पूर्व ही प्रत्येक कक्षाओं में से बच्चों के नाम लिख लें जो बोलना चाहते हों। संभव हो तो बच्चों को पूर्व से (भजन, कहानियाँ, संस्मरण हास्य प्रसंग, काव्यपाठ आदि) तैयारी करवावें।

5. बालसभा में सभी कक्षाओं के अनुसार पृथक् छोटे–छोटे डब्बों में बच्चों के नाम की चिट रखें एवं चिट निकलने पर जिन बच्चों का नाम आवे उसे बुला लेवें।

6. पुरुस्कार दो प्रकार के सामान्य एवं विशेष रखें अथवा कक्षाओं की श्रेष्ठता के अनुरूप भी संयोजित कर सकते हैं। बच्चे की सामान्य प्रस्तुति में सामान्य अथवा अच्छी प्रस्तुति विशेष पुरुस्कार देवें। प्रश्नमंच हेतु 10 पुरुस्कार अलग से देवें।

7. यह घोषणा पहले ही कर दें कि मात्र 15 अथवा 20 बच्चे अथवा (समय सीमा 1 घंटा आदि में) जिनका पहले नम्बर आयेगा उन्हें मंच पर प्रस्तुति देने का मौका मिलेगा। अथवा शेष नाम अगली बालसभा के लिये सुरक्षित रखें जायेंगे।

8. प्रत्येक वर्ग से 1–1 बच्चे की प्रस्तुति होने पर प्रथम राउन्ड पूर्ण कर सभी बच्चों से प्रश्न / पहेली आदि पूछें तथा उत्तर देने वालों को पुरुस्कृत करें।

9. मंच पर पुरस्कार पाने वाले बच्चों का सामान्य साक्षात्कार लें। जैसे–आपका नाम, माता–पिता का नाम, शिक्षा, व्यापार, आवास कहाँ, आपका लक्ष्य, पसंदीदा खेल, भोजन, वस्त्र, क्षेत्र वंदना आदि।

विशेष-

1. सही उत्तर आने पर भी चाहें तो और भी अन्य बच्चों से पूछें, जिससे आत्मविश्वास का पता चलता है और अंत में जिसने सबसे पहले सही बताया है, उसे पुरुस्कृत करें। एवं बच्चे द्वारा बताये गये उत्तर का पुनः माईक से सबके सामने व्याख्यान करें।

   जैसे- 24 वें तीर्थंकर कौन हैं उत्तर-भगवान महावीर।

   संचालक-आप सभी जानते हैं जो संसार से पार लगाते हैं, वे तीर्थंकर कहलाते हैं, तीर्थंकर 24 होते हैं। उनमें अंतिम तीर्थंकर का नाम आया है भगवान् महावीर जो बिल्कुल सही है। गलत उत्तर आने पर उत्तर सही नहीं है ऐसा भी कह सकते हैं। यदि कोई न बता पावे तो आप स्वयं उस प्रश्न का उत्तर व्याख्यान सहित बतावें। अथवा अगली बालसभा के लिये प्रश्न सुरक्षित रखें तथा बच्चों से खोज कर लाने के लिये कहें।

2. शोर होने पर जयकारा लगावें **ओम् शांति** अथवा भजन की दो, चार पंक्तियाँ बोलकर माहौल बनायें। अथवा एक अंगुली मुख पर रखकर दूसरा हाथ उठाने को कहें। सभी बच्चों के शांत बैठने पर प्रश्न पूछें।

3. प्रथम आदि राउन्ड के बाद पाठशाला शिक्षकों को भी प्रस्तुति हेतु आमंत्रित करें। एवं सुनाई गई कहानी आदि में से भी प्रश्न पूछें। जिससे बच्चे ध्यान पूर्वक सुन सकें।

4. संचालक बीच-बीच में मुक्तक, भजन, हास्य प्रसंग आदि का भी प्रयोग करें, जिससे माहौल आर्कषक बना रहे। तथा पाठशाला बच्चों के अतिरिक्त सभा में बैठे अन्य महिलायें व पुरुषों से भी प्रश्न पूछें, जिससे कि बालसभा बृहत् रूप ले सके।

5. बालसभा के अंत में अध्यक्षीय उद्बोधन, आभार प्रदर्शन करें।

हमारी पाठशाला है

हमें आचरण सिखलाती --------- हमारी पाठशाला है।
हमें व्यवहार सिखलाती --------- हमारी पाठशाला है।
हमें मंदिर बुलाती --------- हमारी पाठशाला है।
प्रभु दर्शन दिलाती --------- हमारी पाठशाला है।

छना पानी सदा पीना --------- सिखाती पाठशाला है।
कभी ना रात को खाना --------- सिखाती पाठशाला है।
प्याज, आलू नहीं खाना --------- सिखाती पाठशाला है।
ना होटल में कभी जाना --------- सिखाती पाठशाला है।
सदा आदर विनय करना --------- सिखाती पाठशाला है।
चरण छूकर नमन करना --------- सिखाती पाठशाला है।
पिता-माता की सेवा करना --------- सिखाती पाठशाला है।
कभी आपस में ना लड़ना --------- सिखाती पाठशाला है।
कभी अभिमान ना करना --------- सिखाती पाठशाला है।
सदा पापों से तुम डरना --------- सिखाती पाठशाला है।
बुरी आदत ना तुम लाना --------- सिखाती पाठशाला है।
मिले अच्छाई तो पाना --------- सिखाती पाठशाला है।
धर्म पालो सदा अपना --------- सिखाती पाठशाला है।
हमें णमोकार है जपना --------- सिखाती पाठशाला है।
चलें सद्मार्ग पर कैसे --------- सिखाती पाठशाला है।
सही जैनी बनें कैसे --------- सिखाती पाठशाला है।
सदाचारी सदा बनना --------- सिखाती पाठशाला है।
कभी निन्दा नहीं करना --------- सिखाती पाठशाला है।
कभी चुगली नहीं करना --------- सिखाती पाठशाला है।

जिनवाणी को नित पढ़ना --------- सिखाती पाठशाला है।
गीत आतम के तुम गाना --------- सिखाती पाठशाला है।

कभी हिंसा नहीं करना --------- पाठ पढ़ना यहाँ आकर।
कभी ना झूठ तुम कहना --------- पाठ पढ़ना यहाँ आकर।
ना चोरी तुम कभी करना --------- पाठ पढ़ना यहाँ आकर।
बुरी दृष्टि ना तुम रखना --------- पाठ पढ़ना यहाँ आकर।
ना आसक्ति अधिक रखना --------- पाठ पढ़ना यहाँ आकर।

देवपूजा सदा करना --------- बताती पाठशाला है।
गुरु सेवा में नित रहना --------- बताती पाठशाला है।
करो स्वाध्याय नित ही तुम --------- बताती पाठशाला है।
रहें संयम से जीवन में --------- बताती पाठशाला है।
करें तप हो सुखी जीवन --------- बताती पाठशाला है।
करें हम दान नित-प्रतिदिन --------- बताती पाठशाला है।

जहाँ सद्ज्ञान है मिलता --------- हमारी पाठशाला है।
जहाँ सम्मान है मिलता --------- हमारी पाठशाला है।
सभी को लगती है प्यारी --------- हमारी पाठशाला है।

कभी ना भूलना इसको --------- ये प्यारी पाठशाला है।
बड़े उपकार हैं इसके --------- ये प्यारी पाठशाला है।

हमारी पाठशाला है, हमारी पाठशाला है।

आचार्य श्री जी को नमोऽस्तु

माई सोल्ड, डूबो मत लगाओ डुबकी, चेतना के गहराव में, तोता क्यों रोता, नर्मदा का नरम कंकड़ , प्रवचन पारिजात, प्रवचन प्रमेय, सागर बूंद समाय, सागर मंथन, चेतन का भोग ब्रह्मचर्य, समग्र, जैन गीता, सुनीति शतक, स्तुति शतक कितनी ऐसी ही कृतियाँ महान् आत्मा के द्वारा हिन्दी, अंग्रेजी, कन्नड़, मराठी, बंगाली, संस्कृत भाषा में लिखी गयीं। जो इस भीड़ भरे संसार में आत्म उन्नति के लिए अति उत्तम हैं, मगर वो मूकमाटी महाकाव्य जिस महाकाव्य की तुलना बड़े-बड़े विद्वानों ने इन्टरनेशनल पोएट मिल्टन की पैराडाइज लोस्ट, प्रसाद की कामायनी, बाल्मिकी की रामायण, कालीदास की मेघदूत और रघुवंश से जिस मूकमाटी की तुलना की ऐसी मूकमाटी के लेखक, रचयिता, समाधि सम्राट, सम्राटों के सम्राट, विश्ववंदनीय, प्रातः स्मरणीय मौन के साधक, महान् तत्त्ववेत्ता, ज्योतिपुंज, युगप्रहरी, संयम के सूर्य, जिनशासन-शिरोमणि, तेजोमय नक्षत्र, सद्गुण रत्न, स्वाध्याय-प्रिय, मोक्षवीथि पथिक, क्षमाधर, परोपकार परायण, विवेक दर्पण, अर्हत्नीति, उन्नायक, कीर्ति निकुंज, विमल विचारक, भव्यजन दुःखभंजक, जैन आगम निधि संरक्षक, बोधि वृक्ष, मुक्तिदूत, सरस्वती कंठाभरण, संस्कृत सरोज सरोवर, दिव्य विभूति, भवार्णव पारगामी, जिनागम सिन्धु, जिनचरणानुगामी, वरिष्ठ विद्वान्, गणनायक, वाङ्मय वारिधि, अध्यात्मोन्मुखी, सिद्धव्याख्याता, सिद्धीसोपान, शास्त्रार्थ निपुण, ऊर्जा के केन्द्र, स्वस्थ्य परम्परा सम्पोषक, प्रभापुञ्ज, अनेकान्त विवेचक, जिनशासनसेवी, हृदयहारी, कलिकाल सर्वज्ञ, महामनीषी, समाधिसदन, अप्रमत्त बिहारी, उदारमनः हितचिन्तक सरस व्याख्याकार, शब्दशिल्पी, मननशील, मधुरभाषी, सौम्य स्वभावी, सद् संस्कार संजीवक, अमृत पुरुष दृढ़प्रतिज्ञ, आनन्दघन, श्रमनिष्ठ दिगम्बराचार्य संयमाचार्य जैनाचार्य वाणीभूषण संत शिरोमणि, चारित्र शिरोमणि, आचार्यों के आचार्य, चारित्र चक्रवर्ती आचार्य, महावीर के लघुनंदन, कुन्दकुन्द गुरु के कुन्दन, ऋषिवर, मुनिवर, गुरुवर, आचार्यवर, हंसवत् विवेकी, सिंह से पराक्रमी, हाथीवत् स्वाभिमानी, इंदुवत् शीतल, तरूसम परोपकारी, अध्यात्म जगत् के

अनमोल रत्न, साधना के सम्मेदशिखर, जिनका मुखमण्डल निहारने से ऐसा प्रतीत होता है जैसे हजारों सूरज अपनी किरणें एक साथ बिखेर रहे हों । जिन्होंने अनन्त निन्दाओं अनन्त प्रशंसाओं का आज तक कोई उत्तर नहीं दिया ऐसे भारत रत्न, भारत विभूति, श्रमण संस्कृति के महाउन्नायक, युगदृष्टा, युगचेता, महाकवि, काव्य जगत् के कर्णधार, साधना के सच्चे सदन, ज्ञानदीप के तप्त सूर्य जो अपनी प्रखर रश्मियों से अज्ञान के तिमिर का नाशक है। जिनकी दिनचर्या देख करके लोग अपनी घड़ियाँ मिलाते हैं, जिनके दो सौ से अधिक पिच्छिकाधारी साधु संत आर्यिका देवाधिदेव अर्हन्तदेव 1008 आदिनाथ भगवान के बताये हुये मार्ग पर चल रहे हैं। सागर से गंभीर मेरू से धीर, रवि तुल्य तेजस्वी, नभ से निर्मल, गिरिसम अचल, कंचन-सा अंग, सागर से गहरे, हिमालय से ऊँचे, कोयल-सा कंठ, सुधा तुल्य वचन, मणिवत् कांतिवान्, ज्ञान में वर्धमान, पृथ्वी तुल्य क्षमाधारी, शशी सम शीतल धर्म के अवतार, आगम पंथी, पञ्चम युग के प्रकाशपुञ्ज, स्वाध्याय के सच्चे सदन, धर्म धुरंधर, ज्ञान समुद्र के अनमोल रत्न, महावीर की प्रतिमूर्ति, पतित उद्धारक, सन्मार्ग दिवाकर, परोपकारी, निमित्तज्ञानी, धर्म दिवाकर, तीर्थ उद्धारक, करूणा के असीम आकाश, स्वप्नों में सुप्त जिनके नेत्रों में गुण ग्राहिता है, जिनकी वाणी ऐसी प्रतीत होती है जैसे देवाधिदेव अरिहंत देव की वाणी, सरस्वती उनके कंठ में विराजमान हो। उनके मुख मंडल पर थिरकती मुस्कान ऐसी लगती है मानो कह रही है नृत्य से थिरकते पुलक से आमंत्रण दे रही है हम सभी को आओ होश पूर्वक जीने की कला सीखो। इनकी मुस्कान में यही रहस्य छिपा है। ये वो सूरज हैं जो दीन दु:खी जीवों को शीतलता प्रदान करते हैं जो ना ही राग करते हैं और ना ही द्वेष, पृथ्वी इनका बिछौना है, आकाश इनका ओढ़ना, ब्रह्मतेज से दैदीप्यमान मुखमण्डल, स्वभाव से सरल, संसार से उदास, निरन्तर आत्मानुभव, सबके प्रति समभाव, समताभाव, करूणाभाव रखने वाले अत्यन्त निस्पृही, जिनका आन्तरिक व्यक्तित्व बड़े-बड़े मनीषियों के आकर्षण का केन्द्र बना है। ऐसी शांतिवीर शिवज्ञान के धनी। आचार्य गुरुवर के चरणों में मेरा बारम्बार नमोऽस्तु, नमोऽस्तु, नमोऽस्तु।

बड़ा ही महत्त्व है

बच्चों में पढ़ने का, सिलाई में कढ़ने का।
शिखर में चढ़ने का, बड़ा ही महत्त्व है॥

चालीसा में चालीस का, सोने की पॉलिस का।
शिखर जी में मालिश का, बड़ा ही महत्त्व है॥

देखने में शीशा का, धर्मों में अहिंसा का।
पढ़ने में चालीसा का, बड़ा ही महत्त्व है।

हिन्दी में मात्रा का, स्कूल में छात्रा का।
शिखरजी की यात्रा का, बड़ा ही महत्त्व है॥

भव से तरण का, त्याग के वरण का।
टोंक में चरण का, बड़ा ही महत्त्व है॥

चलने में पाथ का, मित्रों में साथ का।
तीर्थंकरों में पार्श्वनाथ का, बड़ा ही महत्त्व है॥

माता-पिता की फिकर का, आपस में जिकर का।
मंदिर में शिखर का, बड़ा ही महत्त्व है॥

प्रभु दर्श में लखने का, भोजन में चखने का।
यात्रा में थकने का, बड़ा ही महत्त्व है॥

विद्यालय में प्राचार्य का, कक्षा में आचार्य का।
घर में माता-पिता का, बड़ा ही महत्त्व है॥

सब्जी में जीरा का, रत्नों में हीरा का।
तीर्थंकरों में महावीरा का, बड़ा ही महत्त्व है॥

हाथ में कलाई का, दूध में मलाई का।
मनुष्यों में भलाई का, बड़ा ही महत्त्व है॥

देशों में अवन्ती का, माताओं में कुन्ती का।
पर्वों में महावीर जयन्ती का, बड़ा ही महत्त्व है॥

नारी में शर्म का, स्वभाव में नर्म का।
धर्मों में जैनधर्म का, बड़ा ही महत्त्व है॥

नामों में प्रिंसा का, वीर की अहिंसा का।
पृथ्वी में दिशा का, बड़ा ही महत्त्व है॥

भिखारियों में भिक्षा का, शहरों में रिक्शा का।
जीवों में रक्षा का, बड़ा ही महत्त्व है॥

अखबार में समाचार का, करने में विचार का।
जीवन में सदाचार का, बड़ा ही महत्त्व है॥

सब्जी में छोंक का, चाकू में नोक का।
शिखर जी में टोंक का, बड़ा ही महत्त्व है॥

भाषा में जाटी का, भोजन में दाल बाटी का।
शिखर जी में लाठी का, बड़ा ही महत्त्व है॥

उम्र में साल का, सिर में बाल का।
बैठने में हाल का, बड़ा ही महत्त्व है॥

शरीर में Heart का, सड़कों में Dust का।
लड़कों में Shirt का, बड़ा ही महत्त्व है॥

बिलों में Rat का, पहनने में Hat का।
क्रिकेट में Bat का, बड़ा ही महत्त्व है॥

बुड्ढों में छड़ी का, हाथों में घड़ी का।
पटाखों में लड़ी का, बड़ा ही महत्त्व है॥

गेहूँ में आटे का, खाने में पराठे का॥
लड़की के चाटे का, बड़ा ही महत्त्व है॥

मंदिर में दर्शन का, बाहर में प्रदर्शन का।
सेठ में सुदर्शन का, बड़ा ही महत्त्व है॥

दूध में मलाई का, खाने में मिठाई का।
ससुराल में जमाई का, बड़ा ही महत्त्व है॥

मंदिर में भगवान का, भगवान में राम का।
राम में आत्मा का, बड़ा ही महत्त्व है॥

लिखने में पेन का, गले में चैन का।
यात्रा में ट्रेन का, बड़ा ही महत्त्व है॥

बुनने में सूजा का, मंदिर में पूजा का।
रक्षाबंधन में गूँजा[1] का, बड़ा ही महत्त्व है॥

ध्वज में दण्ड का, समिति में फण्ड का।
मौसमों में ठण्ड का, बड़ा ही महत्त्व है॥

युद्ध में तलवार का, नाव में पतवार का।
गोटेगाँव में मंगलवार का, बड़ा ही महत्त्व है॥

ग्रहों में शनीचर का, घरों में फर्नीचर का।
गधों में खच्चर का, बड़ा ही महत्त्व है॥

आसमान में बादल का, कीचड़ में दलदल का।
खेतों में फसल का, बड़ा ही महत्त्व है॥

मानव में शान का, चेहरे में कान का।
मंदिर में भगवान का, बड़ा ही महत्त्व है॥

महाभारत में कंस का, जीवन में अंत का।
धरती में संत का, बड़ा ही महत्त्व है॥

जीवन में पानी का, जिंदगी में जवानी का।
ग्रंथों में जिनवाणी का, बड़ा ही महत्त्व है॥

माँ की मार का, बरसात की कहार का।
जीवन में संस्कार का, बड़ा ही महत्त्व है॥

खेत में ट्रेक्टर का, जिले में कलेक्टर का।
जीवन में करेक्टर का, बड़ा ही महत्त्व है॥

फलों में आम का, वस्तु में दाम का।
भारत में श्रीधाम का, बड़ा ही महत्त्व है॥

कक्षा में हल्ले का, क्रिकेट में बल्ले का।
कमर में छल्ले का, बड़ा ही महत्त्व है॥

दूध में मलाई का, घर में लड़ाई का।
जीवन में पढ़ाई का, बड़ा ही महत्त्व है॥

चरित्र में विवेक का, खेल में क्रिकेट का।
पूजा में अभिषेक का, बड़ा ही महत्त्व है॥

भोजन में दाल-रोटी का, पर्वत में ऊँची चोटी का।
पढ़ने में मूकमाटी का, बड़ा ही महत्त्व है॥

बर्तन में कढ़ाई का, कपड़ों में सिलाई का।
बच्चों में पढ़ाई का, बड़ा ही महत्त्व है॥

बिजली में करेंट का, सड़क में एक्सीडेंट का।
आफिस में असिस्टेंट का, बड़ा ही महत्त्व है॥

1. खाने की मिठाई

रस में गन्ने का, पानी में छन्ने का।
मोक्षमार्ग पर चलने का, बड़ा ही महत्त्व है॥

स्कूल में ज्ञान का, जीवन में बलिदान का।
दुनिया में हिन्दुस्तान का, बड़ा ही महत्त्व है॥

जानवर में लंगूर का, पैरों में बूट का।
अदालत में झूठ का, बड़ा ही महत्त्व है॥

बच्चों में खेल का, स्टेशन में रेल का।
परीक्षा में फेल का, बड़ा ही महत्त्व है॥

साड़ी में कढ़ाई का, परीक्षा में पढ़ाई का।
ससुराल में लड़ाई का, बड़ा ही महत्त्व है॥

गुरुकुल में शिक्षा का, साधुओं में भिक्षा का।
मोक्षमार्ग में दीक्षा का, बड़ा ही महत्त्व है॥

नगर में सेल का, कपड़ों में मैल का।
चिह्नों में चिह्न बैल का, बड़ा ही महत्त्व है॥

दिनों में सण्डे का, पुलिस में डण्डे का।
केशरिया झण्डे का, बड़ा ही महत्त्व है॥

तरकश में तीर का, पृथ्वी में समीर का।
तीर्थंकरों में महावीर का, बड़ा ही महत्त्व है॥

घर में नारी का, फूलों में क्यारी का।
मंदिर में पुजारी का, बड़ा ही महत्त्व है॥

पक्षियों में जटायु का, जीवों में आयु का।
जीवन में प्राण वायु का, बड़ा ही महत्त्व है॥

हीटर में क्वाइल का, लोगों में स्टाईल का।
मुनियों की स्माईल का, बड़ा ही महत्त्व है॥

नाटक में वेश का, देश में प्रदेश का।
संतों के उपदेश का, बड़ा ही महत्त्व है॥

सभा में विद्वानों का, दान करने में धनवानों का।
लड़ाई में बलवानों का, बड़ा ही महत्त्व है॥

हिन्दुओं में शंकर का, मुस्लिमों में पैगम्बर का।
दिगम्बरों में तीर्थंकर का, बड़ा ही महत्त्व है॥

पूजन में अभिषेक का, चरित्र में विवेक का।
बर्थडे में केक का, बड़ा ही महत्त्व है॥

पुस्तक में ज्ञान का, शिक्षक में मान का।
मंच में सम्मान का, बड़ा ही महत्त्व है॥

गंजे में बाल का, गोरे में गाल का।
ठंडी में साल का, बड़ा ही महत्त्व है॥

लिखने में पेन का, गणित में टेन का।
अंधेरे में लालटेन का, बड़ा ही महत्त्व है॥

शेरों में बाल का, चढ़ने में ढाल का।
घर में हाल का, बड़ा ही महत्त्व है॥

उड़ने में पंख का, बजाने में शंख का।
बिच्छू के ढंक का, बड़ा ही महत्त्व है॥

पेड़ों में नीम का, शृंगार में क्रीम का।
आयोजन में टीम का, बड़ा ही महत्त्व है॥

पहनने में चड्डी का, शरीर में हड्डी का।
खेतों में टिड्डी का, बड़ा ही महत्त्व है॥

उड़ने में पतंग का, बालों में कटिंग का।
जीवन में सेटिंग का, बड़ा ही महत्त्व है॥

नदी में पानी का, जीवन में नानी का।
समाज में दानी का, बड़ा ही महत्त्व है॥

फलों में आम का, वस्तु में दाम का।
भारत में श्रीधाम का, बड़ा ही महत्त्व है॥

रामायण में राम का, महाभारत में श्याम का।
जिंदगी में नाम का, बड़ा ही महत्त्व है॥

जीवन में पढ़ाई का, त्यौहार में मिठाई का।
महाभारत में लड़ाई का, बड़ा ही महत्त्व है॥

होली में रंग का, जीवन में ढंग का।
शरीर में अंग का, बड़ा ही महत्त्व है॥

निकाह में काजी का, शतरंज में बाजी का।
तीर्थों में शिखर जी का, बड़ा ही महत्त्व है॥

विवाह में मेहमान का, राजपूतों में जबान का।
बड़ों में सम्मान का, बड़ा ही महत्त्व है॥

आसमान में बादल का, आँखों में काजल का।
पैरों में पायल का, बड़ा ही महत्त्व है॥

वर्तमान में धर्म का, जीवन में कर्म का।
औरतों में शर्म का, बड़ा ही महत्त्व है॥

साँप में जहर का, सागर में लहर का।
समय में पहर का, बड़ा ही महत्त्व है॥

बड़ा ही अंतर है

तीर और तलवार में, एक और चार में।
साइकिल और कार में, पैदल और सवार में॥
बड़ा ही अंतर है।

कंजूस और दानी में, दूध और पानी में।
दादी और नानी में, बुढ़ापा और जवानी में॥
बड़ा ही अंतर है।

हाथी और घोड़ा में, रस्सी और कोड़ा में।
फुन्सी और फोड़ा में, सिल और लोढ़ा में।
बड़ा ही अंतर है।

पुजारी और पंडा में, बंदूक और डंडा में।
लकड़ी और कंडा में, आलू और अंडा में॥
बड़ा ही अंतर है।

गली और गेट में, पीठ और पेट में।
मजदूर और सेठ में, वस्तु और रेट में।
बड़ा ही अंतर है।

गुरु और चेला में, बाजार और मेला में।
ट्रेक्टर और ठेला में, फूल और केला में॥
बड़ा ही अंतर है।

अष्टक

गुरु अष्टक

गुरु गीता, गुरु छंद हैं, गुरु जिनदर्शन मन्त्र।
गुरु पुराण, गुरु वेद हैं, गुरु परमारथ संत॥

गुरु बिन ज्ञान न उपजे, गुरु बिन क्रिया न होय।
गुरु बिन प्रभु दर्शन नहीं, गुरु बिन जीवन खोय॥

गुरु मारग, गुरु छाँव हैं, गुरु भव खेवनहार।
गुरु अनंत की छाँव हैं, गुरु गुण अपरम्पार॥

गुरु शिल्पी, गुरु पारखी, गुरु हैं करुणावंत।
बंद नेत्र गुरु खोलते, जय जय गुरु जयवंत॥

गुरु तीरथ, गुरु कीर्ति हैं, गुरु यश, गुरु भगवंत।
गुरु जिनेन्द्र की मूर्ति हैं, गुरु पूजा अरहंत॥

गुरु बिन ज्ञान न ऊपजे, गुरु बिन मिटे न भेद।
गुरु बिन संशय न मिटे, जय जय जय गुरुदेव॥

गुरु दर्शन, गुरु ज्ञान हैं, गुरु चारित की खान।
गुरु धरम की शान हैं, गुरु महिमा मन आन॥

गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु हैं, गुरु शंकर शिव शुद्ध।
गुरु स्वयं परब्रह्म हैं, गुरु पुरुषोत्तम बुद्ध॥

सर्वोदय अष्टक

सर्वोदय मम पन्थ हो, सर्वोदय पाथेय।
सर्वोदय को नमन हो, सर्वोदय हो ध्येय॥

सर्वोदय ही पोत है, सर्वोदय सुख स्रोत।
सर्वोदय को नमन हो, सर्वोदय वर ज्योत॥

सर्वोदय ही ग्रंथ है, सर्वोदय निर्ग्रंथ।
सर्वोदय को नमन हो, सर्वोदय अरहंत॥

सर्वोदय का गान हो, सर्वोदय का मान।
सर्वोदय को नमन हो, सर्वोदय वरदान॥

सर्वोदय गुणवन्त है, सर्वोदय ऋषिसन्त।
सर्वोदय को नमन हो, सर्वोदय जयवन्त॥

सर्वोदय में श्वास लूं, सर्वोदय में वास।
सर्वोदय को नमन हो, सर्वोदय का दास॥

सर्वोदय को भूल ना, सर्वोदय भवकूल।
सर्वोदय को नमन हो, सर्वोदय सुखमूल॥

सर्वोदय में रमण हो, सर्वोदय में अन्त।
सर्वोदय को नमन हो, सर्वोदय पर्यंत॥

गद्य-पाठ

जीवन

जीवन एक कला है	.....	इसे सुन्दर बनाइये।
जीवन एक चमत्कार है	.....	इसकी प्रशंसा कीजिए।
जीवन एक रहस्य है	.....	इसे प्रकट कीजिए।
जीवन एक विज्ञान है	.....	इसे अन्वेषित कीजिए।
जीवन एक अवसर है	.....	इसको निखारिये।
जीवन एक वास्तविकता है	.....	इसे पहचानिये।
जीवन एक खजाना है	.....	इसकी सुरक्षा कीजिए।
जीवन एक प्रसन्नता है	.....	इसे बाँटिये।
जीवन एक गीत है	.....	इसे गुनगुनाइये।
जीवन एक यात्रा है	.....	इसे रोमांचित बनाइये।
जीवन एक पहेली है	.....	इसे सुलझाइये।
जीवन एक चुनौती है	.....	इसे स्वीकार कीजिये।
जीवन एक संशय है	.....	इसे सुगम बनाइये।
जीवन एक लालसा है	.....	इसे विजित बनाइये।
जीवन एक कर्तव्य है	.....	इसे निबाहिये।
जीवन एक दुःख है	.....	इसे वश में कीजिए।
जीवन एक पाठ है	.....	इससे कुछ सीखिये।
जीवन एक शाप है	.....	इसे हटाइये।
जीवन एक वरदान है	.....	इसे धारण कीजिए।
जीवन एक उपहार है	.....	इसका आनन्द मनाइये।

रहस्य घड़ी का

मेरा नाम घड़ी है। आज के युग में मेरा बहुत महत्त्व है। हर घर में मैं रहती हूँ। स्टेशन जाना हो, कार्यलय जाना हो परीक्षा देना हो तो हर बार मेरी आवश्यकता होती है। मेरे अंदर रहस्य छुपा है। अंग्रेजी में मुझे WATCH कहते हैं। WATCH यह शब्द पाँच अक्षरों से बना है। एक-एक अक्षर एक-एक गुण दर्शाता है।

W यह अक्षर बताता है WATCH YOUR WORD यह समझाता है हर समय जो बोलते हो वह हित मित प्रिय हो।

A यह अक्षर बताता है WATCH YOUR ACTION यह समझाता है हर समय जो कार्य करते हो उसे ठीक से और सहजता से करो।

T यह अक्षर बताता है WATCH YOUR TIME यह समझाता है समय हाथ से निकलने के बाद फिर से वापस नहीं आता। आप समय को पकड़ नहीं पाते। इसीलिये हर क्षण महत्त्व का होता है।

C यह अक्षर बताता है WATCH YOUR CHARECTER यह समझाता है हर समय अपना चारित्र अच्छा रखो। नाम कमाने में देरी लगती है। खोने में जरा भी समय नहीं लगता।

H यह अक्षर बताता है WATCH YOUR HEALTH यह समझाता है स्वास्थ्य अच्छा रखो।

शरीर माद्यं खलु धर्म साधनम्।
शरीर अच्छा है तो ही धर्म होता है।

छुपे हैं न मेरे अन्दर पाँच रहस्य ?

मेरा भारत महान्

एक अमेरिकन ने मुझसे कहा कि यदि तुम्हारा भारत महान् है तो बताइये संसार के इतने आविष्कारों में तुम्हारे देश का क्या योगदान है, तो मैंने कहा रे- अमेरिकन सुन-संसार की पहली फायर प्रूफ लेडी इंडिया में ही पैदा हुई थी नाम था उसका होलिका इसलिये उस जमाने में फायर बिग्रेड चलती ही नहीं थी। होलिका, इसलिये आग में जलती ही नहीं थी ये तो हिरण्यकश्यप ने प्रहलाद को मारने का एक षडयंत्र किया था इसलिये भगवान ने उसकी वॉडी में शोर्ट सर्किट कर दिया था।

मैंने कहा रे-अमेरिकन दूसरा आविष्कार गिनाता हूँ संसार की पहली वॉटर-प्रूफ बिल्डिंग भी इंडिया में ही बनी थी जो समुद्र के पैदें में विष्णु भगवान का सरकारी रेसीडेन्स थी बिल्डिंग का नाम था शेषनाग, शेषनाग जमीन में चले गये, विशेष नाम पृथ्वी पर ही रह गये और हम उन्हीं के हाथों ठगे गये।

संसार के पहले पत्रकार नारदजी हुये जो किसी भी सत्ता या व्यवस्था से नहीं डरते थे। तीनों लोकों की सनसनी खेज रिपोर्टिंग करते थे। सृष्टि के पहले कॉमेन्टेटर संजय हुये, जिन्होंने एक नया इतिहास बनाया, अंधे धृतराष्ट्र को महाभारत का आँखों देखा हाल जिन्होंने रेडियो पर सुनाया।

मैंने कहा रे-अमेरिकन, सुन जहाँ तक दादागिरी का सवाल है तो इसका आविष्कार भी हम भारत वालों ने ही किया है क्योंकि शताब्दियों पूर्व भारत के ही शनिचर भगवान ने इस पृथ्वी पर इतना आतंक मचाया था कि हफ्ता वसूली का रिवाज उनके चेलों ने ही चलाया था आज भी हर शनिवार को उनके भक्त आते हैं उनका फोटो दिखाते हैं और हफ्ता ले जाते हैं।

मेरी बात सुन अमेरिकन हड़बढ़ाया गुस्से में बढ़बढ़ाया बोले फालतू की बातें मत बनाओ यदि तुम्हारे भारत ने कोई ठीक-ठाक ढंग का आविष्कार किया हो तो बताओ वर्ना हमारा दिमाग मत खाओ, तो मैंने कहा रे भाई कैसा आविष्कार, तो बोला ऐसा आविष्कार जैसे हमने अमेरिका में आदमी की किडनी बदल दी, हार्ट की वायपास सर्जरी कर दी, दिमाग की न्योरोसर्जरी कर दी, ऐसा कोई मेडिकल साइंस या सर्जरी में यदि भारत ने कोई आविष्कार किया हो तो बताओ वर्ना हमारा दिमाग मत खाओ तो मैंने कहा रे-अमेरिकन सुन संसार को तो सर्जरी का कॉन्सेप्ट ही इंडिया ने दिया था। वर्ना तू ही बता गणेशजी का ऑपरेशन क्या तेरे बाप ने किया था, मेरी बात सुन अमेरिकन हड़बड़ाया, गुस्से में बड़बड़ाया देखते ही देखते वहाँ से चलता फिरता नजर आया तब से अमेरिका को ही नहीं सारी दुनिया को ध्यान है कि दुनिया में देश चाहे जितने भी हों पर उन सब में मेरा भारत महान् है।

महत्त्वपूर्ण तीन

इन तीनों के लिए मर मिटो	.....	धर्म, देश, मित्र
इन तीनों का सम्मान करो	.....	माता, पिता, गुरु
इन तीनों को हमेशा वश में रखो	.....	मन, क्रोध, लोभ
इन तीनों पर सदा दया करो	.....	बालक, भूखे, पागल
इन तीनों के लिए लड़ो	.....	आजादी, ईमान, इंसाफ
इन तीनों को कभी नहीं भूलो	.....	कर्ज, फर्ज, मर्ज
तीन चीजें किसी का इंतजार नहीं करती	.....	समय, मौत, ग्राहक

When wealth is lost nothing lost
When health is lost something lost
When character is all is lost
जब धन गया कुछ भी नहीं गया।
जब स्वास्थ्य गया कुछ गया।
जब चारित्र गया सब कुछ गया।

मोक्ष यात्रा

अटेंशन प्लीज यात्रीगण ध्यान दें, संसारपुर से मोक्षपुर जाने वाली विद्या एक्सप्रेस अपने निर्धारित समय से चल रही है। जिस किसी भी यात्री को संसारपुर से मोक्षपुर जाना हो, वो अपनी संयम रूपी टिकिट कटाकर अपनी सीट आरक्षित करा लें। ये गाड़ी उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिञ्चन्य, ब्रह्मचर्य दस धर्मों के स्टेशन से होते हुये मोक्षपुर जा रही है।

एक विशेष हिदायत मानी छली-कपटी स्वादिष्ट भोजन करने वाले, मखमल की गद्दी में बैठकर स्वाध्याय करने वाले, अति क्रोध, झगड़ा करने वाले, रात्रिभोजन, बिना छना पानी पीने वाले तथा कपड़े पहनकर मोक्ष जाने वाले टिकिट की लाईन पर खड़े न हों।

धन्यवाद।

भूल की गाथा

जो भूल न करे, उसे भगवान कहते हैं।
जो भूलों से बचता रहे, उसे इंसान कहते हैं॥
जो भूलों को देखकर हंसता है, उसे हैवान कहते हैं।
जो भूलकर उसे भूल जाये, उसे शैतान कहते हैं॥
जो भूलकर उसे फिर न करे, उसे सावधान कहते हैं।
जो भूल से कुछ सीख जाये उसे बुद्धिमान् कहते हैं॥

जीवन का गणित

जीवन एक गणित है,
दोस्तों का जोड़ करो,
दुश्मनी का घटाव करो,
खुशियों का गुणा करो।
दुखों का भाग दो,
लेकिन निराश मत होना,
जिन्दगी का वर्गमूल,
निकल आयेगा॥

देखिये

भाषा को नहीं	.....	भाव को देखिये
संत को नहीं	.....	साधना को देखिये
भोजन को नहीं	.....	स्नेह को देखिये
रूप को नहीं	.....	स्वरूप को देखिये
अनुप्रास को नहीं	.....	कविता को देखिये
लेखक को नहीं	.....	कृति को देखिये
शक्ति को नहीं	.....	सहिष्णुता को देखिये
फूल को नहीं	.....	सुगंध को देखिये
मोती को नहीं	.....	पानी को देखिये
मानव को नहीं	.....	मानवता को देखिये
विचार को नहीं	.....	आचार को देखिये
म्यान को नहीं	.....	तलवार को देखिये
विनय को नहीं	.....	विवेक को देखिये
पुस्तक को नहीं	.....	शिक्षा को देखिये
जीवन को नहीं	.....	संयम को देखिये

बेजोड़

एक विवाह समारोह में
एक ने देखा अचंभा
दुल्हन बिल्कुल ठिगनी
और दूल्हा
अमिताभबच्चन से भी लंबा
किसी ने कहा दूल्हे से
एक बात बताइये
इतनी ठिगनी बीबी से
आप कैसे काम चलायेंगे
वे बोले
आप कवि हैं न
कवियों की अकल
बिल्कुल कच्ची होती है
भैय्या मुसीबत जितनी छोटी हो
उतनी अच्छी होती है

तीन क्षणिकाएं

1. लाश

यदि मानव शरीर में, आत्मा का वास है श्रद्धा व विश्वास है प्रभु के प्रति आस है तो जीवन का विकास है अन्यथा फिर चलती-फिरती लाश है।

2. सुप्रभात

यदि मानव निज चेतना से कर देता मिथ्यात्व का घात सम्यक्त्व को कर लेता आत्मसात तो हो जाता है सुप्रभात।

3. अच्छी बात

जो न कर सके मानव। प्राणीमात्र का घात जिसे स्वयं ने कर लिया हो आत्मसात वही है सच्ची मुलाकात अच्छी बात।

श्रेष्ठ

पढ़ने से सुनना श्रेष्ठ है, कहने से करना श्रेष्ठ है। ज्ञान से अनुभव श्रेष्ठ है, शब्द से अनुभूति श्रेष्ठ है। मानने से जानना श्रेष्ठ है, भावना से कर्तव्य श्रेष्ठ है। दान से दक्षिणा से श्रेष्ठ है, दमन से संयम श्रेष्ठ है। त्याग से अनासक्ति श्रेष्ठ है, स्मरण से ध्यान श्रेष्ठ है। सत्य से अहिंसा श्रेष्ठ है, और अपनी आत्मा के समान सबकी आत्मा समझना सर्वश्रेष्ठ है॥

जुड़वा बच्चे

एक महिला ने
एक साथ
दो बच्चों को जन्म दिया
पहला गोरा
दूसरा काला
लेडी डाक्टर बोली
बीस साल से सर्विस में हूँ
आज तक नहीं देखा
ऐसा गड़बड़ घोटाला
और एक गोरा एक काला
यह नया केस है
अस्पताल के इतिहास में
शायद आपका मायका
काश्मीर में है
और ससुराल मद्रास में
रंग भेद नीति का विरोधी
आपका पति प्रबल प्रतापी है
महिला बोली
बात यह नहीं है
बात यह है
कि मैं एक दफ्तर में टाइपिस्ट हूँ।
पहला बच्चा ओरिजनल है
और दूसरा उसका कार्बन कॉपी है।

घायल हिन्दुस्तान

गांधीजी
जब स्वर्ग सिधारे
दुखी हुये
सब जन बेचारे
गांधीजी
बहुत उदास थे
जबकि
स्वर्गों के वैभव
उनके पास थे
अचानक खबर मिली
संजयगांधी आये हैं
स्वर्गवासियों को खुशी हुई
दो-दो गांधी पाये हैं
संजय ने प्रणाम करके
जैसे ही सिर उठाया
वह बुरी तरह चकराया
बापू को उदास पाया
दुखी स्वर में
उसने पूछा!
बापू आप उदास क्यों हैं ?
बापू ने ऐनक ऊपर उठाई
बोले सुन मेरे भाई
मैं हिन्दुस्तान की चिंता में
दुबला होता जा रहा हूँ।
स्वर्ग के सुखों को भी
कहाँ भोग पा रहा हूँ।
खबर इतने में आई
इंदिरा जी भी
अभी-अभी आई
वे गांधी से मिलीं
की संजय उनसे मिल गये
आते ही हिल गये
संजय ने कहा
मम्मी बापू भारत की
चिन्ता में, उदास हैं
दोनों बातों में थे लीन
समाचार मिला नवीन
राजीवगांधी आये हैं
विकास की आंधी लाये हैं
संजय ने लपककर कहा
भैय्या बापू हिन्दुस्तान के लिए
बहुत उदास हैं
राजीव ने कहा
चलो अभी बात करते हैं
सबसे पहले उनसे
मुलाकात करते हैं

राजीव के बोलने से पहले बापू बोल पड़े
जैसे राजीव की प्रतीक्षा
में पहले से ही हो खड़े
राजीव मुझे
हिन्दुस्तान की बहुत चिन्ता है
क्योंकि
हमारी पीढ़ी का
एक भी नेता नहीं जिन्दा है
राजीव ने कहा
बापू आप हिन्दुस्तान की चिन्ता छोड़िये
और सीधा मुझसे नाता जोड़िये
भारत बहुत विकास कर रहा है
आदमी बेमौत मर रहा है
और देश का
हर छोटा बड़ा नेता
अपना घर भर रहा है
गोडसे ने आप को
तीन गोलियों से
ठिकाने लगाया था
संजय!
हवाई जहाज से आया था
इन्दिरा जी के शरीर में
छत्तीस गोलियाँ उतारी थीं
रक्षक-भक्षक बना
मानवता हारी थी
उनके बाद हमारी बारी थी

आपने तीन से
संजय ने प्लेन से
मम्मी ने गोलियों की चेन से
स्वर्ग का द्वार खटखटाया
और विकसित देश का
प्रधानमंत्री होने के नाते
मैं मानव बम पर
बैठकर आया
बापू कौन कहता है
विकास नहीं हुआ
आपके समय
मात्र तीन सौ बूचड़खाने थे
छत्तीस हजार अड़तीस
का आकड़ा हमने ही तो
छुआ
बापू यह सुनकर
रो पड़े
मुश्किल से हो पाये खड़े
भर्राई आवाज में
किसी तरह बोले
बेटा अहिंसा ही
मेरे देश का प्राण है
और आज
भ्रष्टाचार हिंसा में डूबा
घायल हिन्दुस्तान है।

शाश्वत सत्य

क्षमा	–	भूल को भूल जाना ही क्षमा है।
मार्दव	–	सम्मान प्रिय और अपमान अप्रिय लगने का कारण मान है।
आर्जव	–	टेढ़ा चलने वाला सीधे मार्ग पर नहीं चल सकता।
शौच	–	लोभ अतृप्ति का कारण है लोभी, लोभ छोड़े बिना, परिग्रह संग्रह द्वारा तृप्ति चाहता है।
सत्य	–	असत्य चिल्लाता है क्योंकि उसकी मृत्यु समीप होती है।
संयम	–	जीवन वृक्ष संयम दुख बिना व्यर्थ है।
तप	–	तपन बिना घी नहीं निकलता, तप बिना जीव नहीं निखरता।
त्याग	–	जीवन का अनावश्यक भार उतार देना त्याग है।
आकिञ्चन्य	–	अपना कुछ नहीं, इसलिये कुछ अपनाना दुःखद है।
ब्रह्मचर्य	–	लालसा पर विजय पाना ही ब्रह्मचर्य है।

गृहस्थ गीता

आतिथ्य ही घर का वैभव है, प्रेम ही घर की प्रतिष्ठा है।
व्यवस्था ही घर की शोभा है, समाधान ही घर का सुख है॥

सदाचार ही घर की सुवास है, ऐसे घर में सदा वीर का वास है।
ऋण हो ऐसा खर्च मत करो, पाप हो ऐसी कमाई मत करो॥

क्लेश हो ऐसा मत बोलो, चिंता हो ऐसा जीवन मत जीओ।
रोग हो ऐसा मत खाओ, किसी को दुख पहुँचे ऐसा कार्य मत करो॥

करते रहिए पाते रहिए

- ❑ गुरु भक्ति कीजिए धर्म तत्त्व स्वतः ही मिल जायेगा।
- ❑ सच्चे हृदय से प्रार्थना कीजिए प्रसन्नता मिल जायेगी।
- ❑ माता-पिता की निर्मल सेवा कीजिए लक्ष्मी मिल जायेगी।
- ❑ दीन की सेवा करने से आनंद अनुभूति मिलेगी।
- ❑ अपना कर्तव्य पूरा करने से यश मिलता है।
- ❑ अपनी आलोचना करते रहिए आराधना हो जायेगी।
- ❑ दान और परोपकार कीजिए अमर हो जाओगे।

बुढ़ापे में

आँख पे तनेगा जाला,
नाक से बहेगा नाला,
लाठी से पड़ेगा पाला,
जरा जिंदगानी में,
बिस्तर पे पड़े-पड़े
थूकते रहोगे तुम,
धोती में मलमूत्र करोगे तुम .....

कोई लिखता है

कोई लिखता है हँसने के लिये,
कोई लिखता है किसी को रुलाने के लिये,
कोई लिखकर जीता है जिंदगी अपनी,
कोई लिखता है गम भुलाने के लिये।
किसी के लिखने से बात बुरी हो जाती है,
किसी के लिखने से तबियत हरी हो जाती है।
बात रह जाती है अधूरी किसी के लिखने से,
किसी के लिखने से दिल पर छुरी चल जाती है॥

शीशी माचिस

बहू जब मायके से ससुराल आयी, सास ने पूछा क्या लाई? बहु बोली पति के लिये घड़ी, देवर के लिये घड़ी, ननद के लिये लहंगा, देवरानी के लिये कंगन, जेठानी के लिये हार, जेठ के लिये कार सुनकर सास चकराई मेरे लिये कुछ नहीं लाई। मुस्कुराई बहु सरमाई, कमरे के अंदर गई वहाँ से स्टोव, शीशी, माचिस ले आई सास मन ही मन मुस्कुराई लेकिन देखकर चकराई दो शीशी और दो माचिस क्यों लाई, बहू बोली तुम्हारी बेटी हमारी ससुराल जायेगी तो एक शीशी एक माचिस साथ में ले जायेगी।

ईश्वर एक परीक्षा है...

यह दुनिया जिसमें आप रहते हैं, परीक्षा भवन है।
यह जीवन उत्तरपुस्तिका है।
समय केवल तीन घण्टे है।
प्रश्नपत्र बँट चुका है जन्म के साथ।
बालकपन समाप्त होते ही पहला घण्टा बज चुका है।
दूसरा घंटा जवानी समाप्त होते ही बज चुका है।
अभी तक आपने अपनी उत्तरपुस्तिका में कुछ नहीं लिखा।
मृत्यु का तीसरा घण्टा बजने वाला है।
क्या फेल होने का डर नहीं।

कल्याण हो जायेगा

माल मत छोड़ो मालकियत छोड़ दो, कल्याण हो जायेगा।
जिसने जन्म लिया उसकी मौत निश्चित है।
इसलिये मौत नहीं मौत का भय छोड़ दो, कल्याण हो जायेगा।
भोजन अनिवार्य है जीवन जीने के लिये।
इसलिये भोजन नहीं उसकी गृद्धता छोड़ दो, कल्याण हो जायेगा।

नहीं मिलता

लालची को चैन नहीं मिलता, कंजूस को सम्मान नहीं मिलता॥
पेटू को स्वास्थ्य नहीं मिलता, झूठे को विश्वास नहीं मिलता॥
कमजोर को इंसाफ नहीं मिलता, शक्की को प्रेम नहीं मिलता॥
जलनखोर को दोस्त नहीं मिलता, बेअदब को इल्म नहीं मिलता॥
डरपोक को नाम नहीं मिलता, आलसी को इनाम नहीं मिलता॥

दहेज में क्या

मैंने कहा क्यों जी आप अपने लड़के को शादी की सूली पर क्यों टांग रहे हैं? दहेज में क्या-क्या मांग रहे हैं? वे बोले बात चल रही है कल ही लड़की वाला आया था पाँच लाख का ऑफर लाया था। परन्तु आज कल पाँच लाख से क्या होता है, अरे लड़का जीवन भर लड़की का भार ढोता है। मैंने कहा-हाँ-हाँ क्यों नहीं वैसे लड़का आजकल कर क्या रहा है, वे गर्व से बोले, हमने उसे पढ़ाया है लिखाया है अपने पैरों पर खड़ा हो सके इस काबिल बनाया है। आजकल अच्छा-खासा कमा रहा है, एक दहेज विरोधी संस्था चला रहा है।

बच्चे

खुशबुओं के गुलाब हैं बच्चे, कितनी आँखों के ख्वाब हैं बच्चे।
चाँद हैं आफताब हैं बच्चे, रोशनी की किताब हैं बच्चे।
क्या फरिश्ते किसी ने देखे हैं ? कितना अच्छा जवाब हैं बच्चे।
जिनको संस्कार शुभ मिले हैं वे हर जगह कामयाब हैं बच्चे।
अपनी मस्ती की राजधानी में अपने मन के नबाव हैं बच्चे।
जब कभी ये खिलखिलाते हैं ऐसा लगता है मधुवन के सुवास हैं बच्चे।

पीपल का भूत

रात का सन्नाटा घण्टाघर का घण्टा बारह बजा रहा था।
विशाल पीपल के पेड़ के नीचे बैठा अपनी नई कविता गुनगुना रहा
तभी अचानक पीपल के पेड़ से एक भूत प्रकट हुआ।
रूआंसा नजर आ रहा था। बेचारा बोला ''माँग ले जो माँगना है''
परन्तु ध्यान रहे फिर कभी इधर मत आना
और यदि आये भी तो मैं तेरे हाथ जोड़ता हूँ
अपनी कविताएँ मत गुनगुनाना।

जहर मिठाई

एक इंसान जिन्दगी से होकर परेशान, जहर की पुड़िया लाया, रात को खाया, सो गया, वह बेचारा शर्मिंदा था, क्योंकि जहर खाकर भी जिंदा था। परिवार के लोगों ने यह सुना मन में गुना, खुशी से झूमने लगे, कुछ लोग बाजार गये मिठाई खरीद लाये प्यार से उसे मिठाई खिलाई, मिठाई खाते ही उसे मौत की नींद आयी, गजब हो गया, वह बेचारा मौत की गोद में सो गया, परिवार के लोग शर्मिंदा हैं उन्हें आश्चर्य वे जिंदा हैं, यह संसार सचमुच ही गजब ढाता है आदमी जहर खाकर जिंदा रहता है पर मिठाई खाके मर जाता है।

परीक्षा

परीक्षा एक क्रिकेट का खेल है।
जिसमें विद्यार्थी एक बेट्समेन है।
कलम एक बैट है।
चपरासी एक कामेंटर है।
परीक्षक एक एम्पायर है।
मार्कशीट एक स्कोर है।
फेल होना एक हार है।
कठिन प्रश्न एक गेंदबाज है।
अच्छे उत्तर बल्लेबाजी है।
तांक-झांक में पकड़े जाना रनआऊट है।
कोरा पेपर छोड़ना क्लीन बोल्ड है।
पेपर में फेंकना अतिरिक्त है।
बहुत अच्छे उत्तर देना चौके छक्के हैं।
नकल करके पास होना मैच फिक्सिंग है।

प्रभु संदेश

जब तुम भूख-प्यास से तड़फोगे,
हम जलपान बनके आयेंगे।
तुम जब होगे भटके पथिक,
हम राह बनकर आयेंगे॥
तुम होगे गहन रोग से पीड़ित,
हम उपचार बनकर आवेंगे।
तुम होगे तपती धूप में बेहाल,
हम छांव बनकर आयेंगे॥
किन्तु जब चरित्र व धर्म से गिर जाओगे।
फिर हमें न पाओगे, तुम लाख बुलाओगे॥
फिर हमें न पाओगे................ ॥

बूझो तो जाने

इसमें बारह साबुनों के नाम छुपे हैं इनका पता लगाइये-

विजय और जय दो अच्छे मित्र थे। एक बार विजय अपने कुत्ते मोती को लेकर गंगा के किनारे गया। विजय नीम के पेड़ पर से गिर पड़ा। जय ने तुरंत डॉक्टर ग्रीन को बुलाया। डॉक्टर ग्रीन ने तुरंत डेटाल लगाया और कहा- अब इसकी तबीयत ओके है। एक बार दोनों मित्र ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया जिससे दोनों को 501 तथा 555 का चेक मिला। साथ में दो विमान के टिकिट भी मिले। एक दिन उनके जीवन में ऐसी घड़ी भी आई जिससे उनके विमान का एरियल खराब हो गया तथा उनकी जिंदगी समाप्त हो गई।

उत्तर : 1. जय 2. मोती 3. गंगा 4. नीम 5. डॉक्टर ग्रीन 6. डेटाल 7. ओके 8. 501 9. 555 10. घड़ी 11. एरियल 12. चेक।

गुमशुदा की तलाश

दूरदर्शन के
गुमशुदा की तलाश में
एक कवि का फोटो
हर हफ्ते देखकर
मैं चकराया
क्योंकि उस समय वह महाशय
मेरे ही पास बैठे थे
मैंने उससे कहा राम लुभाया
जब तुम गुम ही नहीं हुये
तो यह विज्ञापन क्यों निकलवाया
वह बोला
इस बहाने से ही सही
मेरा चेहरा टी. वी. पर तो आया।

सेम्पल

एक साथ तीन बच्चे पैदा हुये
पहला बहरा
दूसरा गूंगा और
तीसरा अंधा
नेताजी घबरा गये
ये गांधी जी के तीन बन्दर
मेरे घर में कैसे आ गये
उन्होंने कहा 'बजरंग बली'
इन भिखारियों को जन्म देने के लिए
तुझे और कोई जगह नहीं मिली
आवाज आयी
आजादी के बाद मिला है
बहरा कानून
गूंगा संविधान और
अंधी योजनायें
बेटे तू बेकार घबड़ाया है
मैंने कोई करिश्मा
नहीं दिखाया है
मैंने तो बच्चों के रूप में
तेरे पास भारत वर्ष का
सिर्फ एक सेम्पल
भिजवाया है।

मजेदार पत्र

आदरणीय

कलाकंद मामा व रस माधुरी मामी
हलवा पुरी, खस्ता कालोनी
चमचमगढ़ जिला– रसगुल्ला

नमस्ते,

इमरती दीदी की शादी पेड़ानगर में समोसा जी के सुपुत्र खीरचंद्र के साथ तय हो गयी है। आप सभी विवाह में सम्मलित होने की कृपा करें। लड्डू भैय्या और आलू बंड़ा चाचा को साथ लायें। बालूशाही दीदी और पोहा जीजाजी सकुशल होंगे। दहीबड़ा मौसा जी के साथ चमचम मौसी आ चुकी हैं। भजिया फूफाजी और जलेबी बुआ भी कल पहुँच रही हैं। आप लोग गुलाबजामुन पैसेंजर से आइसक्रीम खाते हुए कपूरचंद्र स्टेशन पर चायकाल के समय पहुँचने का प्रयत्न कीजिए।

आपकी स्वादिष्ट भांजी
बर्फी

टेलीफोन महान्

मेरा टेलीफोन है कितना महान्, एक नमूना देखिए श्रीमान्।
मैंने घुमाया रेल्वे इन्क्वारी और लग गया कब्रिस्तान॥
चूंकि मुझे निबंध प्रतियोगिता में जाना था और रेलगाड़ी में अपना रिजर्वेशन करवाना था। इसलिए मैंने रेल्वे इन्क्वारी का नम्बर घुमाया पर क्या मालूम वहाँ के कब्रिस्तान के बाबू ने उठाया बोले फरमाइये! मैंने कहा बस एक सीट चाहिए। वह बोला बैठे ही आपके लिए हैं, हमारी सेवा किस दिन काम आयेगी। बेधड़क चले आइये एक क्या पचास सीटें खाली हैं पूरे खानदान को ले आइये ।

महत्त्व

एक पत्नी अपने पति को पत्र लिखती है, लेकिन उसमें वह कहीं भी पूर्ण विराम नहीं लगाती, अतः पत्र लिखने के बाद जब उसे गलती का अहसास होता है तो वह अंदाज से जल्दी-जल्दी कुछ पूर्ण विराम लगा देती है। इससे होता है ये कि सारे पत्र का अर्थ ही बदल जाता है, लेकिन अगर बिन्दु के हिसाब से पढ़ा जाये तो पत्र बिल्कुल सही है। प्रस्तुत है वह पत्र-

प्रिय पतिदेव,

प्रणाम, आपने कितने दिनों से चिट्ठी नहीं लिखी, मेरी प्यारी सहेली कल्पना को। नौकरी से निकाल दिया है हमारी गाय ने। बछड़ा दिया है दादा जी ने। शराब पीना शुरु कर दी है मैंने। बहुत पत्र डाले मगर नहीं आये मुर्गी के बच्चे। भेड़िया खा गया है राशन की चीनी। छुट्टी पर आते वक्त ले आना एक खूबसूरत औरत। मेरी नई सहेली बन गई है। तुम्हारी माँ याद करती है एक पड़ोसन। मुझे तंग करती है हमारी जमीन। पर गेहूँ ऊग आये हैं ताऊ जी के सिर में। माइग्रेन हो गई है मेरे पैर में। चोट लग गई है तुम्हारी चिट्ठी को। तरसती रहती हूँ हर वक्त।

पारिश्रमिक

उन्होंने वादा किया है कि वे कवि सम्मेलनों से जितना भी पारिश्रमिक पाएंगे उसका दस परसेंट स्थानीय साहित्यिक संस्था की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए उसके कोष में जमा करायेंगे और फिर .....।

एक दिन कवि सम्मेलन से आने के बाद, संस्था के कोषाध्यक्ष ने कहा लाइये जो कुछ मिला है उसका दस परसेंट संस्था में जमा कराइये तो वे चिल्लाने लगे पैर से जूता निकालकर कोषाध्यक्ष के सिर पर बजाने लगे मैंने कहा-अरे-अरे ये क्या कर रहे हैं। आप तो वे बोले तू बीच में मत आओ मैं अपना वादा निभा रहा हूँ, कवि सम्मेलन में मिले पारिश्रमिक का दस परसेंट संस्था के कोष में जमा करा रहा हूँ।

खटका

सर्दी में हतास जुकाम का खटका, मल्लाह को रहता तूफान का खटका।
विद्यार्थी को रहता इम्तिहान का खटका, कंजूस को रहता मेहनत का खटका॥
निर्बल को रहता बलवान का खटका, दानी को रहता आन का खटका।
रोगी को रहता श्मशान का खटका, चोर को रहता पुलिस का खटका॥
कंडक्टर को रहता चालान का खटका, सज्जन को रहता अपमान का खटका।
भक्त को रहता भगवान का खटका, दुकानदार को रहता ग्राहक का खटका॥

चुटकुले

1. पहला व्यक्ति – अजी आधी रात गये इतने अंधेरे में कहाँ जा रहे हो ?
दूसरा व्यक्ति – आत्महत्या करने।
पहला व्यक्ति – पर हाथ में टार्च क्यों है ?
दूसरा व्यक्ति – इसलिये कि रास्ते में ठोकर न लग जाए।

2. मुल्जिम – जज साहब आप मेरे कान नहीं कटवाएँ वरना मैं अंधा हो जाऊँगा।
जज – क्यों ?
मुल्जिम – क्योंकि मेरे कान काट देने पर मैं चश्मा कहाँ लगाऊँगा।

3. एक बार एक व्यक्ति बच्चे के साथ बाल कटवाने गया। बाल कटवाकर वह नाई से बोला–तुम बच्चे के बाल काटो, मैं अभी आता हूँ।
बाल कटवाते–कटवाते बच्चा अचानक रोने लगा। तो नाई ने कहा–रो मत तेरे पापा आते ही होंगे। बच्चे ने जवाब दिया–वे मेरे पापा नहीं हैं, मैं तो गली में खेल रहा था। उन्होंने कहा कि मुफ्त में बाल कटवाने हो तो चलो।

3. यात्री (बस कंडक्टर से) – भाई साहब यह खटारा कब चलेगी ?
कंडक्टर (यात्री से) – अच्छी तरह कूड़ा कचरा भर जाने दो।

4. मेहमान (घर के मुखिया से)– ये क्या बात है कि जब से मैं भोजन करने बैठा हूँ तब से आपका कुत्ता मुझे घूर–घूर कर देख रहा है।
मुखिया – वह तो अपनी प्लेट अच्छी तरह से पहचानता है।

5. निशांत – मैं अपनी कक्षा में प्रथम आ सकता हूँ। पर एक शर्त है।
प्रशांत – क्या शर्त है ?
निशांत – परीक्षा में मेरे सिवा और कोई छात्र सम्मिलित नहीं होना चाहिये।

6. पागल – डाक्टर साहब आप हमें बहुत अच्छे लगते हैं।

डाक्टर (आश्चर्य से) – क्यों ?
पागल – क्योंकि आप बिल्कुल हमारे जैसे लगते हैं।

7. पिता – बेटा आज स्कूल में शैतानी तो नहीं की ?
बेटा – नहीं पिताजी! आज मैं शांति से मुर्गा बना रहा।

8. माँ (अपने बेटे रमेश से) – रमेश तुम मन लगाकर पढ़ा करो।
रमेश – मगर माँ आप तो चश्मा लगाकर पढ़ती हो।

9. पिता – बेटा गम न करो। भाग्य में फेल होना लिखा था। सो हो गये।
बेटा – तब तो बहुत अच्छा हुआ। यदि मैं मेहनत करता तो सारी मेहनत बेकार हो जाती।

10. संजय – अगर तुम्हें कोई डाँटे तो क्या करोगे ?
अजय – बस कान बंद कर लूँगा।

11. माँ (बेटे से)–बेटा ससुराल वाले ट्रांजिस्टर दें तो टेलीविजन माँगना। स्कूटर दें तो कार माँगना।
बेटा – माँ बहू देंगे तो सासू जी को उठा लाऊँगा।

12. अध्यापक (छात्र से) – अगर आक्सीजन नहीं होती तो ?
छात्र – किताब का एक पाठ कम हो जाता।

13. ग्राहक – कैसा ताला दिया था तुमने ? ताले में चाबी लगाई तो चाबी टूट गई।
दुकानदार – गारंटी ताले की थी चाबी की नहीं।

14. राम (श्याम से) – पहले मच्छर रात में काटते थे लेकिन अब दिन मैं भी काटते हैं।
श्याम – हाँ भाई मँहगाई बढ़ गई है इसलिए उनको दिन–रात काम करना पड़ता है।

15. दो मूर्ख एक बार नाव में सफर कर रहे थे। अचानक नाव में छेद हो गया।
एक मूर्ख बोला – यार डरने की कोई बात नहीं एक छेद और कर देते हैं। एक से

आयेगा और एक से निकल जायेगा।

16. लंबी बहस के बाद अपराधी ने अपना अपराध कबूल कर लिया। तब जज ने पूछा शुरू में तुमने अपना अपराध स्वीकार क्यों नहीं किया ?
अपराधी – माई बाप ! शुरू में ऐसा लग रहा था कि मैं बेगुनाह हूँ पर गवाहों के बयान सुनकर मेरा विचार बदल गया।

17. छात्र (गणित के शिक्षक से)– सर आप गणित में बात क्यों नहीं करते ? हमारे अंग्रेजी के शिक्षक अंग्रेजी में बात करते हैं।
अध्यापक – ज्यादा तीन पाँच मत करो नहीं तो दो चार लगा दूँगा तो चेहरा चौकोर हो जायेगा।

18. कामचोर पति (पत्नि से) – अभी–अभी मैंने सपने में देखा कि मुझे नौकरी मिल गई।
पत्नि–अच्छा तभी आप थके–थके नजर आ रहे हैं।

19. एक मित्र (दूसरे मित्र से) – मैं अमेरिका जाने की सोच रहा हूँ, कितना पैसा लगेगा।
दूसरा मित्र – एक भी नहीं क्योंकि सोचने का कोई पैसा नहीं लगता।

20. एक नगर में दो गप्पी पहुँचे–
पहला गप्पी – मेरे पिताजी कुएँ में डुबकी मारते थे और नदी से निकलते थे।
दूसरा गप्पी – मेरे पिताजी नदी में डुबकी मारते थे और नल की टोटी में से निकलते थे।

21. मालिक ने नौकर को डांट लगाई कि कोई काम करने से पहले कम से कम मुझसे पूछ तो लिया करो।
थोड़ी देर बाद नौकर आया और बोला – मालिक मैंने खिड़की में से देखा कि रसोई में बिल्ली दूध पी रही है अगर आप कहें तो उसे भगा दूँ।

22. पिता (बेटे से) – देखो बेटे, जुआ नहीं खेलते। यह ऐसी चीज है कि यदि इसमें आज

जीतोगे तो कल हारोगे, परसों जीतोगे तो अगले दिन हार जाओगे।
बेटा (पिता से) – बस पिता जी, मैं समझ गया आगे से मैं एक दिन छोड़कर खेला करूँगा।

23. एक सैनिक – खबरदार जो तुम आगे बढ़े।
दूसरा सैनिक – आगे नहीं, पीछे तो जा सकता हूँ।

24. मरीज (डाक्टर से) – आपने कल जो दवा दी थी,उससे खाँसी तो बंद हो गयी लेकिन सांस रुक–रुक कर आती है।
डाक्टर (मरीज से) – दवाई लेते रहो वह भी बंद हो जायेगी।

25. इतिहास के अध्यापक (गणित के अध्यापक से)–यदि अमेरिका भारत पर आक्रमण करे तो आप क्या करेंगे ?
गणित के अध्यापक – मैं अमेरिका के सैनिकों को कोष्ठक में बंद करके शून्य से गुणा कर दूँगा।

26. ग्राहक – मैंने जो हाथी दाँत का पेन आपकी दुकान से खरीदा था, वह तो नकली है।
दुकानदार – हद हो गई भाई साहब, मुझे तो पता ही नहीं था कि अब हाथी भी नकली दाँत लगाने लगे हैं।

27. पिता (गुस्सा होते हुए) – तुम्हारी रिपोर्ट पर लिखे इस जीरो का क्या मतलब है ?
राजेश – कुछ नहीं पिता जी, टीचर जी शायद इसके पहले गिनती लिखना भूल गये हैं।

28. चंदा माँगने वाली महिलायें – क्या वृद्ध गृह के लिए आप कुछ देंगी ?
बूढ़ी महिला – मुझे ही ले चलिए।

29. सुधीर–यार कोतवाली किसे कहते हैं ?
अविनाश – कोतवाल की पत्नी को कोतवाली कहते हैं।

30. एक मूर्ख – क्या कहूँ यार, मेरी तो अक्ल ही चली गई।
दूसरा मूर्ख – तू चिंता मत कर मैंने जासूसी कुत्ते छोड़ रखे हैं।

31. मालिक (नौकर से) – तुमने लेटर बाक्स में पत्र डाल दिये ?
नौकर – नहीं हुजूर।
मालिक – क्यों नहीं डाले ?
नौकर – कैसे डालता लेटर बाक्स में ताला लगा था।

32. दुकानदार (ग्राहक से) – आपको कैसे जूते चाहिए ? हल्के या भारी।
ग्राहक – जी दोंनो।
दुकानदार – यानी।
ग्राहक – यानी कि वजन में भारी कीमत में हल्के।

33. शिक्षक मेहनत का फल मीठा होता है, इसका कोई उदाहरण दो।
छात्र – परीक्षा के बाद गर्मियों की छुट्टियाँ हो जाती हैं।

34. डाक्टर (रोगी से)–क्या बात है, ट्रक दुर्घटना के बाद से तुम बहुत भयभीत नजर आ रहे हो ?
रोगी–जी। क्योंकि ट्रक के पीछे लिखा था, फिर मिलेंगे।

35. शिक्षक – महेन्द्र गर्मियों में पैदा होने वाला कौन–सा फल सबसे मीठा और सबसे खट्टा होता है ?
महेन्द्र – परीक्षाफल।

36. एक आदमी (भिखारी से)–तुम्हें भीख माँगते शर्म नहीं आती। चलो मेरे घर काम करना, मैं तुम्हें पाँच रुपये दूँगा।
भिखारी (आदमी से) – तुम मेरे साथ दिन भर बैठ जाओ, मैं तुम्हें दस रुपये दूँगा।

37. जज–जब तुम्हारा स्कूटर चोरी हुआ, उसी समय तुमने रिपोर्ट क्यों नहीं लिखाई ?
व्यक्ति – हुजूर ! मैंने सोचा, चोर स्कूटर की मरम्मत करा ले तभी रिपोर्ट लिखाऊँ।

38. डाक्टर – क्या आप हमेशा हकलाते हैं ?
रोगी – जी.....नहीं.....सि.....सि..... सिर्फ बोलते वक्त।

39. एक आदमी चोरी की रिपोर्ट लिखवाने जाता है–
आदमी – साब मेरी रिपोर्ट लिखिये कल रात मेरे घर में चोरी हो गयी।
थानेदार – जब चोरी हुई तब क्या बजा था ?
आदमी – साब मेरे सिर पर दो लट्ठ बजा था।
थानेदार – नहीं घड़ी में क्या बजा था ?
आदमी – घड़ी में एक लट्ठ बजा था जिससे वह बंद हो गयी थी।

40. पहला दोस्त – यार आज मैंने दुनिया का सबसे बड़ा भूत देख लिया।
दूसरा दोस्त – क्यों ? क्या शीशे के सामने खड़े हो गये थे।

41. गुरु जी (बच्चों से) – स्वर एवं व्यंजन में अंतर बताओ।
शिष्य – स्वर गाया जाता है, व्यंजन खाया जाता है।

42. अध्यापक – महात्मागाँधी का जन्म सन् 1869 में हुआ और भारत को आजादी 1947 में मिली तो बताओ मेरी उम्र क्या है ?
अध्यापक के प्रश्न को सुनकर सबसे मूर्ख छात्र बोला – सर आपकी उम्र 40 वर्ष है।
अध्यापक बहुत खुश हुआ। अब बताओ क्यों तुम्हें कैसे पता चला।
छात्र – सर मेरा बड़ा भाई 20 वर्ष का है जो आधा पागल है।

43. मरणासन्न व्यक्ति से एक व्यक्ति कहता है–मरते समय कुछ दान करते जाइये यह परलोक में काम आयेगा।
मरणासन्न व्यक्ति – सबसे बहुमूल्य अपने प्राणों को तो मैं दान कर रहा हूँ। इससे बढ़कर और क्या दान हो सकता है।

44. माँ – बेटे रामू ! सबेरे से प्लेट चम्मच लेकर कहाँ जा रहे हो ?
रामू – माता जी, कल गुरु जी ने कहा था कि सबेरे उठकर स्वच्छ हवा खाया करो। इसलिए मैं छत पर जाकर प्लेट में हवा रखकर चम्मच से उसे खाने जा रहा हूँ।

45. खाद्य निरीक्षक – रमेश तुमने दूध में पानी मिलाया है, इसीलिए तुम्हारे दूध की जाँच के लिए दूध सेम्पिल हेतु लिया जाएगा।
रमेश – नहीं, इंस्पेक्टर साहब मैंने दूध में पानी नहीं बल्कि पानी में दूध मिलाया है इसीलिये आप मुझे परेशान न करें। दूध में पानी मिलाना अपराध है न कि पानी में दूध मिलाना।

46. गुरुजी (बच्चों से) – लोग रात को खाने के बाद क्यों घूमते हैं ?
शिष्य – किसी के पैसे गिरे हों तो सबसे पहले उन्हें मिलें।

47. पापा (बेटे से) – अगर पढ़ाई न हो तो देश का क्या होगा ?
बेटा – छुट्टी होगी।

48. टीचर (छात्र से) – सच्चा रास्ता कौन बताता है ?
छात्र (सर से) – सर, ट्रेफिक पुलिस वाले।

49. भिखारी (आदमी से)– पाँच दिन से कुछ नहीं खाया कुछ पैसे दे दो।
आदमी तोतला था।
आदमी (भिखारी से)– हत्ते कत्ते दिखते हो, तमातर खाओ।
भिखारी (आदमी से)–यहाँ खाने के लाले पड़े हैं आप कह रहे हैं कि टमाटर खाओ।

50. एक पहलवान ने घड़ीसाज से अपनी घड़ी दिखा कर पूछा– इसको सुधारने का क्या लोगे ?
घड़ीसाज ने हंसते हुए कहा– जितने में आपने ली उसका आधा। मैंने दो घूंसे मारकर यह घड़ी ली थी। अब तुम एक घूंसा खाने के लिए तैयार हो जाओ।

51. एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से–तुम दौड़ में हमेशा फर्स्ट कैसे आ जाते हो ?
दूसरा व्यक्ति– मैं दौड़ते समय यह सोच लेता हूँ कि पीछे से मेरी बीबी बेलन लिए मुझे मारने दौड़ रही है।

52. शिक्षक (मानीटर से)– कोई ऐसा उपाय बताओ जिससे पूरी कक्षा शांत हो जाए।

मानीटर – सर, सब लड़कों को छुट्टी दे दीजिए।

53. पिता– बेटा, अगर तुम हिन्दी में बोलोगे तो 5, अंग्रेजी में बोलोगे तो 10 और संस्कृत में बोलोगे तो 20 पैसे मिलेंगे।
बेटा– डेडी मैं एक पठामि। अब 35 पैसे दीजिए।

54. मुझे नाटक में पगली का रोल करने के लिए कैसा मेकअप करना होगा ?
कुछ भी नहीं ? जैसी दिखती हो, वही एकदम ठीक है।

55. बेटा (माँ से)– माँ क्या पीला रंग महंगा मिलता है ?
माँ– नहीं तो।
बेटा– मगर पड़ोस वाली आंटी तो कह रही थीं कि बेटी के हाथ पीले करने में लाख रुपये लगेंगे।

56. टीचर (छात्र से)– तुम्हारा नाम क्या है ?
छात्र– रूपप्रकाश।
टीचर (छात्र से)– अंग्रेजी में उत्तर दो ?
छात्र–सर, माई नेम इज फेस लाइट।

57. एक वृद्ध अध्यापिका– मैं जवान हूँ। कौन–सा काल है ?
छात्र–जी भूतकाल।

58. म्यूजियम देखने आई प्रिया को गाइड ने रोका– जिस कुर्सी पर आप बैठी हैं वह रानी रूपमती की है।
मैं बहुत थक गई हूँ । प्रिया बोली– अभी बैठने दो। जब वह आयेंगी तो उठ जाऊँगी।

59. शिक्षक (छात्र से)– दाँतों तले ऊँगली दबाने का वाक्य बनाओ ?
छात्र– मासाब जिनके दाँत नहीं हैं वे कहाँ ऊँगली दबायेंगे।

60. रोगी (डाक्टर से)– ऐसी दवाई दो जिससे मैं अमर रहूँ।

डाक्टर (रोगी से)- एक काम करो तुम अपना नाम अमर रख लो क्योंकि ऐसी दवाई तो आज तक नहीं बनी है।

61. टीटू (दोस्तों से)- मैं जब मेरे पापा के साथ शिकार पर गया था तो वहाँ पर मैंने टाइगर की पूँछ काट दी। पहला दोस्त-लेकिन तुमने उसे जान से क्यों नहीं मारा? टीटू कैसे मारता ? उसे तो हमसे पहले ही कोई मार गया था।

62. अध्यापक- टिंकू, तुम्हारी शरारतों के कारण पिछले काफी दिनों से मेरा सिर फट रहा है। मुझे घर आकर तुम्हारे पापा से मिलना पड़ेगा।
टिंकू- क्यों नहीं मैडम, जरूर आइए। मेरे पापा डाक्टर हैं वह आपके फट रहे सिर को टांकों से सिल देंगे।

63. पवन- क्या तुम्हें अंग्रेजी बोलने में परेशानी होती है ?
राजू- नहीं अगर सुनने वाले को होती हो तो पता नहीं।

64. नीरज (रमेश से)- तुम्हारे पिता जी क्या काम करते हैं ?
रमेश- लोगों में सुख-दुःख बांटते हैं।
नीरज- अरे वाह, क्या वे भगवान् हैं ?
रमेश- नहीं ? पोस्टमेन हैं।

65. महेश (अपने मित्र से)- मेरे पैर में चोट आने के कारण मैं चल नहीं सकता। इसलिए आज स्कूल नहीं आऊँगा।
मित्र- अरे कोई बात नहीं, कम से कम स्कूल जाकर एप्लीकेशन तो दे दो।

66. भिखारी-भगवान के नाम पर कुछ देदो बाबा।
विवेक-तुम्हारे पास 100 के छुट्टे हैं ?
भिखारी-हाँ, क्यों नहीं।
विवेक- तो पहले जाकर उन्हें खर्च करो।

67. एक चींटी दौड़ी-दौड़ी जा रही थी तो दूसरी चींटी ने पूछा- कहाँ जा रही हो ?

चींटी बोली- मेरे दोस्त हाथी का एक्सीडेन्ट हो गया है, मैं उसे खून देने जा रही हूँ।

68. एक चींटी सड़क पर फैलकर खड़ी थी। दूसरी चींटी ने कहा-तुम ऐसे क्यों खड़ी हो ?
चींटी ने कहा- कल मुझे हाथी ने धक्का दिया था, आज मैं उसे धक्का दूँगी।

69. आजकल मेरे पिताजी के आगे सब सिर झुकाते हैं।
कौन से आफीसर हैं ?
उन्होंने हज्जाम का काम शुरू कर दिया है।

70. कवि सम्मेलन में एक भीमकाय कुरूप कवि गीत पढ़ रहे थे।
पहली पंक्ति थी- तुमने क्यों मंगाई मेरी तस्वीर।
तभी एक श्रोता बोला- बच्चों को डराने के लिए।

71. अगर आज मेरा कर्जा चुका दे तो आपका अहसान होगा।
लेकिन आज आप गलत वक्त पर आये हैं।
तो कब आऊँ, मैं घर पर न रहूँ तब।

72. पागलखाने में एक बार चर्चा छिड़ गई सबसे बड़ा पागल कौन है ? काफी हल्ले के बाद तय हुआ सबसे बड़ा पागल डाक्टर है। क्यों ? कुछ ने शंका व्यक्त की। अरे अच्छा भला पागलों के बीच रहता है।

73. अध्यापिका (छात्र से)- तिनके का बहुवचन क्या है ?
छात्र- झाड़ू।

74. एक दोस्त (दूसरे दोस्त से)- अपनी भूलने की आदत से बहुत तंग आ गया हूँ। अब इस उम्र में सब कुछ याद रखना बहुत मुश्किल होता है। बाजार चार चीजें लाने जाता हूँ तो 2 लेकर आता हूँ, दो भूल जाता हूँ।
दूसरा दोस्त- मेरे साथ तो और भी दिक्कत वाली बात है सीढ़ियाँ चढ़ रहा होता हूँ

तो आधी सीढ़ियों में रुककर सोचता हूँ कि मैं चढ़ रहा था या उतर रहा था।

75. धीरज (पिता से)– मैं बड़ा होकर पायलट बनूंगा।
पिता (धीरज से)– यह तो बहुत अच्छी बात है, लेकिन इंटरव्यू में अगर तुमसे पूछा गया कि विमान चलाते वक्त तुम्हारा विमान खराब हो जाए तो तुम क्या करोगे, इस सवाल का तुम क्या जवाब दोगे ?
धीरज (तपाक से)– सभी यात्रियों को उतार कर पीछे से धक्का लगाने को कहूँगा।

76. महेश (सुरेश से)– यार भगवान् ने तुम्हें मुझसे पहले क्यों पैदा किया ?
सुरेश– मुझे क्या पता ..... ?
महेश– अरे यार, इतना भी नहीं समझता, भगवान् एक मास्टरपीस बनाने से पहले एक मॉडल जो बनाकर देखना चाहते थे।

77. माँ (पुत्र से)– बेटे, मैंने कहा था कि अगर तुम पास हो जाओगे तो मैं तुम्हारे लिए साइकिल खरीद दूंगी। मगर तुम फिर भी फेल हो गए।
पुत्र– सब आपकी वजह से हुआ है।
माँ– कैसे ?
पुत्र– मैं साइकिल चलाना सीख रहा था।

78. एक पाँच वर्षीय बालिका अपने पिताजी को बता रही थी– पापा आज मैं स्कूल में बहुत जोर से गिर पड़ी थी।
पिताजी– अच्छा, फिर तो तुम बहुत जोर से रोई होगी।
बालिका– कहाँ पापा, टाइम ही नहीं मिला। गिरते ही छुट्टी की घंटी बज गई थी।

79. सोनू–पापा, क्या आप अंधेरे में अपने हस्ताक्षर कर सकते हैं ?
पापा– हाँ, पर इसकी जरूरत क्या है ?
सोनू– क्योंकि, मैं अपने रिपोर्ट कार्ड पर हस्ताक्षर करवाना चाहता हूँ।

80. एक लड़का साइकिल सीखने के बाद अपने दोस्तों को बता रहा था– ऐ राजू देख मेरे हाथ हैंडिल पर नहीं हैं। थोड़ी देर बाद बोला– ऐ राजू मेरे पांव पैडल पर नहीं

हैं।

तभी वह धड़ाम से गिर पड़ा तो राजू ने कहा- देख तेरे दाँत भी मुंह में नहीं हैं।

81. एक आदमी ने आकर नंदू से पूँछा- क्यों तेरे पापा घर में हैं ? हाँ पापा घर में ही हैं। नंदू ने कहा।

उस आदमी ने पूरा घर छान मारा पर पापा नहीं दिखे। इस पर उसने कहा- क्यों रे, तू झूठ बोलता है ?

नंदू ने जवाब दिया मैं झूठ नहीं बोलता, मैंने तो सच ही कहा कि पापा घर में हैं। पर मैंने ये कब कहा कि ये घर मेरा है।

82. एक जंगल में एक हाथी रहता था। वह जहाँ भी जाता वहीं तबाही मचा देता था। एक बार हाथी को आता देख सभी चूहे बिल में घुस गए। एक चूहे ने पैर बाहर निकाल रखा था। दूसरे ने इसका कारण पूछा तो उसने कहा कि जब हाथी यहाँ से जाएगा तो मैं उसको तगड़ी अड़ा दूंगा।

83. एक पागल हाथी जंगल में बैठे चूहों के पीछे भागने लगा तभी सभी चूहे पेड़ पर चढ़ गए तभी एक चूहा गलती से पेड़ से गिर गया और सीधे हाथी के पीठ पे जाकर गिरा तभी दूसरे चूहे ने कहा-दबा साले को दबा।

84. पिता- बेटे, तुम इतिहास में फेल क्यों हुए ?

बेटा- पिताजी, मैं क्या करूं सभी प्रश्न उस समय के पूछे गए थे जब मैं पैदा भी नहीं हुआ था।

85. अध्यापक- मैंने तुम्हें आम का चित्र बनाकर लाने कहा था, तुम आम उठा लाए।

छात्र- चित्र बनाने में अधिक समय लगता और अच्छा भी नहीं बनता।

86. पति- हरा सूट और लाल टाई पहनकर अपनी पत्नी से कहता है कि मैं कैसा लग रहा हूँ ?

पत्नी- एकदम मिठू की तरह।

87. जज (चोर से)- तुम जानते हो, झूठ बोलकर कहाँ जाओगे ?
चोर- नरक में।
जज- और सच बोलकर ?
चोर- जेल में।

88. किसान- डॉक्टर के पास जाकर बैठ जाता है।
डॉक्टर- व्हाट हैप्टेन्ड ?
किसान- (क्यों न मैं भी अंग्रेजी में बोलूं सोचते हुए)- काउज हसबैन्ड मारिंग सिंगड़ा माइ टंगड़ा सो आई एम लंगड़ा।

89. पिता (पुत्र से)- बेटा, प्रश्नपत्र कैसा था ?
पुत्र- जी लाल रंग का।

90. मास्टरजी- रवि, तुम्हें यह सोचकर आश्चर्य नहीं होता कि अंडे में से बच्चे कैसे निकलते हैं ?
रवि- होता हैं सर, पर उससे ज्यादा यह सोचकर होता है कि वे उसके अन्दर घुसते कैसे हैं।

91. पहला मित्र- यार चल बाहर ठंड़ी हवा खाके आते हैं।
दूसरा मित्र- नहीं यार, आज मेरा उपवास है।

92. एक आदमी- ट्रेन की भीड़-भाड़ में खड़ा रहता है। वह मन ही मन सोचता है क्यों न भीड़ कम की जाए। उसने अपनी जेब से नकली साँप निकाल कर ट्रेन के डिब्बे में डाल दिया उस सांप के कारण वह डिब्बा खाली हो गया।
उसे जबलपुर से नरसिंहपुर जाना था। वह यह सोचकर सो गया कि कल सुबह के 8 बजे वह नरसिंहपुर स्टेशन पहुँच जाएगा। सुबह जब वह उठा तो आवाज आई- चाय वाला, चाय वाला उसने चाय वाले से पूछा क्यों भाई यह कौन-सा स्टेशन है। वह बोला भाई यह तो जबलपुर स्टेशन है। रात में इस डिब्बे में साँप था। इसलिए इस डिब्बे को काट दिया गया था।

93. माँ– बेटी क्या कर रही हो ?
बेटी– भैय्या को पत्र लिख रही हूँ।
माँ– लेकिन तुझे तो लिखना आता नहीं।
बेटी– तो भैय्या को कौन–सा पढ़ना आता है।

94. लखन (नानाजी से)– नानाजी, आपके सिर के बाल तो सफेद हैं लेकिन मूँछों के बाल काले क्यों हैं ?
नानाजी– बेटा, क्योंकि मूँछों के बाल सिर के बालों से 18 साल छोटे हैं।

95. एक लड़का– मेरे पिताजी प्रतिदिन हजारों लोगों को खाना खिलाते हैं।
दूसरा लड़का– तो फिर तुम्हारे पिताजी बहुत बड़े आदमी होगें।
पहला लड़का– नहीं यार, वो तो एक होटल में वेटर हैं।

96. रामू अपनी माँ से कहता है– माँ मैने आज कक्षा में कमाल कर दिया।
माँ– वह कैसे ?
रामू– सर, ने एक सवाल पूछा और पूरी कक्षा में उसका उत्तर सिर्फ मैंने दिया।
माँ– सवाल क्या था, बेटे ?
रामू– कक्षा का काँच किसने तोड़ा ?
माँ– तो तुमने क्या कहा ?
रामू– मैंने कक्षा का काँच तोड़ा।

97. तीन लड़के आपस में बात करते हैं।
पहला कहता है– मेरे पिताजी की चाय की दुकान है इसलिए मैं रोज चाय पी कर आता हूँ।
दूसरा कहता है– मेरे पिताजी की मिठाई की दुकान है इसलिए मैं रोज मिठाई खाकर आता हूँ।
तीसरा कहता है– मेरे पिताजी की जूते की दुकान है इसलिए मैं रोज जूते खाकर आता हूँ।

98. नवाब साहब अपनी आलीशान कोठी अपने एक दोस्त को दिखाते हुये कह रहे थे- यह गर्म पानी का स्वीमिंग पुल है और यह ठंड़े पानी का और यह तीसरा, दोस्त ने पूछा- हाँ, यह खाली रहेगा। यह उन लोगों के लिये है जो तैरना नहीं जानते। नवाब साहब ने बताया।

99. बंटी- तुम आकाश के तारे गिन सकते हो ?
चिंटू- अभी तो अंधेरा है। दिन में गिनकर बताऊँगा।

100. पवन (भिखारी से)- ये लो 1 रुपया कुछ खा-पी लेना।
भिखारी- माफ करना बाबूजी, मैं लंच टाइम में भीख नहीं लेता।

101. एक बच्चा कुत्ते को परेशान कर रहा था। तभी वहाँ कुत्ते का मालिक आ गया और गुस्से में बोला अगर तुम मेरे कुत्ते के कान खीचोगे तो मैं तुम्हारे कान खीचूंगा, अगर बाल खीचोगे तो मैं भी तुम्हारे बाल खीचूंगा।
बच्चा- अगर मूँछ खीचूं तो ?

102. पति (पत्नि से)- अरे मेहमान आने वाले हैं और घर में झाड़ू तक नहीं लगी है।
पत्नि- तुम्हीं ने तो कहा था कि जब तक मैं हूँ तुम्हें फिक्र करने की जरूरत नहीं है।

103. अध्यापक- बच्चों, सबसे कड़वा खाना कौन-सा है ?
बच्चे- सर, मार खाना।

104. पुत्र (पिताजी से)- आप कहते हैं कि ज्यादा लालच नहीं करना चाहिए ?
पिताजी- हाँ बेटा।
पुत्र- इसलिए मैंने गणित में सौ में से दो ही अंक प्राप्त किए हैं।

105. एक आदमी सड़क पर चल रहा था, लेकिन ऊपर आसमान की ओर देख रहा था। चौराहे पर खड़े सिपाही ने उसे रोककर कहा-भाई, कहाँ जाता है ?
उसने कहा- सामने बाजार में।
तो उधर ही देखो नहीं तो वही चले जाओगे जहाँ देख रहे हो। पुलिस ने समझाया।

106. शिक्षक- राम जहाँ वर्षा अधिक होती है वहाँ सबसे ज्यादा क्या उत्पन्न होता है ?
राम- सर, कीचड़।

107. शिक्षक (छात्र से)- तुम्हारा नाम क्या है ?
छात्र- जी सूर्यप्रकाश।
शिक्षक- तुम्हारे पिताजी का क्या नाम है ?
छात्र- जी चन्द्रप्रकाश।
शिक्षक- अब दोनों नाम अंग्रेजी में बोलकर बताओ ?
छात्र- माय नेम इज सन लाईट, माई फादर्स नेम इज मून लाईट।

108. शिक्षक-बेटे बताओ तुम बड़े होकर क्या बनना चाहते हो ?
छात्र- मास्टर जी मैं बड़ा होकर म्यूजिक डायरेक्टर बनना चाहता हूँ।
शिक्षक- बताओ बेटे तुम्हारा फेवरेट म्यूजिकल इन्सटुमेन्ट क्या है ?
छात्र- मास्टर जी मेरा फेवरेट म्यूजिकल इन्सटुमेन्ट स्कूल की घंटी है जब वह बजती मैं खुशी से पागल हो जाता हूँ।

109. अध्यापक-मोहन बताओ, अक्ल बड़ी की भैंस ?
मोहन-सर, पहले आप उन दोनों की डेट आफ बर्थ तो बताइए।

110. रीता- पिंकी तुम्हें जन्मदिन पर सबसे अच्छा गिफ्ट कौन-सा मिला ?
पिंकी- यह बाजा।
रीता- पर यह सबसे अच्छा कैसे है ?
पिंकी- क्योंकि इसे न बजाने के लिए मेरी मम्मी मुझे 10 रुपये देती है।

111. गणित के शिक्षक- कल मैं तुम लोगों से एक सवाल पूँछूगा। सब के सब तैयारी करके आना।
दूसरे दिन टीचर ने पूछा- बताओ तुम्हारे सिर पर कितने बाल हैं ?
एक छात्र- दो करोड़ साठ लाख पाँच हजार दो सौ इक्यावन सर।
शिक्षक- यह तुमने कैसे गिने ?

छात्र- यह तो दूसरा सवाल हो गया सरजी, आपने तो एक ही सवाल की तैयारी करके आने को कहा था।

112. दो किसान आपस में बातचीत करते हैं।
पहला किसान- दूसरे किसान से कहता है कि जैन लोग इतने धनी क्यों होते हैं ?
दूसरा किसान- क्योंकि जैन लोगों के भगवान् लक्ष्मी जी को यहीं पर छोड़ गए हैं जबकि अपने भगवान् लक्ष्मी जी को लेकर क्षीरसागर में बैठे हुए हैं।

113. शिक्षक (छात्र से)- बच्चो बताओ सत्य एवं भ्रम में क्या अंतर है ?
छात्र- सर आप पढ़ा रहे हैं, ये तो सत्य है परन्तु यदि आप समझते हैं कि हम पढ़ रहे हैं तो ये भ्रम है।

114. पत्नि (पति से)- कॉलेज लाइफ का तुम्हारा कोई कटु अनुभव है ?
पति- हाँ मेरी और तुम्हारी पहली मुलाकात वहीं हुई थी।

115. एक बार एक व्यक्ति नई घड़ी खरीदता है। चार दिन बाद उसकी घड़ी बंद हो जाती है तो वह घड़ी खोलकर देखता है तो उसमें एक मरा हुआ मच्छर मिलता है तो वह रोने लगता है, दूसरा व्यक्ति उससे रोने का कारण पूछता है तो वह कहता है मेरी घड़ी का चालक मर गया है।

116. एक बार तीन व्यक्ति मरने के पश्चात् नरक में जाते हैं, एक अमेरिका का, दूसरा भारत का तथा तीसरा पाकिस्तान का। तीनों व्यक्ति वहाँ से अपने-अपने देश में बात करने को कहते हैं। अमेरिका वाला व्यक्ति टेलीफोन से बात करता है तो उसका बिल 100 रुपया आता है। भारत का व्यक्ति बात करता है तो उसका बिल 500 रुपया आता है जब पाकिस्तान वाला व्यक्ति बात करता है तो कोई बिल नहीं आता है वह एस. टी. डी. के कर्मचारी से पूछता है ऐसा क्यों ? तो कर्मचारी कहता है- नरक से नरक मुफ्त है।

117. निशा (माँ से)- मम्मी, आज में स्कूल नहीं जाऊँगी।
मम्मी- क्यों बेटी ?

निशा– कल स्कूल में हमारा वजन तौला गया था। मुझे डर है कि आज हमें बेच न दें।

118. एक मूर्ख दूसरे मूर्ख से– यार नाव तो डूब रही है।
दूसरा मूर्ख– डूबने दो नाव अपनी तो है नहीं यह तो किराये की है।

119. एक लड़के के घर में हवन होता है। पंडित जी कहते हैं कि बच्चे इस आग में दो लड्डू डालो और कहो स्वाहा।
लड़का दोनों लड्डू अपने मुँह में डालता है और कहता है–आहा।

120. एक आदमी– मेरी बकरी आठ ऊन के गोले खा जाती है।
दूसरा आदमी– अच्छा होगा जब उसके बच्चे होगें तब स्वेटर पहने होगें।

121. बृजेश– क्या बात है संदीप आज तुम गिलास से नहा रहे हो ?
संदीप– क्या बताऊं यार आज नल नहीं आये हैं और मुझे देर तक नहाने की आदत है।
बृजेश– तो चम्मच से क्यों नहीं नहाते, दिन भर आराम से नहाते रहना।

122. रिंकू– शादी के कुछ ही दिनों बाद मैं लखपति बन गया।
संटू– तब तो तुम्हारी पत्नी बड़ी भाग्यशाली है ?
रिंकू– लेकिन मैं शादी के पहले करोड़पति था।

123. पहला आदमी– अगर तुमने गड़बड़ की तो मैं तुम्हारी खाट खड़ी कर दूँगा।
दूसरा आदमी– तुम मेरी खाट खड़ी कर ही नहीं सकते।
पहला आदमी– क्यों नहीं कर सकता ?
दूसरा आदमी– क्योंकि मैं सोता जमीन पर हूँ।

124. मालिक (नौकर से)– कल मुझे जल्दी दफ्तर जाना है इसलिए सुबह छह बजे जरूर जगा देना।
नौकर– ठीक है मालिक, लेकिन मुझे घड़ी देखनी नहीं आती, जब छह बज जाएं

तो मुझे आप बता देना, मैं आपको जगा दूँगा।

125. माँ ने रोहन को बाजार भेजा और हिदायत देते हुए कहा- बेटा, जरा ध्यान से सामान खरीदना कहीं दुकानदार तुम्हारी आँखों में धूल न झोंक दें ?
इस पर रोहन ने कहा- माँ तुम चिंता मत करो, दुकान पर चढ़ने से पहले ही चश्मा लगा लूंगा।

126. परीक्षा देकर निकले रोहन ने सोहन से पूछा- कैसा रहा तुम्हारा पेपर ?
सोहन- मैंने तो कुछ लिखा ही नहीं। सादी कॉपी जमा कर दी। तुम्हारा कैसा रहा ?
रोहन- मैंने भी बिना कुछ लिखे कॉपी जमा कर दी।
सोहन- यार फिर एग्जामिनर सोचेगा हमने नकल की है।

127. क्लास में संस्कृत के अध्यापक ने बच्चे से पूछा रमेश जरा बताओ तो तमसो माँ ज्योतिर्गमय का हिन्दी में अनुवाद क्या होगा ?
रमेश ने कुछ देर सोचने के बाद कहा- सर, इसका अर्थ हुआ कि तुम सो जाओ माँ में ज्योति के घर जा रहा हूँ।

128. क्लास में टीचर ने एक छात्रा को नकल करते हुए पकड़ा और उसको कहा- तुमने जितनी मेहनत इन नकल की पर्चियों को बनाने में की है। अगर उतनी पढ़ाई करने में की होती तो अवश्य पास हो जाती। इस पर छात्रा ने कहा-जी मैं मेहनत से जी नहीं चुराती।

129. कल्पना ने अपनी सहेली रमा से कहा- पत्नि अक्सर अगले जन्म में वही पति पाना चाहती है पर क्यों ?
रमा ने कहा- जिससे उस पति को सुधारने की कड़ी मेहनत बेकार न जाए।

130. एक शराबी लपककर बस में चढ़ा और एक पादरी के बगल में बैठ गया। पादरी ने शराबी की हालत देखकर दुखी होते हुए कहा-बेटे तुम नहीं जानते कि तुम सीधे नरक की तरफ जा रहे हो।

यह सुनते ही शराबी खड़ा हो गया और चिल्लाया–ड्राइवर बस रोको, मैं गलत बस में चढ़ गया हूँ।

131. मम्मी (बेटे से)– बेटा गोली खा ले।
बेटा– मैं नहीं खाऊँगा।
मम्मी– मम्मी लड्डू में गोली रखकर कहती है ले बेटा लड्डू खा ले मैं बाजार जा रही हूँ।
बेटा– मम्मी खा लिया मगर गुठली थूंक दी।

132. लेखक और कवि में क्या अंतर है ?
जो फर्क तंगी और फटेहाली में है।

133. कवि सम्मेलन में एक कविवर बार–बार पानी मांग कर पी रहे थे। इस पर दूसरे कवि ने आहिस्ता से पूछा– आज क्या खाकर आए हैं कि इतना पानी पी रहे हैं। बीबी की गालियाँ उत्तर मिला।

134. शिक्षक कक्षा में गेहूँ की फसल के विषय में पढ़ा रहे थे। लखन शिक्षक की बातें न सुनकर सो रहा था।
शिक्षक की नजर लखन पर पढ़ते ही उन्होंने पूछा– बताओ लखन गेहूँ सबसे अधिक कहाँ उगाया जाता है ?
लखन– जी खेत में।

135. रानी अपनी सहेली के घर मिलने आई। उससे हाल–चाल पूछा और बोली–सुना है तुम्हारे पति को नींद में चलने की आदत है ?
सहेली बोली– हाँ आदत तो है पर थोड़ी दूर चलकर वापस आ जाते हैं।

136. यात्री (बस ड्राइवर से)– इस खतरनाक मोड़ पर सावधान का बोर्ड लगा था वो कहाँ गया ?
ड्राइवर– पिछले दो वर्षों से कोई दुर्घटना नहीं हुई तो उसे हटा दिया।

137. एक मरीज अपने असहनीय दर्द से तड़पते हुए चीखता है–हे ईश्वर जल्दी से यमराज

को भेज दो।
डॉक्टर (दूसरे कमरे से ही)- घबराओं नहीं मैं आ रहा हूँ।

138. एक डॉक्टर की नेम प्लेट पर नाम के नीचे उसकी डिग्री-पी. पी. एम. एफ. लिखी थी।
मरीज ने पूछा इसका क्या मतलब है ?
डॉक्टर साहब ने बताया कि प्राईमरी पास और मिडिल फेल।

139. एक सज्जन दुकान पर छतरी खरीदने गये, छतरी पसंद कर दुकानदार से पूछा कि कितने साल तक चलेगी ?
दुकानदार ने कहा- बाबू जी इसे पानी और धूप से बचाकर रखना सालों साल चलेगी।

140. रिक्शा चालक से एक युवती ने कहा- भइया, जल्दी चलो वरना टी. वी. पर चित्रहार निकल जाएगा।
तब रिक्शा चालक बोला- बहन जी रिक्शा ज्यादा तेज चलाया तो मेरे चित्र पर हार चढ़ जाएगा।

141. बेटे ने पापा से कहा- पापा, पापा इस बार आप हमें क्या दिलवाएँगे ?
तब पापा बोले बेटा पास हुए तो साइकिल और यदि फेल हुए तो रिक्शा।

142. बाप ने बेटे को किसी बात पर डाँटा और कहा- गधा कहीं का, इससे कुछ भी नहीं बनता।
तब बेटा बाप से बोला- पापा समझ में नहीं आता जब आप डाँटते हैं तो गधा कहते हैं और टीचर जब डाँटती हैं तो गधे का बच्चा कहती हैं। तो मैं क्या हूँ?

143. माँ बेटे को डंडा दिखाते हुए कहती है- ठहर जा अभी बताती हूँ।
बेटा जाकर खटिया के नीचे छिप जाता है पिता बेटे को आवाज देते हुए आते हैं। खटिये के नीचे देखते हैं तो बेटा कहता है- पापा, पापा आ जाओ, माँ डंडा लेकर आ रही है।

144. पापा (बेटे से)- तुम्हें पता है जब जवाहरलाल नेहरू तुम्हारी उम्र के थे तो अपनी क्लास के मॉनीटर थे।
बेटा-हाँ पापा जानता हूँ और आपको मालूम है कि वे जब आपकी उम्र के थे तो भारत के प्रधानमंत्री थे।

145. लखन- पापाजी आपकी दाल ?
पापा- कितनी बार समझाया है कि भोजन करते समय बातें नहीं करते हैं।
भोजन करने के पश्चात् हाँ लखन क्या कह रहे थे तुम ?
लखन- पापाजी आपके दाल में मक्खी गिर गई थी।

146. मोदीजी अपने पालतू कुत्ते की तारीफ करते हुए कह रहे थे-यह बहुत समझदार है सुबह उठते ही दरवाजे से अखबार लाकर देता है, बच्चों को स्कूल तक छोड़कर आता है। पत्नि के साथ बाजार खरीदी करने साथ में जाता है।
एक ने कहा- सेठ जी, मैंने सुना है कि आप कुत्ते को बेच रहे हैं। क्यों ?
मोदी जी - कल रात को हमारे घर में चोरी हुई तो यह टार्च लेकर चोरों को रास्ता बता रहा था।

147. पवन की शादी होने के कुछ दिन बाद ही उसे उसका दोस्त सौरभ मिला। उसने पवन के हाल-चाल पूछे।
पवन - मेरी पत्नि मुझे रोज बर्तन मारती है फिर भी हम दोनों बहुत खुश हैं।
सौरभ - कैसे खुश हो ?
पवन - जब उसका निशाना लग जाता है तो वो खुश होती है और जब उसका निशाना सही नहीं लगता तो मैं खुश हो जाता हूँ।

148. जज (चोर से) - तुमने एक ही दुकान पर बार-बार चोरी क्यों की ?
चोर - साड़ियाँ तो मैंने पहली बार ही चुरा ली थी। तीन बार उन्हें बदलने के लिए जाना पड़ा, क्योंकि मेरी पत्नि को साड़ी पसंद नहीं आ रही थीं।

149. एक यात्री - यहाँ पास में कोई कब्रिस्तान है ?

कुली – जी नहीं।
यात्री (परेशान होकर)–तो फिर जो यात्री ट्रेन की प्रतीक्षा करते–करते मर जाते हैं उन्हें कहाँ दफनाया जाता है ?

150. ग्राहक – यह कैसा चित्र है ?
चित्रकार – गन्ने खाते हाथियों के झुंड का।
ग्राहक – गन्ने कहाँ हैं ?
चित्रकार – गन्ने तो हाथी खा गये।
ग्राहक – और हाथी भी तो नहीं दिख रहे।
चित्रकार – हाथी तो गन्ने खाकर चले गये।

151. यातायात पुलिस तेजी से कार चला रहे युवक का पीछा करते हुए चालक से पूछती है–इतनी तेजी से कार क्यों चला रहे हो ?
चालक – सर, मेरी कार के ब्रेक फेल हो गये हैं। कोई दुर्घटना घटे इसके पहले जल्दी से घर पहुँचना चाहता हूँ।

152. ग्राहक (दुकानदार से) – आपने कहा था कि यह घड़ी जिंदगी भर खराब नहीं होगी लेकिन ये तो एक वर्ष में ही खराब हो गई।
दुकानदार – मुझे क्या पता था आपकी उम्र इतनी लंबी है।

153. अध्यापक (छात्र से) – अगले जन्म में तुम क्या बनना चाहते हो ?
छात्र – सर जिराफ।
अध्यापक – क्यों ?
छात्र – ताकि आप हमें थप्पड़ न मार सकें।

154. सौरभ – पिता जी, मुझे इस बार स्कूल में चार पुरुस्कार मिले।
पिता जी – बड़ी अच्छी बात है बेटा। किन–किन बातों के लिए पुरुस्कार तुम्हें दिये गये हैं ?
सौरभ – एक अच्छी हाजिरी के लिए, दूसरा अनुशासन के लिए,तीसरा अच्छी

स्मरण शक्ति के लिए मिला है।
पिता जी – और चौथा पुरुस्कार किसलिए ?
सौरभ – मुझे याद नहीं आ रहा है।

155. पिता – लखन, आज का पेपर कैसा गया ?
लखन – केवल एक प्रश्न गलत हुआ।
पिता – बहुत बढ़िया, शेष प्रश्न सभी सही हैं ?
लखन – वो मैंने किये ही नहीं।

156. अध्यापक (छात्र से)–वस्तु गर्म होकर फैलती है, उसका एक उदाहरण दीजिए।
छात्र – सर, गर्मियों में हमारी छुट्टियाँ डेढ़ महीने की होती हैं जबकि सर्दियों में केवल 7 दिन की होती हैं।

157. एक बार राबड़ीदेवी, लालू को क्लिंटन के पास अंग्रेजी सीखने अमेरिका भेजती है। लालू कई दिनों तक भारत वापस नहीं आये तो राबड़ी देवी ने अमेरिका फोन करके पूछा – हैलो, ललुआ हैं का ?
उधर से जवाब आता है – ललवा तो नहीं है, हम क्लिंटनवा बोलत हैं। कहत कछु काम है का ?

158. मोटी औरत – डाक्टर साहब मैं पतली होना चाहती हूँ।
डाक्टर – 100 गोली की दवाई वाली शीशी देते हैं।
महिला – इन्हें कब व कितनी गोली खाना है ?
डाक्टर – ये गोलियाँ आपको खाना नहीं हैं, इन्हें दिन में पचास बार जमीन पर बिखेरना और एक–एक कर शीशी में भरना है।

159. भिखारी – अंधे को कुछ दे दो बेटा।
लखन – क्या सबूत है कि तुम अंधे हो ?
भिखारी – क्या तुम्हें सामने की ये बड़ी बिल्डिंग दिखाई देती है ?
लखन – हाँ।

भिखारी – पर मुझे नहीं दिखाई देती है।

160. वकील ने अपने मुवक्किल को निर्दोष साबित करने के लिए फाइल जज की ओर बढ़ाते हुए कहा–योर ऑनर, इसमें वे सबूत हैं जिनसे साबित होता है कि मेरा मुवक्किल निर्दोष है।
जज ने फाइल खोली उसमें हजार–हजार के दस नोट थे।
जज ने कहा – ठीक है लेकिन ऐसे कम से कम दस सबूत और पेश करो।

161. भिखारी – बाबू जी एक पैसा दे दो।
बाबू जी – भाई एक पैसे से क्या मिलेगा ? ज्यादा क्यों नहीं माँगते हो ?
भिखारी – बाबू जी मैं आदमी की हैसियत देखकर माँगता हूँ।

162. डॉक्टर मरीज को हल्का भोजन खाने की सलाह देते हैं पर दूसरे दिन मरीज की तबियत ज्यादा खराब होने पर पुनः डॉक्टर के पास आता है। डॉक्टर ने पूछा– कल रात को कुछ हल्का भोजन खाया था।
मरीज– हाँ, पकौड़े खाए थे।
डॉक्टर– पर कैसे समझा कि पकौड़े हल्का भोजन होता है।
मरीज– जी कढ़ाई में भारी चीज तेल के नीचे व पकौड़े ऊपर तैर रहे थे।

163. डॉक्टर (मित्र से)– इस जगह क्लीनिक खोलकर मेरा काम बिल्कुल बंद हो गया।
मित्र– इसका कारण है बाहर लगा हुआ बोर्ड।
डॉक्टर– क्या मतलब ?
मित्र– बोर्ड पर लिखा है– ऊपर जाने का रास्ता।

164. एक पहलवान अपने नए जूते मंदिर के बाहर उतार कर गया। उसी वक्त वहाँ एक चोर आया और उसने जूते में पड़े संदेश को देखा जिसमें लिखा था– ये जूते एक पहलवान के हैं। बहुत खतरनाक हैं। चुराने वाले सोच लें।
पहलवान जब मंदिर से पूजा–पाठ करके बाहर आया तो उसने देखा कि उसके जूते गायब हैं। और उसकी नजर वहाँ पड़े एक संदेश पर पड़ी, जिसमें लिखा था–

आपके जूते चुराने वाले चोर ने दौड़ में कई इनाम जीते हैं। पीछा करने वाले सोच लें।

165. एक पड़ोसी संगीतकार से बोलता है–क्या आज की रात आपका यह तबला और सितार मिल सकता है ?
संगीतकार ने प्रसन्नता भरे स्वर में पड़ोसी से कहा– क्यों, मेरा गाना सुन–सुनकर आपको भी गाने की इच्छा होने लगी ?
पड़ोसी– नहीं आज की रात मैं आराम से सोना चाहता हूँ।

166. एक पड़ोसन (दूसरे से)– मैंने कहा क्या कर रही हो बहिन ?
दूसरी पड़ोसन (पहली से)– झाड़ू लगा रही हूँ।
तो पहली पड़ोसन ने कहा–तो यहीं आकर लगा लो, कुछ गपशप भी हो जाएगी।

167. एक रात एक पंडित जी ने सपना देखा कि कोई उनके हाथ में नौ रुपये दे रहा है। और पंडित जी ग्यारह रुपये से कम लेने को तैयार ही नहीं हो रहे हैं। इसी वार्तालाप से उनकी आँखें खुल गईं और उन्होंने अपने दोंनो हाथों को खाली पाया।
झट से पंडित जी ने आँखें बंद कर ली और लगे जोर–जोर से चीखने–चिल्लाने, अच्छा लाओ, लाओ नौ रुपये ही दे दो।

168. जेलर (चोर से)– तुम्हें किस अपराध में सजा हुई ?
चोर– खाँसी के कारण।
जेलर– ऐसा संभव नहीं है।
चोर– जब मैं जेब काट रहा था कि अचानक खाँसी आ गई और मैं पकड़ा गया।

169. शादी के समय दूल्हा–दुल्हन की माँग भर रहा था। तभी दूल्हे के दोस्त सौरभ ने कहा– यह रस्म उल्टी होना चाहिए। यानि दुल्हन दूल्हे की माँग में सिन्दूर भरे।
दूसरे दोस्त ने कहा–यदि ऐसा हुआ तो सभी गंजे कुँवारे रह जाएँगे।

170. संजय (धोबी से)– तुम्हें धुलाई के पैसे माँगने पर शर्म आना चाहिए। एक तो तुमने

मेरी पेंट खो दी।
धोबी- अगर पेंट धोने के पहले खो जाती तो कभी पैसे नहीं मांगता, पर पेंट धोने के बाद खोई है।

171. एक व्यक्ति रात्रि के समय सूनसान सड़क पर जा रहा था। उसे रास्ते में दो व्यक्ति मिले।
एक बोला- साहब आप एक रुपया का सिक्का देंगे।
उसने कहा- हाँ जरूर दूंगा पर आप सिक्के का इस समय क्या करोगे ?
हमें टॉस करना है कि कौन आपकी घड़ी लेगा और कौन आपके पैसे लेगा।

172. पागलखाने में दो पागल कुँए पर नहा रहे थे। उनमें से एक कुँए में गिर पड़ा। दूसरे ने बड़ी बहादुरी से उसे कुँए से बाहर निकाला।
तुमने तो कमाल कर दिया। पागलखाने का इंचार्ज प्रशंसात्मक स्वर में बोला। जो आदमी इतनी होशियारी और सूझबूझ दिखा सकता हो वह पागल नहीं हो सकता। कल से तुम्हारी छुट्टी कर दी जाएगी।
कुछ देर बाद इंचार्ज को खबर मिली कि उस पागल ने उसे फाँसी लगाकर टाँग दिया। इंचार्ज ने उस पागल को बुलाकर पूछा-तुमने ऐसा क्यों किया ?
पागल ने जवाब दिया-नहीं साहब उसे तो मैंने सूखने के लिए टाँगा है।

173. क्या तुम इससे पहले कभी जेल गये हो ?
मुल्जिम (रोते हुए)- नहीं माई बाप, कभी नहीं गया।
जज- रोते क्यों हो, अब चले जाओगे।

174. शिक्षिका- आज तुमने देर से आने का क्या बहाना सोचा है ?
टिनी- मैडम, आज मैं इतनी तेज से आई कि बहाना सोच ही नहीं पाई।

175. जज (चोर से)- तुमने रेल के डिब्बे से चोरी क्यों की ?
चोर- हुजूर, मैंने चोरी नहीं की। उस पर लिखा था रेल्वे की सम्पत्ति आपकी सम्पत्ति है।

176. ईयर फोन लगाकर गाने सुन रहे श्याम ने घंटी बजने पर फोन उठाया।
दो-तीन बार हैलो-हैलो कहा।
फिर बोले- अबे कुछ बोलेगा भी, या गाना ही सुनाए जाएगा।

177. एक भिखारी सरकारी नल पर नहा रहा था। तभी उसके एक भिखारी मित्र ने कहा-
यार, जहाँ तक मुझे याद पड़ता है, तुम पिछले महीने ही तो नहाये थे ?
दूसरा बोला- यार, तुझे तो मालूम है, मुझे साफ-सुथरा रहने की आदत है।

178. एक भिखारी- अगर तुम्हारी लाटरी खुल जाये तो तुम क्या करोगे ?
दूसरा भिखारी- सबसे पहले एक मोटर साइकिल खरीदूंगा, क्योंकि पैदल भीख मांगते-मांगते में थक जाता हूँ।

179. एक करोड़पति, लेकिन बहुत ही आलसी आदमी जो अपनी कार के पीछे की सीट पर बैठा था, कार के ड्राइवर से बोला-जरा कार को झटका देना, मेरी सिगरेट में काफी राख जमा हो गयी है।

180. एक दोस्त (दूसरे से)- क्या तुम अपनी मम्मी का कहना मानते हो ?
दूसरा दोस्त- हाँ, वह जितना कहती हैं उससे ज्यादा मानता हूँ।
पहला दोस्त- वह कैसे ?
दूसरा दोस्त- जब मम्मी कहती हैं स्कूल मत जाओ, तो मैं दो दिन और छुट्टी मार लेता हूँ।

181. नेता जी की पत्नि- मेरी चप्पल टूट गई हैं कितने दिनों से कह रही हूँ कि एक जोड़ी नई चप्पल दिलवा दो।
नेताजी- प्रिये, अब इंतजार खत्म हुआ। आज शाम मेरा भाषण है, तुम साथ चलना। एक क्या कई जोड़ी नए जूते-चप्पल मिल जायेंगे।

182. एक नाई ने एक गंजे आदमी की कटिंग की तथा दुगुने पैसा मांगे।
गंजे आदमी ने कहा-कि मेरे सिर में तो बाल कम हैं आधे पैसे लो।

नाई बोला- मुझे आपके बाल ढूंढ-ढूंढ कर काटने पड़े इससे मुझे बड़ी परेशानी हुई। इसलिये दुगुने पैसे चाहिए।

183. शर्माजी- ग्रामीण और शहरी बहू में क्या फर्क है ?
वर्माजी- पहली खाना बनाती है दूसरी खाना बनवाती है।

184. शिक्षक-कार शब्द का एक वाक्य में प्रयोग करो।
विद्यार्थी- सरकारी अहलकार श्री निरंकार ने सरकार के लिए साहूकार श्री चन्द्रकार की न्यू इंपोटेंड कार अधिग्रहित की।

185. कंजूस मालिक (नौकर से)- अरे तू तो मुझे लुटवा देगा। एक रोटी पर इतना घी।
नौकर-क्षमा करें मालिक गलती से मैंने आज अपनी रोटी आपकी थाली में रख दी है।

186. पति तेजी से कमरे में दाखिल हुए और जल्दी से दरवाजा बंद कर दिया। फिर वह अपनी पत्नि से बोले- सारी खिड़कियां बंद कर दो और उनके पर्दे गिरा दो। मारे घबराहट के पत्नि ने जल्दी से कमरा पूरी तरह पैक कर दिया, फिर पति से पूछा कि- क्या हुआ है ?
पति- देखो, इधर आओ मेरी घड़ी अंधेरे में भी कैसी चमक रही है।

187. शिक्षक कक्षा में छात्रों को पढ़ा रहे थे। तभी एक शरारती छात्र ने सीटी बजा दी। अध्यापक ने कड़क कर पूछा- कक्षा में सीटी बजाने की हिम्मत किसने की सचिन कहीं तुमने तो नहीं बजाई ?
सचिन हड़बडा कर- जी-जी सर, मैं तो सो रहा था।

188. राजेश और संजय आपस में लड़ रहे थे।
राजेश- यह सूर्य है।
संजय- नहीं यह चंद्रमा है।
वही एक राहगीर को रोककर पूछते हैं।

राहगीर– मुझे क्या मालूम मैं तो यहाँ परदेशी हूँ।

189. शिक्षक (छात्र से)– वर्षा के दिन बिजली क्यों चमकती है।
छात्र– सर भगवान टार्च जलाकर देखते हैं कि कहीं सूखा तो नहीं है।

190. शिक्षक (छात्र से)– वाक्य को शुद्ध करके बताओ– रिश्वत लेना अन्याय है।
छात्र– रिश्वत लेना अन्य आय है। छात्र ने वाक्य को शुद्ध करके बताया।

191. रोगी– डॉक्टर साहब मैं आपका आभारी हूँ। कभी मेरे लायक कोई सेवा हो तो अवश्य मौका देना।
डॉक्टर (रोगी से)– आप क्या काम करते हैं।
रोगी– कब्र खोदने का।

192. मुकेश– यार जीतू, क्या तुम जानते हो कि मैंने झूठ बोलने का रिकार्ड बनाकर अपना नाम गिनीज बुक में लिखवाया है।
जीतू– अच्छा तो झूठ बोलने का कोई नमूना दिखाओ।
मुकेश– अभी तुम क्या सुन रहे थे।

193. डॉक्टर (मरीज से)– कहो अब तबियत कैसी है।
रोगी– अब कुछ आराम है बुखार तो टूट गया। बस पैर में हल्का–सा दर्द है।
डॉक्टर– घबराओ मत पैर भी टूट जाएगा।

194. डॉक्टर (दीपू से)– किसके लिए चश्मा बनवाना चाहते हो ?
दीपू– मास्टर जी के लिए उन्हें मैं गधा दिखाई देता हूँ।

195. शिक्षक– जहाँ वर्षा अधिक होती है वहाँ कौन–सी चीज अधिक पाई जाती है ?
छात्र– जी छाता।

196. एक गप्पी (दूसरे से)– वह देखो, एक अमेरीकन चाँद पर उतर रहा है।
दूसरा गप्पी– क्या खाक देखूं, चश्मा तो मैं चांद पर ही छोड़ आया हूँ।

197. इंस्पेक्टर (ग्रामीण से)– तुम्हारे खोये हुये लड़के ने किस रंग की कमीज पहनी थी।

ग्रामीण- यह मुझसे क्या पूछते हो साहब ? जब लड़का मिले तो खुद ही देख लेना।

198. शिक्षक- बच्चो, भालू के बाल बड़े क्यों होते हैं ?
बच्चे- सर, जंगल में नाई जो नहीं होते।

199. एक कम्पनी के मालिक ने एक लड़के को डांटते हुए कहा-गधे तुम्हें मालूम है झूठ बोलने वालों के साथ कम्पनी क्या सुलूक करती है लड़के ने उत्तर दिया-सेल्स मैन बनाकर शहर भेज देती है।

200. जज (अपराधी से)- तुमने अपराध किया है ?
अपराधी- कह नहीं सकता अभी मैंने वकीलों की बहस नहीं सुनी।

201. पत्नि (पति से)- गर्म मसाले नहीं लाये क्या ?
पति- सारे मसाले तो ठंडे पड़े हैं गर्म कहाँ से लाऊँ।

202. पहला कैदी- तुम जेल में कैसे आये ?
दूसरा- छोटी सी रस्सी चुराने के अपराध में।
पहला- लेकिन ऐसा नहीं हो सकता।
दूसरा- अरे भाई ऐसा ही था लेकिन रस्सी के सिरे पर भैंस भी बंधी हुई थी।

हंसना मना है

आज के मुख्य समाचार इस प्रकार हैं –

एक आदमी पेपर पढ़ रहा था। उसे पेपर की कोई बात अच्छी नहीं लगी। वह चाय के कप में कूंदकर आत्महत्या करने जा रहा था। परन्तु उस आदमी को बचाने के चक्कर में दो आदमी कप में डूबकर मर गये।

एक रिक्शे और साइकिल में टक्कर के कारण 50 आदमी मारे गये और 100 आदमी घायलों को दफना दिया है और मृतकों का इलाज अस्पताल में जारी है। रिक्शा बुरी तरह से ध्वस्त हो गया है, परन्तु साइकिल को कोई हानि नहीं पहुँची।

दिल्ली में रसगुल्ले बरसे, मुम्बई में जलेबियाँ, कोलकाता में बर्फी, चेन्नई में रसमलाई एवं आगरे में पेठा बरसा।

मौसम विभाग के अनुसार पूर्वानुमान है कि देश के बाकी हिस्सों में कुछ न कुछ गिरने की संभावना है इसलिए सभी अपना मुँह खोलकर रखें।

हास्य प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : जब चार औरतें आपस में लड़ रही हों तो हमें क्या करना चाहिए ?

उत्तर : नारि-नारि के युद्ध का मजा दूर से लूट।
जो आ जाये बीच में खोपड़ी जाये फूट॥

प्रश्न : यदि किसी नेता को कुत्ता काट खाए तो ?

उत्तर : कुत्ते को ले जाइये अस्पताल एडवांस, डॉक्टर से लगवाइए चौदह इंजेक्शन, चौदह इंजेक्शन नहीं यदि लगवा पाये तो कुत्ता भी भाषण देकर मर जायेगा।

प्रश्न : भारतीय झंडे में केसरिया रंग हिन्दुओं का, सफेद ईसाइयों का और हरा मुसलमानों का माना जाता है तो सिक्खों का ?

उत्तर : तीन रंग उन तीनों के हैं नीचे लंबा डंडा है। सिक्खों के इस डंडे पर खड़ा देश का झंडा है।

प्रश्न : हमारे देश की धरती हीरे-मोती उगलती है तो जनता भूखी क्यों रोती है ?

उत्तर : किसी-किसी पर बीस साड़ियां, नहीं किसी पर धोती।
हीरे-मोती मंत्री चाबें, जनता भूखी रोती॥

प्रश्न : गरीब की ऊँची से ऊँची पढ़ाई भी बेकार के तूफान से क्यों उड़ जाती है ?

उत्तर : पढ़े लिखे बेकार हैं, मूरख हैं टिपटॉप।
राज्यसभा में घुस रहे, कई अंगूठा छाप॥

एक हास्य-कवि मर गया

एक हास्य-कवि मर गया, मैं उसके लिये चंदा करने गया, लोग बोले-अजीब मसखरा था, जब कफन के लिये पैसे नहीं थे तो क्यूं मरा था? मैंने कहा-क्यूं मजाक करते हो ?

वे बोले-और उसने हमारे साथ क्या-क्या किया था, वह भी तो हमें बेवकूफ बनाता था, डेढ़ घण्टे कविता सुनाता था, उसका गद्य तो अच्छा था, पर कविता के मामले में वह बच्चा था, अब आप भी तो हास्य-रस के हैं, आप कल मरने का वादा करें, आज चंदा हाजिर है बाद में भी मरे तो बंदा हाजिर है।

मैंने कहा-भूल गये वे दिन, जब आप चमचमाती कारों में आते थे, रंग-बिरंगे कपड़े पहनकर, कुर्सियों पर सज जाते थे और वह फटेहाल आदमी, अपनी ऊलजलूल हरकतों से आपको हंसाता था, आपको मनोरंजन देने के लिये, खुद हास्यास्पद बन जाता था, आज जब वह चला गया तो आप आँखें चुरा रहे हैं, पाँच रुपये तक देने में कतरा रहे हैं। एक लाला बोले क्या बताएँ जब देखो कोई न कोई कलाकार मरता ही रहता है। आप यहाँ के सारे कवियों की लिस्ट लाइये और नाम सहित उनकी संख्या बताइये, मैंने कहा-दस वे बोले बस यह सौ का नोट ले जाइये और एक साथ सबको निपटाइये और आइंदा मत आइये।

(1)

फांसी के तख्ते पर खड़े कैदी से जेलर ने कहा
तुम अपनी अंतिम इच्छा बताओ कैदी ने कहा
तुम हमारी जगह पर आ जाओ।

(2)

एक शिक्षक मेरे पास आया
संस्मरण सुनाया अपने विद्यार्थी से
एम. एल. ए. का फुल फार्म पूछा था
विद्यार्थी ने उत्तर दिया माइन्ड लेस एनीमल।

(3)

वे सही मायने में
अवसरवादी हैं लड़की की शादी में
दहेज विरोधी और लड़के की शादी में
दहेज मांगने के आदी हैं।

(4)

सीता आखिर कब तक
अग्निपरीक्षा दोगी
मुझे विश्वास है
रावण की मौत नहीं होगी।

(5)

ऐन वक्त पर गीली माचिस ने
धोका दिया और नववधु को
जलने से बचा लिया।

(6)

न खालिस्तान, न पाकिस्तान
और न की कश्मीर चाहिये
हिंसा में डूबे इस भारत को बस
महावीर चाहिये।

इनकी जिन्दगी आपका फैशन

सुअर का स्वाद

सूअर के बाल उखाडने में भयंकर क्रूरता बरती जाती है। नाना प्रकार के उपयोग में इन बालों को लिया जाता है। परन्तु क्यों? क्या सूअर के बालों के बिना काम नहीं चलता? नगरों में सुअर के वध के दृश्य आसानी से देखे जा सकते हैं। जिन्दा सूअर को हाथ-पैर बांधकर आग की लपटों पर सेका जाता है। किसके लिये? सिर्फ स्वाद के लिये। कैसा क्रूर है यह स्वाद।

हजामत आपकी

गिनी पिग जैसे छोटे से जानवर की खाल को खरोंच कर आफ्टर शेव लोशन का लेप किया जाता है। परीक्षण के रूप में यह पता लगाया जाता है कि यह लोशन आदमियों के गाल पर कहीं फोड़े, खाज खुजली का रिएक्शन न कर दें। अतः गिनी पिग की खाल खरोंची जाती है। एक बार नहीं बार-बार अनेक गिनी-पिग जान से मारे जाते हैं। इस प्रकार आपके लिये आफ्टर शेव लोशन की खातिर।

हजाम आपकी और जान किसी जानवर की।

रेशम का कीड़ा

रेशम तो देखी है पहनी भी होगी रेशम का कीड़ा देखा है, रेशम का धागा प्राप्त करने में इसके कीड़े को जो मरणान्तक पीड़ा का सामना करना पड़ता है उसके बारे में कभी अन्दाज भी लगाया है रेशम के एक कुर्ते की खातिर कितने हजार कीड़ों की जीव हत्या होती है। किस पीड़ा से उन्हें मारा जाता है। रेशम का कीड़ा स्वयं अपने चारों ओर रेशम के धागे को जन्म देता हुआ एक ऐसी गुत्थी सी बना लेता है कि स्वयं उसमें बन्द हो जाता है। एक अवधि के बाद उस गुत्थी को तोड़कर यह कीड़ा बाहर निकल आता है परन्तु रेशम के कारोबार करने वाले तो कीड़े की जान पर सवार हैं। रेशम की गुत्थी को वे गरम पानी में उबालते हैं। कीड़ा मर जाता है। रेशम के तार धागे की तरह अलग हो जाते हैं। आपके रेशमी लिबास की खातिर कीड़ों का काम तमाम होता है। क्या आप ऐसे परिधान पहनकर प्रसन्न हैं-सन्तुष्ट हैं।

बिज्जू का सेन्ट

बिज्जू को सब जानते हैं। यह बिल्ली जैसा छोटा जानवर होता है। इसे भी मनुष्य ने अपना शौक पूरा करने के लिये मारना शुरु कर दिया है। सौन्दर्य-प्रसाधनों में इसका उपयोग होता है। इसे बेंतों से सूंता जाता है ताकि इस ताड़ना से उद्विग्न होकर उसकी यौन ग्रन्थि स्रवित हो, फिर इस स्राव को एक तेज धार वाले चाकू से बड़ी निर्ममता से खरोंच लिया जाता है। यह सुगंधित होता है, अतः कई तरह के सेंट बनाने के काम आता है। क्या जब आप इत्र-सेंट लगायें या सूँघते हैं तब आपकी पीठ पर उन बेंतों के दाग उभरते हैं, जो बिज्जू की पीठ को झेलने होते हैं? इस तरह हर वर्ष हजारों बिज्जू सेंट उत्पादन के लिये मार डाले जाते हैं।

और कछुए भी

पानी के किनारे कुछ ऊंचाई पर जमीन खोदकर कछुए अपना घर बना लेते हैं। जहाँ वे दुनियां से दूर छुप जाते हैं बेचारे कछुए को क्या पता? उनके पांव तले जमीन यकायक सरका दी जाती है। और वे इस प्रकार उल्टे लुढ़क जाते हैं कि सहसा सीधे नहीं हो पाते। उनके नीचे के शरीर के कोमल अंगों का तनिक धूप दिखाकर टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाता है। कारखानों में भेजकर इसमें से एक विशिष्ट तेल निकाला जाता है। जिसका उपयोग प्रसाधन सामग्री के रूप में किया जाता है। इस प्रकार कछुआ समुद्र तट से आपके कमरे में प्रसाधन सामग्री के रूप में पहुँच जाता है।

आपके सौन्दर्य के लिये कितने कछुओं की जान जाती है। प्रतिदिन प्रतिवर्ष।

बन्दर की लिपिस्टिक

दर्जनों बन्दरों को साथ बैठाकर उनके गले में ट्यूब के जरिये अनेक प्रकार के तरल पदार्थ पेट में पहुँचा दिये जाते हैं। वह ऐसे पदार्थ हैं जिन्हें बन्दर कभी नहीं खा सकता जैसे लिपिस्टिक टेलकम या बालों का खिजाब। इस परीक्षण से पता लगाया जाता है। कितनी खुराक खा चुकने पर बन्दर मर जायेंगे। ऐसा जहर पचाकर भी बच जाने वाले बन्दरों का पोस्टमार्टम किया जाता है। महज यह पता करने के लिये कि यह कैसे बच गये? दिन भर के इस प्रयोग के बाद सायं बन्दरों की लाशों को कूड़े की तरह फेंक दिया जाता है। अजीब तमाशा है। असंख्य बन्दर आदमी के हाथों ऐसी यातना पाते हैं।

हंसों आंसू मगरमच्छ के

लोग कहते हैं मगरमच्छ सदा मुँह खोलकर हँसता है लेकिन लोगों की हँसी ज्यादा क्रूर है। मगरमच्छ को पानी से बाहर चालाकी से लाया जाता है और उसे जल विहीन परिस्थिति में छटपटाने को मजबूर किया जाता है ताकि उसकी मौत करीब आती जाए। यकायक उसकी नाक में एक पैना छुरा घोंप दिया जाता है। ताकि उसका जीवन समाप्त हो जाए। उसकी खाल पर बहुत लोग आँख लगाये हुए हैं। क्योंकि उसका उपयोग चमड़े के रूप में महिलाओं के पर्स या सूटकेस आदि बनाने में किया जाता है। क्या मगरमच्छ आँसू बहाता है? कौन किस पर तरस खाता है।

भालू आया भालू आया

गली में भालू का नाच देखा है? क्या आपको पता है कि उस जानवर को यह नाच सिखाने में कितनी यातनाएँ दी जाती हैं? जंगल से पकड़ना भी आसान नहीं है। गड्ढा खोदकर उसमें जा गिरे भालू को लोहे की बेतों से पीटकर शान्त किया जाता है। उसकी नाक में छेद करके कड़ा पहनाया जाता है। गर्म तवे पर उसे खड़ा कर दिया जाता है। बार-बार वह कूदता है। इस प्रकार नाचना सीख जाता है। भालू वाले का पेट पालने के लिये बेचारे जानवर का कितनी यातना भुगतनी पड़ती है। इस जानवर की खाल के ओवरकोट बनाये जाते है। यदि लोगों को गर्म तवे पर नंगे पैर खड़ा किया जाये तो .....?

हिरण की दुर्दशा

कस्तूरी मृग को पकड़ने हेतु ऐसे क्रूर तरीके अपनाये जाते हैं, जिनकी कल्पना भी कठिन है। घास के अन्दर कटीले लोहे के ऐसे जाल बिछाये जाते हैं कि बेचारा हिरण सहसा यो गिरफ्त में आने पर छटपटाता है। लहुलुहान पैर को शिकंजे से निकालने की बराबर चेष्टा करता है। और सिसक कर प्राण त्याग देता है। कस्तूरी प्राप्त करने हेतु कस्तूरी मृग को गोली लगाकर भी उसके प्राणों का हरण कर लिया जाता है। अफ्रीका में सिवेट नामक पशु का तरंग पिंजरे में बन्द करके अधिक मात्रा में कस्तूरी प्राप्त करने हेतु उसके शरीर को निरन्तर 15-20 दिनों तक क्रूरतापूर्वक अनेक प्रकार से पीड़ित करके उसको क्रोधित रखा जाता है। जब भयंकर क्रोध में आ जाता है तब उसका पेट चीरकर उसमें से कस्तूरी निकाल ली जाती है। उस रिक्त स्थान को मोम या मक्खन भरकर पेट सी

दिया जाता है। एक दो माह यही प्रक्रिया अपना कर कस्तूरी निकाली जाती है। यह प्राणी जितना अधिक क्रोधित होता है। उतनी ही अधिक कस्तूरी प्राप्त होती है। कस्तूरी से अनेक दवाईयाँ व इत्र बनाये जाते हैं। हमारे नाशवान शरीर को पुष्ट बनाने व सजाने के लिये होता है। ऐसे लावण्यमयी जानवरों का ऐसी क्रूरता से वध करने का अधिकार आपको किसने दिया।

चीज.....छि.....छि.....

गाय दूध देती है। गाय के बछड़ा होता है। बछड़े के पेट में रेनट नामक पदार्थ पाया जाता है। रेनट प्राप्त करने के लिये बछड़े को मार दिया जाता है। ऐसा चीज अधिक जायकेदार माना जाता है। यद्यपि माइक्रोबायल रेनट भी काम में लाया जा सकता है। जो वनस्पति से बनता है। परन्तु यह तो स्वाद की बात है जिसकी खातिर नवजात बछड़ों का वध किया जाता है। यह वध रेनट की खातिर। आपकी जबान की जायके के लिये।

बछड़े की जिन्दगी और आपका जायका॥

गजराज तक गिरफ्त में

गजराज जैसे विशाल और शक्तिशाली जानवर तक लोगों ने नहीं छोड़ा। जगह-जगह ऐसे फल जंगल में बिखेर दिये जाते हैं। जिन पर विषैले रसायन का लेप पहले ही किया होता है। हाथी उन्हें खाते ही चित हो जाते हैं। आकाश में मंडराते हुए गिद्धों से अन्दाज लगाकर शिकारी वहाँ तक पहुँच जाते हैं। और उन हाथियों के दांत निकालकर बाजार तक ले जाते हैं। हाथियों के दाँत जिनसे बनती हैं अनेक चीजें हाथी दाँत की।

हाथी के दाँत दिखाने के और होते हैं और खाने के और।

यह कहावत यदि मानव समाज पर लागू की जाये तो.....

सांप से प्यार

यह कैसा प्यार है? साँप की खाल की खातिर असंख्य साँपों को पकड़ कर मार डाला जाता है। क्योंकि जिंदा खाल को खींचना सरल होता है, अतः जिंदा साँप की ही खाल उतार ली जाती है। साँप के सिर को कील से पेड़ के तने पर ठोंक दिया जाता है। जिंदा साँप तड़फता रहता है और चाकू की मदद से उसकी खाल जिंदा अवस्था में उतरती रहती है। काम तमाम कर चुकने पर शिकारी थकान दूर करते हुए आनन्द की फुँफकार करता

है।

जहरीला अधिक कौन.....?

यह कैसा सौन्दर्य ?

उसकी आँखें बड़ी-बड़ी और गोल हैं। जैसे कोई तश्तरी है। नादान भाव उसके चेहरे से टपकते रहते हैं, परन्तु लोगों की क्रूर पिपासा के आगे इसकी नादान जिन्दगी कुछ नहीं है। स्लेन्डर-लेरिस नामक छोटा-सा बन्दर भारत में अब बहुत कम संख्या में रह गया है। क्योंकि इसका शिकार अत्यधिक किया जा चुका है। इसकी आँखें बाहर निकाल ली जाती है। इसका दिल बाहर निकाल लिया जाता है। इन दोनों को पीस कर सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री बनाई जाती है।

यह कैसा सौन्दर्य कितने ऐसे जानवरों की मौत से आपका चेहरा मुस्कराता है।

ह्वेल का क्या होगा ?

यह सर्वमान्य सत्य है कि ह्वेल मछली सर्वाधिक बुद्धिमान एवं चेतनशील होती है। इसके शरीर की रचना मानव शरीर जितनी जटिल होती है, परन्तु इसके विरुद्ध जारी लड़ाई में इन दोनों के बीच कोई समानता नहीं है। इस मछली का शिकार ऐसे हारपून ग्रिनेड की मदद से किया जाता है। जो इसके शरीर में आकर फटते हैं। इस मछली को मारना भी कई घण्टों का काम है। मरते समय इसके गले से एक विचित्र सी चीख निकलती है। लेकिन किसे परवाह है? इस मछली का शिकार समुद्र में जाकर जो इसका मांस चाहते हैं। कुछ देश तो इसके तेल का उपयोग मिसाइल के पुरजों को तर एवं कामयाब बनाने में भी लेते हैं। सील और डोल्फिन जैसे समुद्री जानवरों के साथ भी ऐसा व्यवहार होता है। किसी के सिर पर लगातार डंडे मारकर या किसी को जाल में समेट कर तट तक लाया जाता है। उनकी मुलायम खाल के लालच में शिकार जारी है।

खरगोश का क्या कसूर है ?

खरगोश की आँखें किसने फोड़ी। क्यों फोड़ी इस निरीह जानवर का सिर एक शिकंजे में जकड़ दिया जाता है। धातु के एक क्लिप से इसकी आँखें खुली रख दी जाती हैं। सिर धोने के शैम्पू की एक-एक बूंद इसकी आँख में टपकाई जाती है। खरगोश चीत्कार करने लगता है। इसकी आँखों में ऐसी तीखी जलन होती है कि वह शिकंजे से छुटकारा पाने के

लिये अपनी कमर तक तुड़ा बैठता है। आँखों से अविरल आँसू निकलते रहते हैं। आँख से अन्धा हो जाने पर खरगोश शीघ्र मर जाता है। शैम्पू बनाने से पहले उसकी परख करने के लिये उसे खरगोश की आँखों में डाला जाता है। बेचारे जानवर की मौत और आपकी मौज। आपके बालों को मुलायम रखने के लिये कैसा क्रूर व्यवहार इस निरीह जानवर के साथ किया जाता है।

खरगोश कितना प्यारा कितना स्नेहिल और भोला जीव है और मानव समाज.....

नादान कराकुल

मेमने तक को लोगों ने नहीं बक्शा है। कराकुल भेड़ के बाल बड़े घुँघराले और खाल अत्यन्त नरम होती है। मनचले लोग अपने शौक की पूर्ति की लिये इसी खाल के कपड़े या टोपी पहनना चाहते हैं। लेकिन मेमने के पैदा होते ही उसके बालों का मुलायमपना कम हो जाता है। अतः मादा भेड़ को गर्भावस्था में ही बेतों से पीटा जाता है। इस कदर बेतों से उस पर प्रहार किया जाता है कि उसके प्राण-पखेरु उड़ जाय। उसके मरते ही उसके पेट से होने वाले मेमने को निकाला जाता है। क्रूरता की पाशविकता इससे अधिक क्या होगी कि उस मेमने की खाल जिन्दा अवस्था में ही उतार ली जाती है। उसके मरने तक इंतजार नहीं किया जाता है।

शुतुरमुर्ग का थैला

हर छठे माह शुतुरमुर्ग के पंख नोचे जाते हैं क्योंकि लोगों को इस विशालतम पक्षी के पंखों से प्यार है। पंख नोच लिये जाने के बाद इसकी खाल नोची जाती है। खरोंचने और नोंचने का यह क्रम तब तक चलता है,जब तक कि शुतुरमुर्ग के प्राण-पखेरु उड़ न जाये। खाल का थैला बन जाता है और पंख आपके टोप में खोंस लिये जाते हैं।

कैसी है यह शुतुरमुर्ग चाल समाज की.....

कितने बीवरों की खाल से बना है आपका कोट

चूहे जैसा ही जानवर होता है बीवर। इसके शरीर से निकला तेल सौन्दर्य-प्रसाधन सामग्री बनाने में काम आता है। इसकी खाल से कोट बनते हैं। छोटा-सा यह जानवर रुमाल बराबर है। करीब 60 ऐसे जानवरों की खाल से एक व्यक्ति का कोट बनता है। कितना व्यापक वध है यह।

मुक्तक

1. पिटना भी जरुरी है मिटना भी जरुरी है,
क्योंकि जब मिट्टी पिटती है तो गागर बनती है,
जब बूँद मिटती है तो सागर बनती है।

2. श्रमण सभ्यता का रहा,सदा यही परिणाम।
जीवन में बस ज्योति हो,मरने पर निर्वाण॥

3. आओ हम पूजा करें, जिन्दगी महान् है।
संसार की सर्वश्रेष्ठ,रचना इन्सान है॥

4. अंधकार है वहाँ, जहाँ आदित्य नहीं है।
मुर्दा है वह देश, जहाँ साहित्य नहीं है॥

5. कदर कर वक्त की, कि वक्त बड़ा बेजोड़।
वरना जिन्दगी है क्या, एक अंधा मोड़ है।

6. गिरते हैं शह सवार,मैदान ए जंग में।
वो तिफ्ल क्या गिरेंगे, जो घुटनों के बल चले॥

7. इस जहाँ में तो अपना साया भी।
रोशनी साथ हो तो चलता है॥

8. मानव की पूजा कौन करे, मानवता पूजी जाती है।
साधक की पूजा कौन करे, साधकता पूजी जाती है॥

9. दाना गुलो-गुलजार होता है, मिट्टी में मिल जाने के बाद।
रंग लाती है मेंहदी, पत्थर पे पिस जाने के बाद॥

10. नफरत से नफरत मिले, मिले प्यार से प्यार।
जैसा बीज तुम बोओगे, वैसा फल तैयार॥

11. दुश्मनी जमकर करो लेकिन ये गुंजाइश रहे।
जब कभी हम दोस्त बन जायें तो शर्मिंदा न होना पड़े॥

12. हम अंधेरे पर क्यों झल्लाए।
अच्छा हो एक, दीप जलाएँ॥

13. उम्मीद वक्त का, सबसे बड़ा सहारा है।
अगर हौसला हो, हर मौज में किनारा है॥

14. चेहरे के ये धब्बे हैं, जरा गौर से देखिए।
आइना ही क्यों साफ किए जा रहे हैं॥

15. दुनिया में बहुत कमाया, क्या हीरा क्या मोती।
मगर क्या करें यारो, कफन में जेब नहीं होती।

16. मौत के डर से नाहक परेशान हैं।
आप जिन्दा कहाँ हैं कि मर जायेंगे॥

17. लक्ष्य न ओझल होने पाए, कदम मिलाकर चल।
मंजिल तेरे पग चूमेगी, आज नहीं तो कल॥

18. जो तुमसे झुककर मिला होगा।
निश्चय ही वह तुमसे, बड़ा आदमी होगा॥

19. मिट जाते हैं औरों को मिटाने वाले।
अरे लाश कब रोती है, रोते हैं जलाने वाले॥

20. मरने के बाद एक और गुनाह करूँगा।
लोग पैदल चलेंगे मैं कांधों पर चलूँगा।

21. हैं अजब ये जिंदगी के रास्ते।
कौन ठहरा है किसी के वास्ते॥

23. मुस्कुरा के रंजोगम पीना आ गया।
ये हकीकत है यारो उसे जीना आ गया॥

24. सौ यत्न कम हैं जिंदगी बनाने को।
एक भूल काफी है जिंदगी मिटाने को॥

25. खुद जिन्हें यकीं नहीं होता अपनी मंजिलों का।
मील का पत्थर उन्हें क्या रास्ता दिखायेगा॥

26. जैसा दर्द हो वैसा मंजर होता है।
मौसम तो इन्सान के अंदर होगा।

27. तुम तो माफी दे दोगे हर बार गुनाहों की।
मगर हर बार गुनाह करना हमें गँवारा नहीं॥

28. जिन्दगियों के मेले कम न होंगे।
अफसोस तो ये है कि इक दिन हम न होंगे॥

29. कोई हंस के मरा कोई रोके मरा।
जिंदगी पाई उसने जो कुछ किसी का होके मरा॥

30. जिस पर जो गुजरी है उसे भूल जाना चाहिए।
छोटी-सी जिन्दगी है सदा मुस्कराना चाहिए॥

31. कुछ लोगों की कुछ बातों में, बस अन्तर इतना होता है।
कुछ दिल में उतर जाते हैं, कुछ दिल से उतर जाते हैं॥

32. कभी खुशी कभी गम, जिन्दगी जिसका नाम है।
हँस के कहो तो ये है सुबह, रोके कहो तो ये शाम है॥

33. आज वो काबिल हुए जो कभी काबिल न थे।
मंजिल उनको मिली जो दौड़ में शामिल न थे॥

34. उन्नति के मार्ग में बाधाएँ आयेंगी।
मुलाकात उनसे कुछ देकर जायेंगी॥

35. जिन्दगी की डायरी में यह बात लिख लीजिए।
कि सफर लम्बा है मुकाम मत कीजिए॥

36. रास्तों के राहगीरों से रिस्ते हम बनाते नहीं।
मालूम है साथ चलते वो मगर बदलते नहीं॥

37. रास्ता मिला है तो सफर मंजिल की करो।
रास्ते में पड़े रहना कचड़े की निशानी है॥

38. नहीं जरूरत बन्दूकों, बमों और हथियारों की।
आवश्यकता आज हमें है सद्भावना सद्विचारों की॥

39. गुजरते वक्त के बुझते हुए चिरागों से।
नये चिराग जलाओ तो कोई बात बने॥

40. इरादे बुझदिलों के हमेशा सर्द होते हैं।
मुसीबत उन पर आती है जो सच्चे मर्द होते हैं॥

41. एक आदमी की बड़ी कद्र है मेरे दिल में।
भला तो वो भी नहीं है पर बुरा कम है॥

42. जिन्दगी ऐसी बना जिन्दा रहे दिलशाद तू।
तू न हो दुनिया में तो दुनिया को याद आये तू॥

43. एक न एक शमा अंधेरे में जलाये रखना।
सबेरा होने को है हौसला बनाये रखना॥

44. कौन कहता है कि आसमान में सुराख नहीं हो सकता।
एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो॥

45. शवे गम के आँसुओं की, बस इतनी कहानी है।
जो अटक गया वह मोती है, जो टपक गया वह पानी है॥

46. सफलता के लिए मिलकर, सभी को काम करना है।
हमें आकाश से ऊँचा, वतन का नाम करना है॥

47. हमें अपनों ने लूटा, गैरों में कहाँ दम था।
मेरी कश्ती वहाँ डूबी, जहाँ पानी कम था॥

48. जब लगे कि हमारे ईर्षालु बढ़ रहे हैं तो।
मानना कि हम मार्ग में सफल हो रहे हैं॥

49. हर मुस्काती सुबह शाम लिये होती है।
जीवन की पीठ पर मौत लिखी होती है॥

50. औरों के घर की धूप उसे क्यों पसंद हो।
बेची है रोशनी जिसने अपने मकान की॥

51. पीर पराई देखकर जिसकी आँखों में नीर बहता है।
मेरी दृष्टि में उसके भीतर महावीर रहता है॥

52. खाँसों की बस्ती में मौत का रहवास है।
जिन्दगी तो केवल एक विश्वास है॥

53. नजरें तेरी बदली तो नजारे बदल गये।
किश्ती ने बदला रुख तो नजारे बदल गये॥

54. मत रूप निहारो दर्पण में, दर्पण मैला हो जायेगा।
निज रूप निहारो अन्तर में, अन्तर उजला हो जायेगा॥

55. हर उलझन सुलझन बन सकती है हम उलझना छोड़ दें।
हर समस्या समाधान बन सकती है निज से नाता जोड़ लें॥

1. धर्म के नाम पर हमको अभी मरना नहीं आता ,
सुदर्शन की तरह हमको सूली चढ़ना नहीं आता।
मुसीबत की वजह बस एक केवल है यही चेतन,
हमें सुनना तो आता है मगर करना नहीं आता॥

2. सच है सूरि शांतिसागर संयम का रूप नहीं धरते।
जो अपनी इस काया से युग का कायाकल्प नहीं करते॥
मानवता मान नहीं पाती यदि जीवित मंत्र नहीं होते।
यह भारत गारत बन जाता यदि ऐसे संत नहीं होते॥

4. गमों की आँच पे, आँसू उबालकर देखो।
बनेंगे रंग, किसी पर गलकर देखो।
तुम्हारे दिल की चुभन भी जरूर कम होगी मित्रो।
किसी के पाँव से काँटा निकाल कर तो देखो॥

5. मंजिल के प्रेमी सफर में नहीं सोते।
दर्द मुसीबत में अपनी हिम्मत नहीं खोते॥
कष्ट तो आते हैं सबके जीवन में मगर।
बहादुरों की आँखों में आँसू नहीं होते॥

6. अगर हमें रोशनी को रोशनी से भरना है।
तो अंधेरों की बिल्कुल चर्चा ही नहीं करना है॥
पाप सदा जीता है धर्म के ही सहारे।
वरना उसको अपनी मौत ही मरना पड़ता है॥

7. सूखे हैं नयन पर वे पत्थर नहीं हैं।
कुछ प्रश्न हैं जिनके उत्तर नहीं हैं॥
उगलियाँ यूँ न किसी पर उठाया करो।
वे लोग मौन हैं निरुत्तर नहीं।

8. इतिहास कागज नहीं पुरुषों की थाती है।
गुमराही जनता के लिए दिये की बाती है॥
अतीत के आदर्शों को भूलाना ठीक नहीं।
तीर्थंकरों के पथ पर चलना हमारी परिपाटी है॥

9. आँखों में यदि आस है तो आसमान तुमसे दूर नहीं।
पंखों में यदि उड़ान है तो आसमान तुमसे दूर नहीं॥
लहराती हुई ध्वजा ने हमको बताया।
कि भक्ति में यदि जान है तो भगवान तुमसे दूर नहीं॥

10. अप्रसिद्ध होने में ही आराम है।
अपनी ही सुबह और अपनी ही शाम है॥
सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं।
मेरी कोशिश है कि सूरत बदलनी चाहिए॥

11. कल की चिंता में आज को खराब मत कीजिये।
गम मिले या खुशी उसे मंजूर कीजिए॥
कल क्या होगा कल ही जाने कल ही देखा जायेगा।
क्या कपड़ों से ढक करके सूर्योदय को रोका जायेगा॥

12. चेहरे पे अगर मुस्कान है, तो इंसान तुमसे दूर नहीं।
पंखों में अगर उड़ान है, तो आसमान तुमसे दूर नहीं॥
शिखर पर बैठे पंछी ने यह गीत गाया।
श्रद्धा में अगर जान है, तो भगवान तुमसे दूर नहीं॥

13. अदालत नहीं जाना तो गम खाना चाहिए।
डॉक्टर के पास नहीं जाना तो कम खाना चाहिए।
यदि हमें ऊपर उठना है तो नम जाना चाहिए।
यदि स्वयं को पाना है तो स्वयं में रम जाना चाहिए॥

14. औरों को बदलने के लिए, खुद को बदलना सीखो।
औरों का बनने के लिए, सबसे मिलना सीखो॥
उजालों की परिभाषा न मिलेगी किताबों में तुम्हें।
उसे पाने के लिए खुद दीपक बन जलना सीखो॥

15. प्रभु देव तुम्हारे पवित्र मुख से निःसृत जो शीतल वाणी।
जग-जन मन के मल को धोती अतः कहाती जिनवाणी॥
जयवन्तो माँ जग में तब तक जब तक सूरज चाँद रहे।
शीश नवाते कर्म हरो माँ अब तक हम विषयान्ध रहे॥

16. क्रम उद्घाटित ऋषभदेव से वे अगाध करुणासागर हैं।
अनुशासन प्रिय रामचन्द्र जी गिरधारी नटवर सागर हैं॥
महावीर व बुद्ध तपस्वी ममता-समता की गागर हैं।
ये सब तो इतिहास हो गये वर्तमान विद्यासागर हैं॥

17. रोशनी उनकी दीप उनका मैं जल रहा हूँ।
रास्ते उनके सहारा उनका मैं चल रहा हूँ॥
शब्द उनके भाव उनके मैं लिख रहा हूँ।
प्राण उनके हर समर्पित साँस उनकी मैं जी रहा हूँ॥

18. कुन्दकुन्द के समयसार का सार हमें जो बता रहे।
समन्तभद्र-सा डंका घर-घर द्वार-द्वार जो बजा रहे॥
भोले-भाले जन को हैं जो चलते-फिरते धाम।
ऐसे गुरु विद्यासिन्धु को मेरा शत-शत बार प्रणाम॥

19. ये विद्या के सागर हैं जग का कल्याण करेंगे।
हमको विश्वास है ये नवनिर्माण करेंगे॥
जब-जब पाप धरा पर होगा रावण होगें भू पर।
तब-तब आप धरा पर आकर प्रभु श्रीराम बनेंगे॥

20. न पूछो कि मेरी मंजिल कहाँ है।
अभी तो सफर का इरादा किया है॥
न हारुँगा हौसला उम्र भर।
मैंने किसी से नहीं खुद से वादा किया है॥

21. समय का मरहम हर घाव को भर देता है।
रहम से सहने वाला हर जुल्म को सह लेता है॥
संयम को धर लेने वाला सत्य को पा जाता है।
समता को पाने वाला संसार से तर जाता है॥

22. भूल कर परमात्मा को जी रहा है आदमी।
आँख होकर अंधा बन जी रहा है आदमी॥
कितना सरल है परमात्मा को पाने का मार्ग।
कठिन समझ परमात्मा से भाग रहा है आदमी।

23. शास्त्रों के अक्षर अरिहन्त की आवाज हैं।
पढ़े जो शास्त्रों को वह विकसित समाज है॥
चिन्तन जीवन शैली है, चिन्तन जीवन धारा।
जहाँ चिन्तन नहीं वहाँ है जीवन अंधियारा॥
दुर्ध्यान से बचने का एक ही उपाय है।
कीजिए सुबह शाम शास्त्रों का स्वाध्याय है॥

24. वह फूल नहीं वह कंटक है जिसमें सौरभ का सार नहीं।
मत कहो उसे हरगिज वीणा जिसमें बजती झंकार नहीं॥
वह जीवित नहीं मरा हुआ है जो करता पर उपकार नहीं।
वह हृदय नहीं पत्थर है जिसमें जिनधर्म से प्यार नहीं॥

25. कुछ गम ऐसे होते हैं जो बताये नहीं जाते।
कुछ आँसू ऐसे होते हैं जो बहाये नहीं जाते॥

कुछ बातें ऐसी होती है जो बतायी नहीं जाती।
कुछ यादें ऐसी होती हैं जो भुलाई नहीं जाती॥

26. जब मैं आँख बन्द करके मौन शान्त बैठता हूँ।
तब लोग ये समझते हैं कि मैं किसी गम में बैठा हूँ॥
काश लोग मेरे अन्दर झांकने की कोशिश करते।
मैं गम में नहीं किन्तु अपने प्रभु से मिलने बैठा हूँ॥

27. यहाँ हर श्वांस पर लगता किराया वक्त का भारी।
नशे में ही न कट जाये कहीं यह जिंदगी सारी॥
धरम के नाम पर धोखा हजारों लोग खाते हैं।
उन्हें ही चैन मिलता,जो स्वयं को जान पाते हैं॥

28. हजारों फूल कम हैं एक दुल्हन ही सजाने को।
एक फूल काफी है एक अर्थी सजाने को॥
हजार सुख कम हैं एक गम भुलाने को।
एक गम काफी है जिन्दगी भर रुलाने को॥

29. काँटों में फूल की तरह खिले वही जीवन है।
पत्थर सहकर भी वृक्ष की तरह फले वही जीवन है॥
यूँ तो जीते हैं दुनिया में सभी।
तूफानों में भी दीप बनकर जले वही जीवन है॥

30. किसी की आस पे जीने में क्या रक्खा है।
किसी को दर्दे दिल सुनाने में क्या रक्खा है॥
क्या आदत सी पड़ गई है उदास रहने की।
वरना उदास रहने में क्या रक्खा है॥

31. गर अम्बर न होगा तो ये सितारे क्या करेंगे।
समुन्दर न होगा तो ये किनारे क्या करेंगे॥

गर दिल के अन्दर श्रद्धा की ज्योति न जली तो।
ये मन्दिर, ये मस्जिद, ये गुरुद्वारे क्या करेंगे॥

32. किसी की बदनसीबी किसी की खुशनसीबी है।
बरतना सावधानी तुम उसी से जो करीबी है॥
किसी का मौन हो जाना किसी का मंद मुस्काना।
लिये हैं राज अपने में कहीं इनमें न फँस जाना॥

33. बिगड़े थोड़ी बात तो जरा मुस्करा दो।
कुछ लगे बुरा तुम्हें तो हँसकर उसे भुला दो॥
हर मुश्किल मेहमान हुआ करती है बंधुओ।
जरा हँस दो तो मुश्किलें आसान हुआ करती हैं॥

34. आदमी के आदमी से छल नहीं होंगे।
जो अंधेरे आज सच हैं कल नहीं होंगे॥
हमें ही सीखना होगा सम्हल कर चलना।
जिंदगी के रास्ते समतल नहीं होंगे॥
समझ का विस्तार ही सुलझायेगा इन्हें।
अपने सवाल दूसरों से हल नहीं होंगे॥

35. गहन सघन मोहक बनकर मुझको आज बुलाते हैं।
किन्तु किये जो वादे मैंने याद मुझे आ आते हैं॥
अभी कहाँ आराम बदा है, मूक निमंत्रण छलना है।
अभी तो मुझको मीलों मुझको मुझको मीलों चलना है॥

36. परखना मत परखने से कोई अपना नहीं रहता।
किसी भी आइने में देर तक चेहरा नहीं रहता॥
बड़े लोगों से जब भी मिलो कुछ फासला रखना।
क्योंकि दरिया जब समुन्दर से मिलता है दरिया नहीं रहता॥

37. हम चले देवता कहलाने पर मानव भी कहला न सके।
हम चले विश्वविजयी बनने पर विजय स्वयं पर पा न सके॥
हम चाहते हैं बस कैसे भी जल्दी से भगवान बनें।
पर नहीं चाहते हैं हम कि पहले इससे इन्सान बनें॥

38. पत्थर अहं का क्या करें गलता नहीं।
सब दिये जलते मगर मन का दिया जलता नहीं॥
खोजते ही खोजते ढल जाती है जीवन की शाम।
सबका पता मिलता मगर अपना पता मिलता नहीं॥

39. जो होना था घटित हुआ अब रोने में क्या रक्खा है।
जो अपना नहीं उसे संजोने में क्या रक्खा है॥
सम्हालें अपने आपको चलें आदर्शों के पथ पर।
मुड़कर बार-बार पीछे देखने में अब क्या रक्खा है॥

40. भव-भव में अति दुर्लभ ऐसा संयम तुमने पाया है।
राग त्याग वैराग्य है धारा छोड़ी सारी जग माया है॥
आनन्द रस से भर निज की गागर पर की न आस लगाना है।
पर तो पर कर्मों की धारा छोड़ स्वयं को पाना है॥

41. यूँ तो दुनिया में कितने लोग जिया करते हैं।
जीने से नहीं सार फिर भी जिया करते हैं॥
जीना और जीवन तो उन्हीं का सार्थक है मेरे बन्धु।
जो धर्म के साथ जीते और धर्म के साथ मरते हैं॥

42. कमल खिलता है दिन में कुमुदनी रात में खिलती।
सूर्योदय होने पर खुशी प्रभात से मिलती॥
यह सब खुशियाँ तो नष्ट प्रायः हैं मेरे बन्धुओ।
जीवन की सच्ची खुशी तो गुरु के चरणों में ही मिलती है॥

मुक्तक

1.

खींच पाओ तो मधुर व्यवहार से खींचो।
सींच पाओ तो हृदय की धार से सींचो॥
तलवार की जीत से तो हार अच्छी है।
जीत पाओ तो मनुष्य को प्यार से जीतो॥

2.

अफसोस मूढ़ मन तू मुद्दत से सो रहा।
सोचा ये न कि घर में अंधेरा हो रहा॥
चौरासी लाख योनी तय कर मुश्किल से।
जिस घर को तूने ढूंढा उस घर को खो रहा॥

3.

जब अपना मन पवित्र होता है।
हर चेहरे पर अपना चित्र होता है॥
फिर दुनिया में तुम कहीं भी चले जाओ।
जो मिलता है अपना ही मित्र होता है॥

4.

पुरुषार्थ हैवान को इन्सान बना देता है।
संघर्ष तो जीवन को महान् बना देता है॥
पुरुषार्थ शिल्पी का अरे कितना अनोखा है।
पुरुषार्थ पाषाण को भगवान बना देता है॥

5.

कमान से छूटा तीर कभी वापस नहीं आता।
आँखों से गिरा नीर कभी वापस नहीं आता॥
समय सोने से भी अधिक मँहगा है साथियो।
बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता॥

6.

जिनकी मुट्ठी में पल नहीं होते।
उनके कभी कल नहीं होते॥
दर्द अपना बाँटने की न सोच।
लोग इतने सरल नहीं होते॥

7.

रोने से कम होता है ये गम।
तो दुःख में बेशक रो लो तुम॥
किन्तु मुस्करा कर जीने वालों को।
सुखी मत समझ लेना तुम॥

8.

कंटकों में राह बनाना सीखो।
संकटों में रहकर मुस्कराना सीखो॥
सचमुच जिंदगी सुखमय लगेगी।
बस दूसरों के काम आना सीखो॥

9.

कल का दिन देखा किसने।
आज का दिन खोय क्यों ?
जिन घड़ियों में हँस सकते हैं।
उन घड़ियों में रोय क्यों॥

10.

सैकड़ों दर्दमंद मिलते हैं।
काम के लोग चन्द मिलते हैं॥
जब जरूरत का वक्त आता है।
तो सबके दरवाजे बंद मिलते हैं॥

मुक्तक

1.

होके मायूस न यूं शाम से ढलते रहिये।
जिन्दगी भोर है सूरज से निकलते रहिये॥
एक ही छाँव में ठहरोगे तो थक जाओगे।
धीरे-धीरे ही सही राह पर चलते रहिये॥

2.

वो इस तरह से उठे कि आसमान बन गये।
सारे जहाँ के वास्ते ईमान बन गये॥
हम उनके साथ रहे पर इन्सान भी न बन पाये।
वो हमारे बीच रहकर भी भगवान बन गये॥

3.

गतिशील करो चरणों को मंजिल पास नहीं है।
कालचक्र गतिमान किसी का दास नहीं है॥
जीवन की हर साँस को सार्थक कर डालो।
क्योंकि साँसों का पल भर भी विश्वास नहीं है॥

4.

अगर तुम हँसोगे तो हँस देगी दुनियाँ।
अगर तुम लुटे तो हँस देगी दुनियाँ॥
छुपा लो जख्म पोंछ डालो आँसू।
अगर देख लेगी तो हँस देगी दुनिया॥

5.

आदर्श जिनका इतिहास में दर्ज है।
अनुकरण करें हम उनका हमारा फर्ज है॥
विरक्ति हो भावों में तो जीने का अर्थ है।
दौलत इकट्ठी करना दुनिया में व्यर्थ है॥

6.

जब तक हौसला नहीं होगा।
एक भी फैसला नहीं होगा॥
सभी अपने भले की सोचेंगे।
तो किसी का भला नहीं होगा॥

7.

हर गीत के पीछे साज होता है।
हर बात के पीछे राज होता है॥
बदनामी से मत डरना मेरे भाई।
चमकते चाँद में भी दाग होता है॥

8.

वैसे तो जिन्दगी बड़ी खूबसूरत है।
पर इसे समझने की जरूरत है॥
ना समझे तो शैतान का घर।
समझे तो भगवान की मूरत है॥

9.

न किश्ती के डूबने का गम था।
न खुद के डूबने का गम था॥
गम तो इस बात का था।
जहाँ हम डूबे वहाँ पानी कम था॥

10.

राम को खोजने हम कहाँ जायेंगे।
बिना ठिकाने के उनको कहाँ पायेंगे॥
करो भक्ति तुम शबरी जैसी बंधुओ।
राम तुम्हारे द्वार स्वयं ही चले आयेंगे॥

काव्य-पाठ

छोड़ो भी ये टी.वी. धर्म हमको सिखाओ

(तर्ज :- दादी अम्मा-दादी अम्मा मान जाओ)

(1)

मम्मी -पापा, मम्मी-पापा, मान जाओ ।

छोड़ो भी ये टी.वी. धर्म हमको सिखाओ। मम्मी-पापा .....

टी.वी. ने हमारा जीवन नाश किया है।

छीना सुख शान्ति धन दास किया है॥

इसको समझ लो जीवन न गंवाओ। मम्मी-पापा .....

छोड़ो भी ये टी.वी. धर्म हमको सिखाओ।

मम्मी -पापा, मम्मी -पापा, मान जाओ। मम्मी-पापा .....

(2)

दादी-दादा, दादी-दादा, मान जाओ।

छोड़ो भी ये टी.वी. कथा हमको सुनाओ । दादी-दादा, ...

बुढ़ापे में तुम्हें क्या रोग लगा ये ?

देखो सदा टी.वी. तुम धर्म भुलाये॥

माला फेरो, ग्रन्थ पढ़ो पुण्य तो कमाओ। दादी-दादा, ...

छोड़ो भी ये टी.वी. कथा हमको सुनाओ।

दादी-दादा, दादी-दादा, मान जाओ। दादी-दादा, ...

(3)

भैय्या-भाभी, भैय्या-भाभी, मान जाओ।

छोड़ो भी ये टी.वी. तीर्थ हमको कराओ। भैय्या-भाभी .....

देखो सारी दुनिया बैठे-बैठे तुम।

जाओ न कराओ कभी तीरथ तुम॥

बैठे-बैठे यूँ न जवानी गंवाओ। भैय्या-भाभी .....

छोड़ो भी ये टी.वी. तीर्थ हमको कराओ।

भैय्या-भाभी, भैय्या-भाभी, मान जाओ। भैय्या-भाभी .....

(4)

बहिना-भैय्या, बहिना-भैय्या, मान जाओ।

छोड़ो भी ये टी.वी.धर्म ज्ञान तो बढ़ाओ॥ बहिना-भैय्या.....

त्याग दिये तुमने सारे अच्छे-अच्छे गुण।

भूल गये सेवा करना, पाके दुर्गुण॥

मर्यादा समझो अब पाठशाला जाओ। बहिना-भैय्या .....

छोड़ो भी ये टी.वी.धर्म ज्ञान तो बढ़ाओ॥

बहिना-भैय्या, बहिना-भैय्या, मान जाओ। बहिना-भैय्या.....

(5)

नानी-नाना, नानी-नाना मान जाओ।

छोड़ो भी ये टी.वी.साधु दर्श तो कराओ। नानी-नाना .....

टी.वी. सदा देखो तो ईनाम मिलेगा।

मोटा चश्मा पत्थर सा निरदाम मिलेगा॥

फोड़ो नहीं आँखें इन्हें सफल बनाओ। नानी-नाना .....

छोड़ो भी ये टी.वी.साधु दर्श तो कराओ।

नानी-ना ना, नानी-नाना मान जाओ। नानी-नाना .....

क्यों बहुत देखकर टी.व्ही.....?

(तर्ज :- ऐ मेरे वतन के लोगो .....)

ऐ पढ़े लिखे सब लोगों, तुम करते क्यों नादानी ?
क्यों बहुत देखकर टी.वी.? जीवन में करते हानि॥ ध्रुव पद । .....
दोषों का यही खजाना, रोगों का बड़ा घराना।
धन स्वास्थ्य सभी यह नाशे, इससे तू क्यों अनजाना ?।
यह तेरा सब कुछ लूटे, क्यों ना, समझे तू प्राणी ?। क्यों बहुत .....(1)

यह मर्यादा सब तोड़े, पर सेवा से मुख मोड़े।
परतन्त्र करे यह सबको, यह सपने सारे तोड़े।
यह जहर घोल जीवन में, करता सब पर मनमानी॥ क्यों बहुत .....(2)

गुण भूल गये सब बच्चे, दुर्गुण को जो अपनाकर।
है दुखी जगत यह सारा, जीवन में शांति गंवाकर।
यह घर को नरक बनाकर, खुशियाँ करता वीरानी। क्यों बहुत .....(3)

यह अन्धा तुम्हें बनाकर, छीने सब यही सहारा ।
भव दुख में यहीं डुबाकर, दिलवाता नहीं किनारा।
ये जीवन की बगिया में, काँटों की करता बोनी॥ क्यों बहुत .....(4)

तू भूल गया बल अपना, है तीन लोक का स्वामी।
आदर्श बना टी.वी.को, नित करता रहा गुलामी।
वैभव अपना खोया तू, शिक्षा जब इसकी मानी॥ क्यों बहुत .....(5)

ना सदाचार जीवन में, ना धर्मज्ञान है कोई।
भोगों की आग भयंकर, जिसमें यह पीढ़ी खोई।
ओ जागो मेरे मित्रो, क्यों करते नष्ट जवानी ?। क्यों बहुत.....(6)

हाँ गुरु प्रभू दर्शन को, है पास समय ना तेरे।
टी.वी.को सदा समर्पित, तू है दिन रात सबेरे।
तू कैसा पागल है रे ? तू भूल गया गुरुवाणी ॥ क्यों बहुत.....(7)

तू पूजा भोजन करना, सब भूल गया करतब को।
तू पढ़ना लिखना भूला, तू भूल गया सतपथ को।
तू भोजन है टी.वी.का, वह भूखी है शैतानी॥ क्यों बहुत .....(8)

हाँ जिससे मिलते गुण हों, या सेवा शिक्षा अच्छी।
जो मर्यादा सिखलाये, या राह बताये सच्ची।
सो थोड़ी टी.वी.देखो, जो हो 'सुव्रत' की दानी। क्यों बहुत .....(9)

क्यों बहुत देखकर टी.वी.जीवन में करते हानि।
ऐ पढ़े लिखे सब लोगों, तुम करते क्यों नादानी ? क्यों बहुत .....

जीवन के रंग

जितना जिसने पुण्य किया है, उतना उसको मिलता है।
फिर देख पराई रोटी को, तू क्यों फोकट में जलता है।
समय से पहले भाग्य से ज्यादा, नहीं किसी को मिलता है।
जो जैसा-जैसा करता है, वह वैसा-वैसा भरता है।
रूप-रंग, धन-दौलत सब कुछ, अपने कर्मों से मिलता है।
सत्कर्म किए होंगे गर तुमने तो ही नरभव मिलता है।
पेड़ बबूल का कांटे देता, आम कभी न लगता है।
जीवन की ये राह कठिन है, सब कुछ सहना पड़ता है।
गर किसी राह में फूल मिलें तो, भटक न जाना ओ राही।
थोड़ा-थोड़ा तो सबको ही, काँटो पर चलना पड़ता है।

फोड़ फटाखे, जला फटाखे, क्या पाओगे तुम प्यारे ?

जरा सोच लो, जरा समझ लो, भ्रात बहिन बच्चे सारे।
फोड़ फटाखे, जला फटाखे, क्या पाओगे तुम प्यारे ?

अगर फटाखे तुमने फोड़े, तो प्रभु वाणी ना पाली।
और सन्त उपदेशों की भी, पूर्ण अवज्ञा कर डाली॥
बहुत पाप का बंधन करके, बहुत जीव तुमने मारे ।
फोड़ फटाखे जला पटाखे, क्या पाओगे तुम प्यारे ?॥ 1॥

हुयी गंदगी जगह-जगह पर, हुआ प्रदूषित जग सारा।
बुरा असर आँखों पर पड़कर, बिगड़े तन स्वास्थ्य हमारा॥
हुआ समय बर्बाद शांति सुख, संकट में प्राण हमारे।
फोड़ फटाखे जला पटाखे, क्या पाओगे तुम प्यारे ?॥ 2॥

हुयी संपदा राख हमारी, जड़ चेतन की बर्बादी।
जीवन भी परतन्त्र हुआ सब, और छिनी सब आजादी॥
गया धर्मधन यौवन जीवन, तू क्यों ना इसे विचारे ?
फोड़ फटाखे जला पटाखे, क्या पाओगे तुम प्यारे ?॥ 3॥

फोड़ो नहीं फटाखे यारो, लाभ बहुत सारे होंगे।
दान धर्म प्राणी की करुणा, सद्गुण सब विकसित होंगे॥
दीवाली खुशहाल बने वा, मंगलमय जीवन सारे।
फोड़ फटाखे जला पटाखे, क्या पाओगे तुम प्यारे ?॥ 4॥

दीप जलाओ शुभ खुशियों के, नहीं फटाखे तुम फोड़ो।
नहीं किसी का हृदय जलाओ, दया अहिंसा तुम ओड़ो।
हो उजियारा मन मंदिर में दूर हटे सब अंधयारे।
फोड़ फटाखे जला पटाखे, क्या पाओगे तुम प्यारे ?॥ 5॥

जरा सोच लो, जरा समझ लो, भ्रात बहिन बच्चे सारे।

संस्कार

अब तुम इतने बड़े हुए, अपने पैरों पर खड़े हुए।
कोई तुम्हारा क्या कर लेता,अगर नियम तुम नहीं पालते॥
पानी पीते बिना छना और बिलछानी भी नहीं डालते।
तुम दिन में या कि रात में खाते, मन्दिर या मदिरालय जाते॥
तुमको रोक रहा था कौन, तुम जो जिनवाणी न गाते।
ये जो सन्त तुम्हें न भाते, तुम दर्शन करने न आते॥
दुनियां में है बहुत तमाशे, तुम जो उनको देखने जाते।
पर कुछ ना कुछ तो है ऐसा, वरना तुम यहाँ पर कभी न आते॥
धर्म अहिंसा धर्म अहिंसा, क्यों ये अलख जगाते हो।
और निर्यात माँस का बन्द करो, क्यों नारे खूब लगाते हो॥
ये संस्कार ही हैं तुम्हारे, जो तुम चींटी नहीं मार पाते।
ये संस्कार अगर जो न होते, तुम हाथी मार के खा जाते॥
ये चार लाइन के द्वारा सुनना, तुमको हम बतलाते हैं।
तुम जरा ध्यान से सुन लेना, संस्कार कहाँ से आते हैं॥
शुभ विचार रख कर जिस माँ ने, जो शिशु गर्भ में पाला हो।
वो शिशु धर्म रखवाला होगा, गोरा हो या काला हो॥
जब शिशु गर्भ में और माँ का मन, मद्य माँस में डोलेगा।
तो शिशु नियम से बड़े न होकर, बूचड़खाने खोलेगा॥
जो भी माता बालक को अपने, जिनदर्शन नित करवायेगी।

वह माता इस बालक के कारण, इस जग में पूजी जायेगी॥
वह शिशु गर्भ में जो मातायें, चौपाटी पर जाती हैं।
और पांव भाजी चाट पकौड़े, चौपाटी पर खाती हैं।।
वे मातायें औलाद का जीवन चौपट कर जाती हैं॥
अभिमन्यु को गर्भ में सोचो कैसे कुछ दिख गया होगा।
भेदन करना चक्र व्यूह का कैसे वह सीख गया होगा॥
कुछ सिद्धों की लोरी माँ से, जो कुन्दकुन्द ना सुन पाते।
समयसार के ताने बाने, वो तीन काल ना बुन पाते॥
जो मात-पिता बालक को अपने, तीर्थ नहीं करवायेंगे।
वे अन्त समय में पुत्र के अपने ये जवाब तो पायेंगे॥
ये सोला-फोला चौका-वौका, फ्लेट में मेरे नहीं करो।
करना ही है अगर तुम्हें जाकर कहीं और मरो॥
ये पूजा करना मन्दिर जाना, अपना अपने पास रखो।
और हम तीरथ तुमको करवायें, हमसे तुम ना ये आस रखो॥
साफ-साफ कह देते हैं, मुझे धर्म नहीं भाते हैं।
साफ-साफ कह देते हैं, मुझे तीर्थ नहीं भाते हैं।
चलना है तो चलो साथ में, हम पिक्चर ले जाते हैं॥
जब पूत कपूत बना यारो, पिता सोच-सोच ऐसे रोता।
हमने बीज बबूल का बोया, तो फल आम का कैसे मिलता॥
सुसंस्कार के अभाव में यारो, कुछ बेटा बेटी ऐसे होते हैं।
जो खानदान की इज्जत को बीच बाजार में धोते हैं॥
श्रीमति जी के सोचो लोगों कैसे भाव रहे होंगे।

और मलप्पा जी ने भी तो यारो कुछ ऐसे भाव भाये होंगे।
तब जाके ये भगवान हमारे माता के गर्भ में फिर आये होंगे॥
जो संस्कार सती के न होते, तो छोड़ राम को वो जाती।
और रामायण न होती तुलसी की, और सीता रावण की हो जाती।।
फिर तो इस जग में यारो, सीता का नाम नहीं रहता।
और देख एक दूजे को कोई सीताराम नहीं कहता।।
राम वनवास बाद में जाते, पहले कैकयी में आग लगाते।
या रावण ने हर ली थी सीता, तो कैसे रघुकुल को राम लजाते।।
अरे सीता में क्या लाल लगे थे क्यों रावण से युद्ध रचाते।
संस्कार जब नहीं ऐसे होते तो राम भी मंदोदरी हर लाते॥
माँ के हाथ में, हाथ में होता है, उसकी बेटी क्या होती है।
क्यों किसी की शील का पालन करती, क्यों किसी की वेश्या होती है॥
माँ चाहे तो उसकी बेटी, मैना रानी बन सकती है।
और हर माँ अपनी कोख से सीता रानी जन सकती है॥
जो भी मातायें औलाद में अपनी, संस्कार गर्भ में भर देगी।
तो ये औलादे इन माताओं को, इस जग में जगमग कर देगी॥
डाली को मोड़ दो जैसा चाहो, जब तक नाजुकता होती है।
बाद में वह टूट जाती है, जब वह नाजुकता खोती है॥
कुम्हार तभी तक कुछ कर पाता, जब तक घड़ा चाक पर होता है।
छुट जाये जब तीर धनुष से फिर वह वापस नहीं होता है।
और अब तक तो समझ गये होगे, ये संस्कार कहाँ से आते हैं।
जैसा बनाये हम शिशुओं को ये वैसे ही बन जाते हैं॥

भारत पावन संत से

भारत इसलिये नहीं पावन कि धरा यहाँ की पावन है।
भारत इसलिये नहीं पावन कि यहाँ बरसता सावन है॥
भारत इसलिये नहीं पावन कि हथियारों का जोर यहाँ।
भारत इसलिये नहीं पावन कि गंगा यमुना का शोर यहाँ॥

भारत पावन है इसलिए कि यहाँ अनेकों संत हुये।
जो नर से नारायण बनकर श्रीराम कृष्ण महावीर हुये॥
उनमें के ये आचार्य श्री पावन इनसे परिपाटी है।
इनके चरण जहाँ पड़ते धन्य वहाँ की माटी है॥

सचमुच में ये आचार्य श्री संयम का रूप नहीं धरते।
ये अपनी पावन काया से यदि युग का कायाकल्प नहीं करते॥
मानवता मान नहीं पाती ये जीवित तीर्थ नहीं होते।
ये भारत गारत बन जाता जो साधु संत नहीं होते॥

इसीलिये मन कहता है कि ये दुनिया दीन नहीं होगी।
प्रिय सत्य अहिंसा संयम की चिर छवि मलीन नहीं होगी॥
भूपर कितने भी पाप बढ़े लेकिन मेरा यह दाबा है।
जब तक भारत में है धर्म संत भू धर्म विहीन नहीं होगी॥

ये ऐसे संत जिन्हें नमते उर का क्रंदन खो जाता है।
इनके चरणों में अंगारा आके चंदन हो जाता है॥
चेतनता इतनी जग जाती तन यो तन्मय हो जाता है।
इनका वन्दन करते-करते खुद का वन्दन हो जाता है।

भगवान महावीर की पार्लियामेन्ट

बात कहता हूँ पेटेंट अच्छी है सेन्ट परसेन्ट
दुनिया में कोई नहीं रहा परमामेन्ट
जिसने जमायी धाक उसकी उड़ गयी टेन्ट
इसलिये कहता हूँ धर्म के नाम मत होना अपसेन्ट।

दीन दुखी के दर्द में सदा रहो प्रेजेन्ट
अच्छे बुरे कर्मों का फल देती है जजमेन्ट
इसलिये जड़ वस्तु का मत लगाओ कैम्प
बात कहता हूँ प्रेजेन्ट पेमेन्ट।

काम भोग का मत लगाओ सेन्ट
सोच समझलो मास्टर और स्टूडेन्ट
मालिक प्रेसिडेन्ट और सर्वेन्ट
मोक्षपुरी के बन जाओ कह रही है।
भगवान महावीर की पार्लियामेन्ट

बात कहता हूँ पेटेन्ट अच्छी है सेन्ट परसेन्ट
सुख दुख का करना पेटेन्ट
काम भोग का मत लगाओ सेन्ट।
अन्यथा पाप का लगेगा तगड़ा करेन्ट

अनादि से कर्मों के बने हैं सर्वेन्ट
कर्म ध्वंस करना होगा सेन्ट परसेन्ट
तभी पायेंगे मुक्ति परमामेन्ट
बार-बार कह रही है महावीर की पार्लियामेन्ट।

तीर्थङ्कर स्तवन

श्री ऋषभ अजित संभव महान्।
अभिनंदन सुमति अनंत जान॥
श्री पद्म सुपारस सुगुण खान।
चन्द्रप्रभ सुविधि जिनेश जान॥
शीतल श्रेयांस जिन नमहुँ माथ।
श्री वासुपूज्य भज विमलनाथ॥
वंदू अनंत जिन जोड़ि हाथ।
श्री धर्म शान्ति अरु कुन्थुनाथ॥
श्री अरहनाथ सर्वज्ञ जान।
श्री मल्लि जिनेश्वर करहुँ ध्यान॥
श्री मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व।
श्री महावीर भवपाश नाश॥

परोपकार

बदले की आशा बिना, संत करें उपकार।
बादल का बदला भला, क्या देता संसार॥

बहुयत्नों से आर्य जो, करते अर्जित अर्थ।
वह सब होता अंत में, परहित के ही अर्थ॥

हार्दिकता से पूर्ण जो, होता है उपकार।
भू में या फिर स्वर्ग में, उस सम वस्तु न सार॥

योग्यायोग्य विचार ही नर का जीवित रूप।
होता है विपरीत पर, मृतकों सा विद्रूप॥

मुनिराज वंदना

पाप पंथ परिहारो, मोक्ष पंथ पग धारो।
अभिमान नहीं करो, निंदा को निवारी है॥

छोड़ो है संसारी संग, ज्ञानी कि रखे संग।
सुमति को करो संग, बड़ो उपकारी है॥

मुनि मन निर्मल, जैसो है गंगा को जल।
काटत कर्म बंध, सप्त तत्त्व धारी है॥

संयम की करे जप बारह विधि धरे तप।
ऐसे मुनिराज श्री को वंदना हमारी है॥

अहिंसा

सब धर्मों में श्रेष्ठ है, परम अहिंसा धर्म।
हिंसा के पीछे लगे, पाप भरे सब कर्म॥

संतों के उपदेश में, ये ही दो हैं सार।
जीवों की रक्षा तथा, भूखे को आहार॥

कहता सारा लोक है, पर अहिंसा धर्म।
इसके पीछे सत्य है, ऋषियों का यह धर्म॥

मत मारो बुध भूलकर, लघु से भी लघु जीव।
वह ही उज्ज्वल मार्ग है, जिससे दया अतीव॥

जिसने त्यागे विश्व के, पाप भरे सब कर्म।
उनमें भी वह मुख्य हैं, जिसे अहिंसा धर्म॥

धन से...

धन से मनोरंजन के साधन तो खरीद सकते हैं पर संस्कार नहीं।
धन से किताब तो खरीद सकते हैं पर बुद्धि नहीं।
धन से विस्तर तो खरीद सकते हैं पर नींद नहीं।
धन से शृंगार सामग्री तो खरीद सकते हैं पर सुंदरता नहीं।
धन से खाद्य सामग्री तो खरीद सकते हैं पर भूख नहीं।
धन से दवा तो खरीद सकते हैं पर स्वास्थ्य नहीं।
धन से मकान तो खरीद सकते हैं पर सुख शान्ति नहीं।

नशा कभी मत करना

बोले दादा हम बच्चों को, नशा कभी मत करना।
धीमा जहर नशा है बच्चो, आखिर पड़ता मरना॥
एक बार लत पड़ी नशे की, इसे छोड़ना मुश्किल।
घुला-घुला कर हमें मारता, हमें बनाता बुजदिल॥
द्रव्य और बुद्धि हर लेता, करता हमें प्रमादी।
एक बार आए चंगुल में, बनो इसी के आदी॥
नहीं लिहाज किसी का करता, काया जर्जर कर देता।
घोर निराशा के भावों से, अन्तर को नित भर देता॥

क्षमावाणी

हृदय के तार से जुड़कर, मनायें हम क्षमावाणी।
कषायों का शमन करके, मनायें हम क्षमावाणी॥
दिलों की दूरियाँ मिट जायेंगी, यह शर्त है मेरी।
प्रेम का सिलसिला देकर, मनायें हम क्षमावाणी॥
मिलें मन से मिलें दिल से, बोलें मीठी सदावाणी।
ये जीवन बूँद पानी की, यही कहती गुरु वाणी॥
रिवाजों से परे होकर, आत्मा का धरम मानें।
क्षमा माँगें क्षमा करके, अमर अपनी क्षमावाणी॥

वो आदमी...

सभी के दरमियाँ रहकर, जुदा-सा लगता है।
वो आदमी है मगर, देवता-सा लगता है॥
दगा के, झूठ के, छल के घने अंधेरों में।
वो इक प्यार का जलता दिया-सा लगता है॥
वो आदमी है या कोई फरिश्ता है।
अकेला हो के भी काफिला-सा लगता है॥
वो सामने हो तो कुछ और ही बात है।
क्योंकि उसका जिक्र भी भला-सा लगता है॥

जादू का थैला

ओ मेरे जादू के थैले, अंतर-मंतर-जंतर-जू।
जल्दी से मेरे थैले में लड्डू-पेड़े भर दे तू,
फिर मैं डग-डग जाऊंगा, थोड़ा मैं भी खाऊँगा।
जो भी भूखा दुबला होगा, उसको बाँटता जाऊँगा॥ 1॥
जल्दी से मेरे थैले में धोती-कुर्ता भर दे तू,
फिर मैं डग-डग जाऊँगा, सबको पास बुलाऊँगा।
जो भी फटे पुराने पहने, उनको बांटता जाऊँगा॥2॥
जल्दी से मेरे थैले में केले संतरे भर दे तू,
फिर मैं डग-डग जाऊँगा, सब पर प्यार लुभाऊँगा।
जो भी रोगी दीन मिलेगा, सबको स्वस्थ बनाऊँगा॥3॥
जल्दी से मेरे थैले में, खूब किताबें भर दे तू,
फिर मैं डग-डग जाऊँगा, सबको टेर लगाऊँगा।
जो अनपढ़ जहाँ मिलेगा, उन सबको पढ़वाऊँगा॥4॥
ओ मेरे जादू के थैले, अंतर-मंतर-जंतर-जू।
अब मेरी यह बात मान ले, सबको मुझसा कर दे तू॥

हास्य कविता

हे प्रभु आनन्ददाता, नोट हमको दीजिये।
लक्ष्मी का और अपना, वोट हमको दीजिये॥

बुद्धि ऐसी शुद्ध कर दो, एक का ढाई करें।
जोड़कर मर जायें लाखों, खर्च पाई न करें॥

पार्टी दावत निमंत्रण, रोज ही आते रहें।
माल जनता का चरें, गुण आपके गाते रहें॥

जगह ऐसी दीजिये, गर्मी न ज्यादा ठंड हो।
और बेटर रहे, जो एयरकन्डीशन्ड हो॥

छोड़िये सब बात यह, किस बात में हम बह गये।
मेन टॉपिक छोड़कर बेकार बातें कह गये॥

पुष्प चन्दन और तुलसी, आप सब ले लीजिये।
सौ रुपये के नोट जितने हों, मुझे दे दीजिये॥

भक्त हूँ मैं आपका, अर्जी मेरी सुन लीजिये।
और जितनी अर्जियाँ हों, फाड़कर दे दीजिये॥

आपका चाकर रहूँगा, आपका ही दास हूँ।
और लोगों के लिये श्रीमान् सत्यानाश हूँ॥

जीवन का सरगम

सा से बनता है साथ हमारा, पल-पल पलता हर दिल में।
रे से बनता है रूमानी सा, सुन्दर नगमा महफिल में।
ग से बनता है गीत सलोना, जीवन जिससे खिल जाये।
म से बनता है मधुर मनोहर, साथी ऐसा मिल जाये।
प से बनता है प्यार हमारा, सागर से भी गहरा।
ध से बनता है ध्यान धैर्य जो, हम पर रखता पहरा।
नि से बनता है निर्मल कोमल, संबल अपना मुश्किल में।
सा से बनता है साथ हमारा पल-पल पलता हर दिल में।

सात सुरों का बना ये जीवन, सात सुरों से संगीत।
सात सुरों की सरगम से ही, पलती है हर दिल में जीत॥

महावीर चाहिए

प्यासी है जमीन उसे नीर चाहिए, मीरा, राम, तुलसी, कबीर चाहिए।
बारूद के ढ़ेर पर बैठा है जहाँ, आज उसे जीता महावीर चाहिए॥

जान लिया आदमी ने सारा ये जहाँ, अपने को जान नहीं पाया यहाँ।
खुद को ही जानना है तुमको अगर, तो अपने हृदय महावीर चाहिए॥

जिंदगी में फूल शूल दोनों मिलेंगे, आदमी वही जो शूल में भी खिलेंगे।
खार गुल एक से समझना तुम्हें, तो अपने खुदा की तस्वीर चाहिए॥

आज तक जिन्दगी का राज न मिला, जिन्दगी में जिन्दगी सा फूल न खिला।
इस जैसी जिन्दगी उभारना तुम्हें, तो उस जैसी खिली तस्वीर चाहिए॥

जियो और जीने दो का रास्ता दिया, अपने से अपने का वास्ता दिया।
धरती को स्वर्ग जैसा देखना अगर, तो घर-घर होना महावीर चाहिए ॥

जुए की करामात

आओ खेले रे जुआ आओ खेले रे जुआ
पल में फकीर अमीर हुआ
मत खेलो रे जुआ मत खेलो रे जुआ
पल में अमीर फकीर हुआ
जुआ बाज की सुनो कहानी मन चित लाके भाई
द्रोपती नारी पाँडव हारी शर्म जरा नहीं आई.....
जुआ जो खेला दुर्योधन ने जीती पाण्डव नार
एक मिनिट में बन गये यारों पर नारी भरतार
जुआबाज और चोर डाकू का कौन करे इतवार
जिधर भी जाये धक्के पावे मिलता नहीं आधार
जुआबाज और चोर डाकू का कौन करे तकरार
जिधर भी जावे पैसा पावे मिले एक के चार
अगर जो जावे हार जुए में फिर वो चोरी करते
हरदम उनको राजद्वार में दण्ड भोगने पड़ते
अगर जो जावे हार जुए में फिकर कछु नहीं करते
अगले दिन जब जीत के आवे मोटर गाड़ी चलते
सब धन जावे हार जुए में मिटे न फिर भी चाह
बीबी बच्चे मरे भूख से करे नहीं परवाह
सुनी नसीहत मेरी भाई मन में किन्हा ख्याल
इस पापी चण्डाल जुए ने कर दीना कंगाल
जो चाहो कल्याण तो प्यारे सबको नियम कराओ
व्यसन त्याग दो प्यारे भैय्या शान्ति न इसमें पाओ
जुआ बुरा जंजाल जगत में मत लो इसका नाम
पैसे मारो फेंक जमी पर दूर से करो सलाम.....॥

सीख अच्छी माँ की

अरे बेटी सुन तोहि जानै है पराय घर,
वहाँ तू हमारे मति नाम को लजैयो री।
सासु और ससुर को जानि मात-तात तुल्य,
उनकी सदैव सेवा सुश्रुषा में रैयो री॥
जेठ और देवर से कीजो न विरोध कभी,
दौरानी जिठानिन से मीठे वैन कैयो री।
उठि के प्रभात पतिदेव को प्रणाम करि,
उनका हुकुम सदा शीश पै चढ़ैयो री॥
सबसे प्रथम उठि जपो णमोकार मंत्र,
नित्य क्रिया करि जिनमंदिर में जैयोरी।
समयानुकूल शुद्ध भोजन बनाय करि,
सबको खिलाय करि पीछै आप खैयोरी॥
शील व्रत संयम धरम नेम पालि सदा,
कभी भूल कुल को कलंक न लगैयोरी।
पास और पड़ौसनि से रखना सदैव प्यार,
मक्खन सभी के सुख-दुख माही जैयोरी॥

सीख बुरी माँ की

लाड़ली सुता तू अब जायकै पराये घर कबहूँ ।
किसी की धमकी में मति अइयो री॥
दौरानी जिठानी जेठ देवर ससुर सासु।
लड़ने में काहूं से पिछारी मति रैयो री॥
होके बेफिकर खूब खैयो और सोइयो री।
विपत्ती पड़ै तो मोहि चिठ्ठी लिखि दैयो री॥
दवि कै न रैयो मेरी बेटी ससुराल मांहि।
एक बात कहै ताहि सैकड़ों सुनैयो री॥

शास्त्र दान का फल

कोण्डेश ग्वाला जिसका नाम, गाय चराना उसका काम।
गायें लेकर गया था जंगल, बादल बरसे करने मंगल॥
वृक्ष के नीचे बैठने आया, कोटर में उसे शास्त्र दिखाया।
शास्त्र लेकर वह घर आया, धूप में रखकर उसे सुखाया॥
उस जंगल में मुनिवर आये, ग्वाला फूला नहीं समाये।
ग्वाला पहुँचा शास्त्र लेकर, धन्य हुआ वह मुनि को देकर॥
शास्त्रदान का यह फल बताया, ग्वाला कुन्दकुन्द कहलाया।
शास्त्रदान की शिक्षा पाओ, पढ़ो सुनो जीवन में लाओ॥

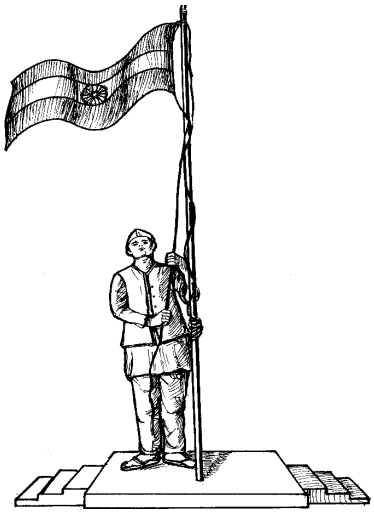

झण्डा

हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई खड़े थे चारों भाई।
झण्डे के रंगों के ऊपर सबने बात चलाई॥
हिन्दु बोला केशरिया रंग यह मेरी पहचान है।
मुस्लिम बोला हरा रंग हम सबका परिधान है॥
सफेद रंग पादरी बताते शांति का संदेश है।
फिर बोले सरदार जी आपके झण्डे में क्या शेष है॥
तनकर फिर सरदार जी बोले सारा झण्डा आपका।
झण्डे में जो लगा है डण्डा वह तो मेरे बाप का ॥
तीनों रंग मिलाकर उसमें डण्डा बीच लगाओ।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा चारों भाई मिलकर गाओ॥

क्रोध

मैंने कई बार क्रोध में, शांत रहने का संदेश दिया है।
ऐसा करके अपने को, सुधारक संत साबित किया है॥
पर जब मैं क्रोध में अशांत रहा, तब मुझे मालूम चला कि
क्रोध एक अंगार है जो रह रहकर जलन देता है।
जलता रहे तो सब कुछ जला देता है॥
मैंने जलते हुए अंगार को दूसरों पर फेंका,
पर हाथ मेरा मैं जल रहा, दूसरा निश्चिंत सो रहा है।
रह रहकर दर्द हो रहा है, मेरा मन रो रहा है कि ये मेरे
जीवन में कैसा धर्म आया, क्रोध कषाय कम करने का तरीका
भी नहीं सीख पाया मैं, ज्वलनशील अंगारा सामने है सारा
संसार में मुझमें कैसे शीतलता आयेगी, कब कषाय मेरी बुझ पायेगी
यह सोच-सोच कर मेरा मन परेशान है पर मेरे गुरु का समाधान है कि
तुम क्रोध अंगार को समता धर्मामृत से बुझाना फिर भी न बुझे तो
मौन धारण करना स्थान बदल देना॥
पर भूलकर भी किसी पर अंगार बन न बरसना
वरना तय है चौरासी के चक्कर में चलना-2

आदमी

जन्म से लेकर मरण तक दौड़ता है आदमी।
दौड़ते ही दौड़ते दम तोड़ता है आदमी॥
आँख गीली ओंठ ठंडे और दिल में आँधियाँ ।
तीन मौसम एक ही संग ओढ़ता है आदमी॥
सुबह पलना शाम अर्थी और खटिया दोपहर।
तीन लकड़ी चार दिन में तोड़ता है आदमी॥
एक रोटी दो लंगोटी तीन गज कच्ची जमीं।
तीन चीजें जिंदगी में जोड़ता है आदमी॥
है यहाँ विश्वास कितना आदमी का मौत पर।
मौत के हाथों सभी कुछ छोड़ता है आदमी॥

दोहावली

मैं नन्हा बालक प्रभो, नहीं मुझमें कुछ ज्ञान।
मेरे उर में आ बसो, कृपा सिंधु भगवान॥

काया बूढ़ी हो चली, तृष्णा हुई जवान।
ऐसे में कैसे करूँ, निज आतम कल्याण॥

जब हम आये जगत में, जगत हँसा हम रोय।
ऐसी करनी कर चलो, आगे हँसी न होय॥

गल्फवाद में दिन गया, टी.वी. देखत रात।
भोंदू के भोंदू रहे, रात दिना समझात॥

यौवन है जब रूप है, ग्राहक हैं सब लोग।
यौवन रूप गंवाय के, बात न पूछे कोय॥

कम खाना कम सोवना, कम दुनिया से प्रीत।
गम खाना कम बोलना, यही बड़न की रीत॥

मन मैला तन ऊजला, यह बगुला की रीत।
यासे तो कौआ भला, भीतर बाहर एक॥

काना से काना कहो, तुरतहि परहै टूट।
धीरे-धीरे पूँछ लो, कैसे गई है फूट॥

मिथ्यादृष्टि जीव को, जिनवाणी न सुहाय।
कै ऊँघे कै गिर पड़ै, कै उठ घर को जाय॥

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा ना दीखा कोय।
दिल जो खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय॥

समझाने में नहीं, है समझे में सार।
समझाने वाले कई, पड़े बीच मझधार॥

आज सरीखी शुभ घड़ी, जाने फिर कब आय।
जीवन के किस मोड़ पर, घटना क्या घट जाये॥

जो सोया हो नींद में, उसे जगाया जाय।
जाग के भी जो सो रहा, बाको कौन जगाय॥

आया है क्या साथ में, जायेगा क्या साथ।
काल बलि जब आयेगा, खाली होंगे हाथ॥

धर्म धर्म सब ही कहे, धर्म ना जाने कोय।
प्रेम और समता बिना, धर्म कहाँ से होय॥

जिस काया की चाकरी, तू करता दिन रात।
क्या वह मरते वक्त भी, दे पायेगी साथ॥

नश्वर है धन सम्पदा, नश्वर है सम्मान।
नश्वर है नाते सभी, नश्वर है तन प्राण॥

तीन काल के जिनवरा, तीन काल के सिद्ध।
तीन काल के मुनिवरा, बदूँ जगत् प्रसिद्ध॥

हमारी बाहर भावनाएँ

राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार।
पैसा को घर छोड़कर भ्रमत जीव संसार॥

दल बल देवी देवता, मात-पिता परिवार।
बिन पैसा के जीव को कोई ना राखन हार॥

दाम बिना निर्धन दुखी, तृष्णा वश धनवान।
बीस लाख की लाटरी, भेज देव भगवान॥

आप अकेला अवतरे, मरे अकेला होय।
पत्नि बिन संसार में और न दूजा कोय॥

जहाँ देह अपनी नहीं, तहाँ न अपना कोय।
पैसा के प्रभाव से, पर जन अपना होय॥

दिपै चाम-चादर मढ़ी, हाड़ पींजरा देह।
स्नो पाउडर पोतकर, दुनिया बस कर लेय॥

मोह नींद के जोर, जगवासी घूमें सदा।
पैसा धरे बटोर कर, खबर नहीं भगवान॥

सतगुरु देय जगाय, मोहनींद जब उपशमैं।
पैसा उन्हें दिखाय चिन्ता करे दुकान की॥

ज्ञान-दीप तप-तेल भर, घर शोधै भ्रम छोर।
माल बचावे रात भर, ले भागे नहीं चोर॥

पंच महाव्रत संचरण, समिति पंच परकार।
इन्हें त्याग कर नित करे, पाँच पाप से प्यार॥

चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष संठान।
मैं सबका स्वामी बनूँ, कृपा करो भगवान॥

धन कन कंचन राजसुख, सबहि सुलभकर जान।
दुर्लभ है कंजूस घर, मिल जाये भगवान॥

जांचे सुर-तरु देय सुख, चिन्तत चिन्ता रैन।
बिन जाँचे बिन चिंतये, पत्नी ही सुख दैन॥

लौकिक पहेली

1. चोर नहीं डाकू नहीं, नहीं किसी की रानी।
बत्तीस सिपाही घेरे रहते, तन-मन-पानी पानी॥

2. कान पकड़ना नाक जकड़ना, मेरा है यह काम।
फिर भी कोई नहीं कहता है, हमको जालिम या शैतान॥

3. खुली घास है मेरी माता, हरी घास है मेज।
मोती-सा है बदन हमारा, धूप से है परहेज॥

4. एक टाँग से खड़ी रहूँ मैं, एक जगह ही अड़ी रहूँ मैं।
घर का जगमग करने आऊँ, खड़ी-खड़ी गायब हो जाऊँ॥

5. है पानी का चोला मेरा, हूँ सफेद चंदा-सा गोरा।
कहीं यदि मुझको पा जाओ, लाओ-लाओ कहते जाओ॥

6. चार कान सिर पर घड़ा, एक पैर की नार।
शोभा है दरबार की, सज्जन करो विचार॥

7. एक नारी ऐसी देखी, कान से पहने बाला।
हलवा पूरी रोज खिलाने, नाम बताओ लाला॥

8. बिना पैर के चढ़ जाता, बिन मुख गाना गाय।
मारो तो वह बोलता, बिन मारे मर जाय॥

9. गोल-गोल हूँ नरम-नरम हूँ, आधा फल हूँ आधा फूल।
चाहे काट-काट कर खाओ, चाहे पूरी चट कर जाओ॥

10. मैं हूँ एक शहर अलबेला, तीन अक्षर का बड़ा झमेला है।
अन्त कटे तो सभी जला दूँ, मध्य कटे तो शहर बना हूँ॥

1.जीभ 2. चश्मा 3. ओस 4. मोमबत्ती 5. ओला 6. लौंग 7. कढ़ाई 8. ढोलक 9. गुलाब जामुन 10. आगरा

11. एक पुरुष को हमने देखा, छाती ऊपर दाँत।
बिना मुख गाने रागिनी, करे रसीली बात॥

12. काला है पर नहीं भुजंग, नभ में उड़े पवन के संग।
हुंकार करे पर दानव नहीं, आओ अर्थ लगाओ तुम्ही॥

13. सफेद रंग की बिल्ली, हरे रंग की पूँछ।
न मालूम हो तो, भाभी से पूछ॥

14. बेल पड़ी तालाब में, फूल है खिलता जाय।
अजब तमाशा हमने देखा, फूल बेल को खाय॥

15. सदा धूप में साथ रहेगी, कभी नहीं हटती।
मारो तो रोती नहीं, काटे नहीं कटती॥

16. एक बार जो पेट भरा, फिर कभी न खाती।
देती हूँ आराम सभी को, फिर कभी ना घबराती॥

17. आँखों से देखें नहीं, दिखता लोकालोका।
राह दिखाकर वे गये, जिन्हें रोग न शोक॥

18. एक नार ऐसी चतुरंग, वह खेले पुरुषों के संग।
पानी से वैर पवन से यारी, कहो राम कैसी विस्तारी॥

19. मैं डूबता नहीं पर तैरना मुझे आता नहीं।
सिर जाऊँ जो पानी में, तो स्वाद कुछ आता नहीं॥

20. जिस ओर चले तो पीछे न मुड़ सके।
और चाहे तो उसे लौटा भी न सके॥

---

11. हारमोनियम 12. बादल 13. मूली 14. दीपक 15. छाया 16. तकिया-गद्दा 17. अरहंत-सिद्ध 18. पतंग 19. बर्फ 20. रास्ता

21. मुझको उल्टा करके देखो, बन जाता हूँ नव जवान।
सबके साथ सदा रहता हूँ, बालक, बूढ़ा और जवान॥

22. हाथी, घोड़ा, ऊँट नहीं, खाए न दाना घास।
हवा के बल पर ही चले, होय न कभी उदास॥

23. बिना प्राण आकाश में डोले, बिन जिह्वा के फड़-फड़ बोले।
बिना हवा के चल नहीं पाती, आसमान में नृत्य दिखाती॥

24. माँ ने बेटे को समझाया, दे रहा हो तो मत लाना।
नहीं दे रहा तो ले आना, नाम आपको है बतलाना॥

25. लोहे और लकड़ी का बनता, सिर पर मेरे चोटी।
कोट और पतलून पहनता, मगर लगाऊँ न टोपी॥

26. तीन पैर की चंपारानी, रोज नहाने जाती हूँ।
दाल भात का मर्म बन जानूँ, कच्ची रोटी खाती हूँ॥

27. तेज चलता है बड़ा भाई, मैं चलता हूँ धीरे।
छोटा-सा ही घर है मेरा, उसमें बारह हीरे॥

28. चार खूंट का चबूतरा, चौंसठ खण्डों का बाग।
बत्तीस प्राणी उसमें रहते, दो उनमें सरताज॥

29. अनेक रंग कई काम में आऊँ, मुँह ढक कर हाथी बन जाऊँ।
पूँछ छुपा कौआ कहलाऊँ, तीन अक्षर का नाम बताऊँ॥

30. एक टांग होती है जिसकी, होते हैं कुछ बाल।
व्यर्थ की चीजें दूर हटाती, है न एक कमाल॥

---

21. वायु 22. साइकिल 23. पतंग 24. शवयात्रा 25. हेंगर 26. चकला 27. घड़ी 28. शतरंज 29. कागज 30. बुहारी

31. एक घर हजार कुएँ, कुएँ कुएँ पनिहार।
मूरख तो जाने नहीं, सज्जन करे विचार॥

32. पतली मम्मी मोटे पापा, तीनों बच्चे करते टाटा।
चक्कर काटे धूम मचायें, अच्छा वे माहौल बनाए॥

33. पन्द्रह फुट की एक टाँग, तीन रंग की चोली।
बीच पेट में रेल का पहिया, सुन्दर एक पहेली॥

34. लाल-लाल आँखें लम्बे-लम्बे कान।
रुई सा कुहासा, बोलो क्या है नाम॥

35. सुनने में अटपटी लगे, कहने में चटपटी।
उत्तर सरल है इसका भाई, क्यों करते माथापच्ची॥

36. अभयदान है सबको देता, रक्षक सकल जहान।
श्याम वरण द्वार का वासी, नहीं कृष्ण भगवान॥

37. भूख प्यास की इस दुनियाँ में, नहीं मांगता पानी।
खारा हूँ पर लगता मोती, आता हूँ जब मुन्नी रोती॥

38. हरा हूँ पर तोता नहीं, सींग रखूं पर बैल नहीं।
मेंढक नहीं रहूँ पानी में, देख विधि का खेल॥

39. चार खड़े हैं चार पड़े हैं, बीच में ताने बाने।
पसरे है लम्बोदर लाला, लम्बी चादर ताने॥

40. जादू के डन्डे को देखो, बिना तेल बिन बाती।
नाक दवाये तुरन्त रोशनी, सभी ओर फैला दी॥

---

31. मधुमक्खी का छत्ता 32. पंखा 33. तिरंगा-झण्डा 34. खरगोश 35. पहेली 36. ताला 37. आँसू
38. सिंगाड़ा 39. खटिया 40. टार्च

41. एक सींग की ऐसी गाय, जितना दो उतना ही खाय।
खाते–खाते गाना गाय, पेट नहीं उसका भर पाय॥

42. दिखता जैसा डंडा, लगा है सिर पर झंडा।
तन है गांठ गठीला, फिर भी बड़ा रसीला॥

43. चार खूंट का नगर बसा, चार कुएँ बिन पानी।
चोर अठारह उसमें बैठे, लिए संग एक रानी॥

44. हरा हूँ पर पत्ता नहीं, नकलची हूँ पर बन्दर नहीं।
बूझो तो मेरा नाम सही॥

45. काला काला रूप है जिसका, बिन मारे है रोती।
वर्षा गर्मी में तो जागे, शीतकाल में सोती॥

46. जब से तरुवर उपजा एक, पात नहीं पर डाल अनेक।
इस तरुवर की शीतल छाया, नीचे एक बैठ न पाया॥

47. भारी भरकम पेट है मेरा, फिर भी मैं न सेठ।
मुँह भी मेरा चौड़ा है, जल पीता हूँ मैं भरपेट॥

48. देखी एक अनोखी नार, जिसमें गुण हैं भारी।
पढ़ी लिखी नहीं अचरज आये, मरना जीना तुरन्त बतलाये॥

49.. खाली रहती खूब मिठाई, मानो बाबा है हलवाई।
उसका कहीं भी नहीं मकान, फिर भी बन जाती मेहमान॥

50. चार पैर पर खड़ी रहूँ मैं, बनके ऐसी पहरेदार।
अन्दर किसी को न आने दूँ, मानो मेरा यह उपहार॥

---

41. बांसुरी 42. गन्ना 43. कैरमबोर्ड 44. तोता 45. छाता 46. फुहारा 47. मटका 48. नाड़ी 49. मक्खी 50. मच्छरदानी

51. आँख हैं पर अन्धी हूँ, कान हैं पर बहरी हूँ।
पैर है पर लगड़ी हूँ, बतलाओ मैं कौन हूँ॥

52. रंग नहीं रूप नहीं, आकाश नहीं कहना।
स्वर नहीं भार नहीं, हम तुममें ही रहना॥

53. देखो दो कोल्हू के बैल, दोनों पड़े काय की जेल।
चक्कर बारह मील लगावे, पर न जेल से बाहर आवे॥

54. एक गवैया ऐसा, जैसा स्वर में कोई भैंसा।
ऊपर जाये गाते जाये, नीचे आये चुप हो जाये॥

55. एक छोटा-सा खेत है, उपजी काली घास।
इधर-उधर क्यों देखता, वह तो तेरे पास॥

56. चाहे दे दो सोना-चाँदी, नहीं जगह से हिलना।
लेकिन अपने प्रियतम साथी, कृष्ण वर्ण से जा मिलता॥

57. सोने की वह चीज है, बिकती हाट बाजार।
पैर उसके चार हैं पर, चलने से लाचार॥

58. इधर से ऊधर जाऊँ, पर इधर से ऊधर आऊँ।
दांतों से कुतरुं पर कुछ भी न खाऊँ॥

59. एक गाड़ी सुरमें की चलते-चलते थक गई।
उसको जब चाकू से काटा, अपने काम में लग गई॥

60. चमकूं हूँ पर बिल्ली नहीं, उड़ता हूँ पर पक्षी नहीं।
रात में चमकूं चन्दा नहीं, मुझको ढूढ़ो और कहीं॥

---

51. गुड़िया 52. आत्मा 53. घड़ी के कांटे 54. हवाई जहाज 55. बाल 56. चुम्बक 57. खटिया
58. आरी 59. पेंसिल 60. जुगनू

61. काँटों से निकले, फूलों से उलझे।
नाम बताओ, समस्या सुलझे॥

62. जो मेरे बीच में आयेगा, टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा।
जो मेरा नाम बतायेगा, बुद्धिमान कहलायेगा॥

63. रात में निकले चोर नहीं,नामी पक्षी मोर नहीं।
आँखें हैं पर होता अंधा, रात में करे पेट का धंधा॥

64. एक नगरी में जीव बत्तीस, बारह पशु और मानुष बीस।
उन सबका है यही स्वभाव, काटे मरे आवै नहीं घाव॥

65. अगल-बगल घास-फूस बीच में तबेला।
दिन भर भीड़-भाड़ रात में अकेला॥

66. एक वृक्ष चाँदी का यार, मोती उसके पड़े हजार।
झर झर मोती झरे अनेक, हाथ में न आवे एक॥

67. एक नार है गोली खाय,जिस पर थूके वह मर जाय।

68. हवा खाय पिये तेल, फिर दिखाए अपना खेल।

69. राम दर्जी है तो सीता क्या है?

70. छोटे से डब्बू मियाँ, लम्बी सी पूँछ, काम निकाला तोड़ दी पूँछ।

---

61. तितली 62. कैंची 63. उल्लू 64. शतरंज 65. कुँआ 66. फब्वारा 67. बंदूक 68. स्टोव 69.कपड़ा
70. सुई-धागा

71. सफेद जमीन काला बीज, बोने वाला गाये गीत।

72. पीला प्यारा रंग हमारा, सूरज को देखूं दिन सारा॥

73. डैडी कहने पर न आऊँ, पापा कहने पर मिल जाऊँ॥

74. चार ड्राइवर एक सवारी, आगे पीछे रिस्तेदारी॥

75. शाम को आती, सुबह भाग जाती॥

76. मेरे दांत पर काटती नहीं, मेरा नाम बताओ सही॥

77. ऐसी चीज को हमें दिखाओ, देखो समझो छू न पाओ॥

78. मखमल की थैली में सीसी के बीज॥

79. हरी जमीन लाल मकान, जिसके अन्दर काले पठान॥

80. हरी-भरी माँ हरे-हरे बच्चे, कोई पकाकर खाए कोई खाए कच्चे॥

81. लग-लग कहूँ तो न लगे, मत कहूँ तो लग जाए॥

82. खाई थी पर चखी नहीं।

83. सिर पर कलगी पर में चन्दा, गरजे बादल नाचे बन्दा॥

84. मुझको कहते हैं भगवान, उल्टा कर दो निकले प्राण॥

85. लोहे की रानी चलती मस्तानी, सबका बदन सजाती सबकी जानी मानी॥

86. शिर काटो तो काम में आए, न काटो बेकाम कहाए॥

87. कद के छोटे कर्म के हीन, बीन बजाने में तल्लीन।

88. एक राजा की अद्‌भुत रानी, दुमके रास्ते पीती पानी॥

89. पेट में अंगुली सिर पर पत्थर, शरीर है गोल बताओ उत्तर॥

90. मुख में राख लोगों के पैर, करे पीठ के बल पर सैर॥

---

71. कागज-पेन 72. सूरजमुखी 73. ओठ 74. शवयात्रा 75. रात 76. कंघी 77. प्रकाश 78. लालमिर्च 79. तरबूज 80. मटर 81. ओंठ 82. कसम 83. मोर 84. राम 85. सिलाई मशीन 86. पेंसिल 87. मच्छर 88. दीपक 89. अंगूठी 90. जूता

91. जब तक दूल्हा सिर न नवाय, तब तक दुल्हन अन्दर न जाय॥

92. हाथ हिले न चलते पैर, दुनिया भर की करता सैर॥

93. छोटे से मुंशी लट पर दास, कपड़ा पहने सौ पचास॥

94. दिन में बिछुड़ते दोनों भाई, रात में होती भेंट मिलाई॥

95. मैंने देखा ऐसा बन्दर, जो उछले पानी के अन्दर॥

96. मोती भरा सुन्दर घड़ा, उस पर लाल कबूतर खड़ा।

97. हरे कपड़े पीली काया, जिसने चाहा उसने खाया।

98. नंद बाबा की नौ लाख गाए, रात जागे दिन में सो जाए॥

99. दो मुँह छोटे एक मुँह बड़ा, आधा मानुष लीले खड़ा॥

100. जिसने खरीदा उसने पहना नहीं, जिसने पहना उसने देखा नहीं॥

---

91. सिग्नल 92. स्वप्न 93. प्याज 94. दरवाजा 95. मेंढक 96. अनार 97. भुट्टा 98. तारागण 99. पजामा 100. कफन

खेल-खेल में

शेयर मार्केट

व्यवहारिक नाम	–	शेयर मार्केट
धार्मिक नाम	–	
उम्र	–	6 वर्ष व अधिक
संख्या	–	नामों की पर्ची
संचालक संख्या	–	दो
निर्णायक	–	आप स्वयं
स्थान	–	जहाँ पर आसानी से 30 लोग इकट्ठे हो सकें।

इस खेल का नाम ''शेयर मार्केट'' है और इस खेल में भी बहुत ज्यादा शोर होता है। परन्तु इस खेल को खेलने में अत्यधिक मजा आता है। सबसे पहले आप एक विषय से सम्बन्धित चार पर्चियाँ बनायें। जैसे–कषाय, गति, भगवान, तीर्थ क्षेत्र, पूजन आदि की। फिर इन पर्चियों को बच्चों में बाँट दीजिये और उन्हें बता दीजिये कि आपको उस विषय से सम्बन्धित चारों सदस्यों को ढूंढ़कर लाना है। आप एक तरफ खड़े हो जाइये। इसमें जो प्रथम चार बच्चे अपने विषय से सम्बन्धित अन्य सदस्यों को ढूंढ़कर लायेगा, वह विजेता होगा। चूंकि इसमें सभी अपने सदस्यों को आवाज लगाकर ढूंढ़ते हैं, इसलिये थोड़ा ज्यादा शोर हो सकता है। परन्तु इस खेल को खेलने में बहुत मजा जाता है। वैसे इस खेल के लिये 20, 24, 28 (4 से विभाजित संख्या) ऐसे ही सदस्यों की होना चाहिये। अन्यथा खेल में मजा नहीं जायेगा।

लाभ :– इस खेल के माध्यम से बच्चों को 4 से सम्बन्धित कषाय, गति, अनुयोग आदि के नाम आसानी से याद हो जाएंगे।

है ना बोलो-बोलो

व्यवहारिक नाम	–	है ना बोलो-बोलो
धार्मिक नाम	–	हाँ ना बोलो-बोलो
संख्या	–	जितने बच्चे खेलना चाहें।
संचालक संख्या	–	दो 1. प्रश्न पूछने के लिए 2.गिनती करने के लिये
निर्णायक	–	आप स्वयं या जिसे इसका ज्ञान हो।
स्थान	–	जहाँ पर आसानी से 30 लोग बैठ सकें।
सामग्री	–	केवल विभिन्न छोटे-छोटे प्रश्नों का संग्रह। एक घड़ी।

इस खेल का नाम ''हाँ ना बोलो-बोलो'' है, इस खेल को खेलने के लिये बहुत सारे ऐसे प्रश्नों को लिखकर रखें जिनके उत्तर केवल हाँ या नहीं में ही हो। यह खेल इन प्रश्नों पर ही आधारित है। अब आप बच्चों का चुनाव पर्ची के माध्यम से ही कर सकते हैं। आप बच्चों को एक निर्धारित समय अवधि (1 मिनिट या दो मिनिट) में प्रश्न पूछें जिसका उत्तर हाँ या नहीं में हो। जो बच्चा उस समय अवधि में जितने अधिक से अधिक प्रश्नों के उत्तर देगा वह विजेता माना जायेगा। अगर किन्हीं दो बच्चों की स्थिति एक जैसी आती है तो आप पुनः अन्य प्रश्नों को पूछकर विजेता, उपविजेता चुन सकते हैं। प्रश्न लगातार पूछें परन्तु प्रश्न ज्यादा कठिन नहीं होना चाहिए। प्रश्न ऐसे रखें कि बच्चों को आसानी से समझ में आएँ।

जैसे –	भगवान 24 होते हैं	–	नहीं
	पाप पाँच होते हैं	–	हाँ
	पूजन रात में होती है	–	नहीं
	क्रोध करना पाप है	–	नहीं
	मंदिर कभी-कभी जाना चाहिये	–	नहीं
	कषाय चार होती है	–	हाँ
	गति चार होती हैं	–	हाँ
	तीर्थंकर चौबीस होते हैं	–	हाँ

लाभ :-इसके माध्यम से व छोटे-छोटे प्रश्नों की सहायता से बच्चों को उत्तर देने में आसानी होती है व ज्ञान में वृद्धि भी होती है।

कौन बनेगा विजेता

व्यवहारिक नाम	–	कौन बनेगा विजेता
उम्र	–	5 वर्ष से अधिक
संख्या	–	जितने (खिलाड़ी) बच्चे हों
संचालक संख्या	–	दो (1. प्रश्न पूछने के लिए 2. गिनती करने के लिये)
निर्णायक	–	आप स्वयं
स्थान	–	जहाँ आसानी से बैठ सकें।
सामग्री	–	घड़ी, विकल्पों की लिस्ट।

इस खेल का नाम ''कौन बनेगा विजेता'' है, इस खेल के लिये बच्चों का चयन पर्ची के माध्यम से करने के बाद तीन बच्चों की एक टीम बनायें। टीम कितनी भी हो सकती है। उसके प्रत्येक टीम के सदस्य से तीन विकल्प पूछे जायेंगे। इस खेल में पूजन, तीर्थंकर, व्यक्ति, तीर्थक्षेत्र, शास्त्र से सम्बन्धित चार विकल्प होंगे। प्रथम विकल्प पर सही उत्तर देने के 100 अंक, दूसरे पर 75 अंक, तीसरे पर 50 अंक और चारों विकल्प सुनने के बाद उत्तर देने के बाद 25 अंक मिलेंगे। जो टीम गलत जवाब दे उसको 25 अंक कम कर दें। जवाब नहीं देने पर कोई अंक नहीं काटें। इसी प्रकार प्रश्न अगली टीम से पूछें। उत्तर सही देने पर 25 अंक बोनस के दें। गलत जबाव देने पर 50 अंक काटें। सभी विकल्पों को भी पर्चियों में लिख लें और खिलाड़ी टीम से ही उठवायें ताकि कोई विवाद न हो।

जैसे –	1. ये बाल ब्रह्मचारी हैं	–	100 अंक
	2. इनका चिह्न जंगल का राजा है	–	75 अंक
	3. इनके अन्य नाम भी हैं	–	50 अंक
	4. त्रिशलानंदन वीर की	–	25 अंक

उत्तर – महावीरस्वामी।

लाभ :-इस खेल के माध्यम से बच्चों को किसी एक विषय के बारे चार विशेष बातें पता चलेंगी, ज्ञान वृद्धि भी होगी।

शास्त्र पढ़ो

व्यवहारिक नाम	–	शास्त्र पढ़ो
धार्मिक नाम	–	शास्त्र वाचन
उम्र	–	5 वर्ष से अधिक
संख्या	–	जितने (खिलाड़ी) बच्चे हों
संचालक संख्या	–	दो (1) शास्त्र दिखाने के लिए (2) निगरानी के लिये
निर्णायक	–	आप स्वयं या जिनके बच्चे ना खेल रहे हों।
स्थान	–	जहाँ आसानी से शास्त्र को रखा जाये वा बच्चे आसानी से बैठ जायें।
सामग्री	–	विभिन्न शास्त्र, पुस्तक, घड़ी, कागज, पेन।

इस खेल का नाम ''शास्त्र पढ़ो'' है, इस खेल के लिये मंदिर के विभिन्न शास्त्र, पुस्तकों को किसी पाटे या मेज पर आसानी से जमा लें। इनकी संख्या 30 या 35 होना चाहिए। फिर चार-चार बच्चों को बुलाकर आधे मिनिट तक देखने दें और उन्हें शास्त्रों के नाम याद करने को कहें। इस प्रकार जब सभी बच्चे देख लें उसके बाद सभी बच्चों को कागज पेन दें और एक या दो मिनिट में उन्हें नाम लिखने को कहें। जो बच्चे उस अवधि में अधिक से अधिक नाम लिखेगा वह जीत जायेगा और जो बच्चे लिखना नहीं जानते उन्हें शास्त्रों के नाम पढ़कर सुना दें और उन्हें एक या दो मिनिट का समय देकर उनसे मुखाग्र पूछें। इस प्रकार जो विजेता बच्चे होगें उन्हें उपहार स्वरूप शास्त्र पर कवर चढ़ाने को ही दें। वैसे यह खेल श्रुतपञ्चमी को खिलायें तो ज्यादा अच्छा रहेगा। ताकि बच्चे इस दिन का महत्त्व समझें व जिनवाणी संरक्षण में अपना सहयोग भी दें।

लाभ :- इस खेल के माध्यम से बच्चों को जैनधर्म के विभिन्न शास्त्रों के नाम याद होंगे और उत्सुकतावश बच्चे जिनवाणी के महत्त्व को समझते हुये उनकी अच्छी देखभाल के लिये, शास्त्र पर कवर चढ़ाकर उन्हें जमाकर अपना सहयोग दे सकते हैं।

अपनी अक्ल लगाओ

व्यवहारिक नाम	–	अपनी अक्ल लगाओ
धार्मिक नाम	–	अपनी अक्ल लगाओ
उम्र	–	5 वर्ष से अधिक
संख्या	–	जितने (खिलाड़ी) बच्चे हों
संचालक संख्या	–	दो 1.लिखने के लिए 2. पूछने के लिये
निर्णायक	–	आप स्वयं या अन्य कोई
स्थान	–	जहाँ बच्चे आसानी से बैठ सकें।
सामग्री	–	बोर्ड, चॉक, डस्टर, घड़ी।

इस खेल का नाम ''अपनी अक्ल लगाओ'' है, इस खेल में बच्चों का चुनाव पर्ची के माध्यम से करें। उसके बाद बोर्ड पर किसी व्यक्ति, तीर्थंकर, पूजन, तीर्थक्षेत्र, आचार्य श्री आदि के नामों को (तोड़कर) आगे पीछे लिख दें और सामने खड़े बच्चे को आधे मिनिट या 15 सेकेण्ड का समय दें उस नाम से सम्बन्धित एक हिंट दीजिए अगर वह बता देता है तो वह जीत जाएगा अन्यथा वह आउट हो जाएगा। इस प्रकार जो बच्चे जीत जाते हैं। उनमें विजेता, उपविजेता को चुनने के लिए कुछ नाम की स्लिप बनाकर मन से ही कुछ अंक लिख लें और जीतने वाले बच्चों से ही उठवाने के बाद बोर्ड पर लिखें अगर वह बताता है तो जिसके सबसे ज्यादा अंक होंगे वह विजेता उससे कम अंक वाला बच्चा उपविजेता होगा।

जैसे :- हा मी स्वा र म वी

हिंट - ये बाल ब्रह्मचारी हैं।

उत्तर - महावीर स्वामी

लाभ :- इस खेल के माध्यम से बच्चों को व्यक्ति विशेष की जानकारी के साथ-साथ उनका इनसे परिचय हो सकता है।

भगवान बनो

व्यवहारिक नाम	–	भगवान बनो
धार्मिक नाम	–	भगवान बनो
उम्र	–	4 वर्ष व अधिक
संख्या	–	जितने ज्यादा बच्चे हों।
संचालक संख्या	–	दो (केवल देखने के लिए, हंसने के लिए)
निर्णायक	–	आप स्वयं व हारे हुये बच्चे
स्थान	–	जहाँ सभी बच्चे आसानी से बैठ सकें।
सामग्री	–	कुछ भी नहीं

इस खेल का नाम ''भगवान बनो'' है, यह खेल बहुत छोटे बच्चों के लिए है। अतः इस खेल में थोड़ी मस्ती, मजाक व धूम ज्यादा हो सकती है। 12 वर्ष तक के सभी बच्चों को सुविधानुसार सीधा खड़ा कर दें या बैठा दें (जैसा प्रतियोगी चाहें) फिर उसे हिलने के लिए पूर्ण मना कर दें। अगर (प्रतियोगी) बच्चा हिल जाएगा तो वह खेल के बाहर हो जाएगा। अब जब बच्चे अपनी पोजीशन ले लें तब उस पर उपसर्ग करें अर्थात् परेशान करें जैसे उसे हँसाने की कोशिश करें। लाइट बंद करें, चुटकुले सुनाएं, नारे बोले, कुछ ऐसा करें कि वह विचलित हो जाए या हिल जाए ऐसा कुछ भी होने पर खेल से बाहर कर दिया जाएगा। इस प्रकार जो प्रतियोगी जितनी देर स्थिर रहता है। एक जैसा खड़ा या बैठा रहता है हिलता नहीं है तो वह विजेता कहलाएगा जिस प्रकार सिद्ध होने के लिए विभिन्न उपसर्ग सहन करने होते हैं ठीक उसी प्रकार इस खेल के विजेता बनने के लिए हँसी मजाक के साथ थोड़ा परेशान करते हैं। जो स्थिर होगा वही होगा ''भगवान बनो'' का विजेता।

लाभ :- इस खेल में अत्यधिक मजा आता है। साथ ही साथ बच्चों को चुप कराने में व सीधे बैठालने में ज्यादा आसानी होती है। इस खेल के सहारे बच्चों को आसानी से शांत किया जा सकता है।

ओम्

व्यवहारिक नाम	–	लड्डू
धार्मिक नाम	–	ओम्
उम्र	–	5 वर्ष व अधिक
संख्या	–	जितने ज्यादा बच्चे हों।
संचालक संख्या	–	2
निर्णायक	–	आप स्वयं
स्थान	–	जहाँ सभी बच्चे आसानी से खड़े हो जाएं।
सामग्री	–	कुछ भी नहीं

इस खेल का नाम ''ओम् '' है, सबसे पहले बच्चों का चुनाव पर्ची के माध्यम से करें और सभी बच्चों को लाइन या गोले में आसानी से खड़ा करें। अब बच्चों को समझा दें कि उन्हें लगातार एक के बाद एक तीर्थंकर के नाम बताना है और जब एक बार चौबीस तीर्थंकरों के नाम पूर्ण हो जाए तो ओम् बोलना है और फिर से तीर्थंकरों के नाम बोलकर क्रम चलाना है। अगर बच्चा अपनी चांस आने पर 'ए', ओ, अटक जाता है या समय लेता है तो वह आउट हो जाएगा। इस खेल को खेलने में मजा तभी आयेगा जब सभी बच्चे एक के बाद एक बिना अटके लगातार तीर्थंकरों के नाम बोलें इस खेल के नियम यह हैं कि लगातार बोलो, तीर्थंकरों का क्रम पर अवश्य ध्यान दें और यदि कोई बच्चा आउट हो जाता है तो खेल की शुरुआत हमेशा पहले तीर्थंकर से ही करे। वैसे इस खेल को खेलने में भी बहुत मजा आएगा। कम बच्चे होने पर इसे 12 भावना से भी खेला जा सकता है।

लाभ :-इस खेल के माध्यम से बच्चों को आसानी से 24 तीर्थंकरों के नाम याद हो जाएंगे और वह इस खेल में जीतने के लिए अधिकाधिक प्रयास करते हुए चौबीस तीर्थंकर,बारहभावना को याद करके आएंगे।

विधान की सामग्री

व्यवहारिक नाम	–	मार्केट लिस्ट
धार्मिक नाम	–	विधान की सामग्री
उम्र	–	7 वर्ष व अधिक
संख्या	–	जितने पाठशाला में बच्चे हों।
संचालक संख्या	–	1. लिस्ट पढ़ने के लिए 2. देखने के लिए
निर्णायक	–	आप स्वयं
स्थान	–	किसी भी छत, मंदिर
सामग्री	–	पूजन, विधान व मंदिर से सम्बन्धित चीजें जैसे- सुपारी, इलायची, चंवर, शास्त्र,कलश,चंदन इत्यादि

इस खेल का नाम ''विधान की सामग्री'' है, जैसा कि नाम से ही स्पष्ट हो रहा है इस खेल के लिए एक लिस्ट बनायें और सभी बच्चों को बैठा दें। उसके बाद बच्चों को मंदिर व पूजन से सम्बन्धित एक लिस्ट (जिसमें 25/30 सामान हो) पढ़कर कम से कम तीन बार सुनाएं जब ये लिस्ट पढ़कर बता दें उसके बाद बच्चों को कागज व पेन दें और उन्हें एक निश्चित समयावधि में सामग्री का नाम व मात्रा को लिखने को कहें। जो बच्चा निश्चित समयावधि में अधिक से अधिक सही नाम लिखेगा उसे खेल में 'पंडित जी' कहा जायेगा। अर्थात् वह विजेता होगा जो बच्चे लिख नहीं सकते वे लिस्ट को बोलकर भी बता सकते हैं। खेल अत्यन्त रोचक, मस्ती व धूम से भरपूर है। खेलने में मजा आएगा।

जैसे – 5 सुपारी, 25 जिनवाणी, 5 मांडने, 8 इलायची, 10 चंवर, 15 झंडे, 15 आरती, 8 चौकी, 88 नारे, 1/2 कि.घी, 10 धोती, 15 कलश, 3 छत्र, 12 टोपी, 250 ग्रा. धूप।

लाभ :- इस खेल से बच्चों को, विधान व पूजन में लगने वाली सामग्री, द्रव्य का ज्ञान होगा व आसानी से इन सामग्री के नाम याद हो जाएंगे।

जगह भरो

व्यवहारिक नाम	–	जगह भरो
धार्मिक नाम	–	जगह भरो
उम्र	–	5 वर्ष व अधिक
संख्या	–	जितने बच्चे खेलना चाहें
संचालक संख्या	–	2 (1. लिखने के लिए 2. पूछने के लिए)
निर्णायक	–	आप स्वयं एवं बच्चे।
स्थान	–	जहाँ आसानी से सभी बैठ जाएं।
सामग्री	–	बोर्ड, चॉक, डस्टर, घड़ी

इस खेल का नाम ''जगह भरो'' है, इस खेल के लिए बच्चों का चुनाव नाम बुलाकर या पर्ची के माध्यम से भी किया जा सकता है। इस खेल से सम्बन्धित पर्चियां स्वयं खेलने वाले बच्चे से उठवाएं ताकि विवाद न हो। उसके बाद बोर्ड पर कुछ खाने (□) बाक्स बनाएं और उन खानों में किसी व्यक्ति, तीर्थङ्कर, पूजन, तीर्थक्षेत्र, शास्त्र, आचार्य से सम्बन्धित किसी एक का नाम लिख दें। सम्पूर्ण खाली खानों में केवल किसी एक खाने में एक शब्द अवश्य लिख दें। उसके बाद बच्चे से एक निर्धारित समयावधि 15 सेकेण्ड या 1/2 मिनिट में उसका नाम पूँछे। किसी भी बच्चे की 2 गलतियां माफ की जाएगी अर्थात् दो शब्द की गलती माफ की जाएगी। सही उत्तर देने पर इनाम दें परन्तु गलत बताने पर वह खेल से बाहर हो जाएगा। वैसे खेल में सम्बन्धित विषय की हिन्ट दे सकते हैं।

जैसे –

हिन्ट – जो हमारे मामा हैं और एक तीर्थङ्कर का चिह्न हैं।

उत्तर –चद्रमा

लाभ :– इस खेल के माध्यम से बच्चे केवल 1 हिन्ट में महापुरुष, पूजन आदि को पहचान कर इस खेल में जीतकर अपना ज्ञान बढ़ाएंगे।

नाम बताओ

व्यवहारिक नाम	–	नाम बताओ
धार्मिक नाम	–	नाम बताओ
उम्र	–	5 वर्ष व अधिक
संख्या	–	जितने अधिक बच्चे हों।
संचालक संख्या	–	2 (1) समय देखने के लिए (2) जवाब सुनने के लिए
निर्णायक	–	आप स्वयं व बच्चे
स्थान	–	जहाँ आसानी से बच्चे मस्ती करें।
सामग्री	–	घड़ी

इस खेल का नाम 'नाम बताओ' है, सबसे पहले आपको कुछ स्लिप बनानी होगी। जैसे – 12 भावना, 5 पाप, 4 कषाय, 4 गति आदि की, फिर जितने बच्चे इसे खेलेंगे सबको एक–एक स्लिप दे दीजिए। अब आपको प्रत्येक बच्चे का नाम और उसकी स्लिप का परिचय सबको कराएं फिर सबसे कह दें कि जो बच्चा सबसे ज्यादा सही नाम और उसकी स्लिप का नाम बताएगा वह ही विजेता होगा। अर्थात् जब प्रत्येक बच्चे का परिचय आप करा दें उसके बाद आप किसी बच्चे से कह सकते हैं कि वह 'पाप' से सम्बन्धित पाँचों के नाम स्लिप बताएं या किन्हीं 6 भावनाओं के नाम व बच्चे का नाम बताएं इस खेल के माध्यम से बच्चों का आपस में परिचय तो होगा ही साथ में उनके नाम याद हो जाएंगे पता नहीं आपको ये खेल कैसा लगा परन्तु जब खेलेंगे तो मजा अवश्य आएगा।

लाभ :- यह खेल अत्यन्त रोचक है। खेल के माध्यम से बच्चों का आपस में अच्छे से परिचय होगा। व उनकी दोस्ती तो बढ़ेगी ही साथ ही साथ पाप, कषाय, गति के नाम व संख्या याद हो जाएंगी।

याददास्त कितनी तेज

व्यवहारिक नाम	–	याददास्त कितनी तेज
धार्मिक नाम	–	याददास्त कितनी तेज
उम्र	–	6 वर्ष व अधिक
संख्या	–	जितने बच्चे हों।
संचालक संख्या	–	2 (1)चीजें देखने के लिए (2) गणना के लिए
निर्णायक	–	आप स्वयं
स्थान	–	जहाँ आसानी से सभी लोग बैठ जाएँ।
सामग्री	–	पूजन, विधान की सामग्री जैसे–चंदन, बादाम, कलश, शास्त्र, छत्र इत्यादि।

इस खेल का नाम ''याददास्त कितनी तेज'' है, इस खेल को खेलने के लिए मंदिर में पूजन, विधान से सम्बन्धित सभी चीजों को एकत्रित कर लें ऐसी कम से कम 25–30 वस्तुओं को संग्रहित कर उन पर 1, 2, 3 नं. डाल दें। फिर उन्हें बिना किसी क्रम से मेज या पाटे पर रख दें। अब चार–चार करके बच्चों को 15 सेकेण्ड या 1/2 मिनिट का समय दें। इस प्रकार जब सभी बच्चे सामान देख लें तब उन्हें कागज, पेन दें और उन्हें एक निश्चित समयावधि में उन सामान का नाम / नम्बर लिखना है। हर बार की तरह जो उस समय अवधि में अधिक से अधिक नाम व नम्बर लिखेगा वह विजेता कहलाएगा। जो बच्चे लिखना नहीं जानते हैं उनसे आप मुखाग्र भी पूछ सकते हैं। जैसे 1 नम्बर पर आरती, 2 नम्बर पर चंदन, 3 नम्बर पर शास्त्र, 4 नम्बर पर कलश, 5 नम्बर पर बादाम पैकेट इत्यादि इस प्रकार नम्बर डालकर रखें।

लाभ :– इस खेल के माध्यम से बच्चों को पूजन, विधान व मंदिर सामग्री का तो ज्ञान होगा और वे इस खेल के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा चीजों को कम समय में याद करना भी सीखेंगे।

रिश्ते बनाओ

व्यवहारिक नाम	–	रिश्ते बनाओ
धार्मिक नाम	–	रिश्ते बनाओ
उम्र	–	5 वर्ष व अधिक
संख्या	–	जितने बच्चे हों
संचालक संख्या	–	2 (1) पूछने के लिए (2) जवाब के लिए
निर्णायक	–	अन्य कोई (जिसे रिश्तों का पूर्ण ज्ञान हो)
स्थान	–	जहाँ आसानी से सभी लोग बैठ जाएं।
सामग्री	–	कुछ सरल रिश्तों की लिस्ट, पर्चियां

इस खेल का नाम ''रिश्ते बनाओ'' है, जैसा कि नाम से ही स्पष्ट होता है इस खेल में बच्चों को रिश्ता बनाना होता है। बच्चों का चुनाव करने के बाद बच्चे से ही इसकी स्लिप उठवाएं जो बच्चा स्लिप का रिश्ता सही बताता है तो ठीक करना वह किसी अन्य बच्चे का नाम लेगा आप उससे पूछिए अगर वह दूसरा बच्चा इसका जवाब देता है तो पहला बच्चा आउट हो जाएगा, अगर दूसरा बच्चा इसका जवाब नहीं देता है तो वह दूसरा बच्चा आउट हो जाएगा और आपको पुनः पहले बच्चे से अन्य कोई रिश्ता पूछना होगा। परन्तु एक मौका के बाद दूसरा मौका न दें इस प्रकार यह खेल चैन के माध्यम से बच्चों में खिलवाएँ अगर बच्चा पहली बार में ही जवाब देता है तो आप दूसरे बच्चे का चुनाव स्वयं या स्लिप से भी कर सकते हैं। जैसे –

1.	धरती (माँ) और चन्द्रमा (मामा) में क्या रिश्ता है ?	भाई–बहन
2.	भरत चक्रवर्ती और बाहुबली कौन थे ?	भाई–भाई
3.	अंजना सती और हनुमान का क्या रिश्ता था ?	माता–पुत्र
4.	वर्धमान की माँ, महावीर प्रभु की कौन थीं ?	माँ

लाभ :–इस खेल के माध्यम से बच्चों को व्यक्ति महापुरुष, तीर्थङ्कर आदि से सम्बन्धित सभी रिश्ते समझाए जा सकते हैं व उनके नाम याद कराए जा सकते हैं।

बूझो तो जानो

व्यवहारिक नाम	–	बूझो तो जाने
धार्मिक नाम	–	बूझो तो जाने
उम्र	–	8 वर्ष व अधिक
संख्या	–	12,16,20,24 जैसे आप टीम बनाएँ
संचालक संख्या	–	3
निर्णायक	–	आप स्वयं व बच्चे
स्थान	–	जहाँ आसानी से सभी लोग बैठ जाएँ।
सामग्री	–	कुछ आसानी से प्रश्न, विभिन्न पहेलियाँ, घड़ी

इस खेल का नाम ''बूझो तो जाने'' है, वैसे यह खेल प्रश्नमंच + पहेली पर आधारित ही है। इसे आप टीम के माध्यम से या फिर सभी बच्चों को पर्ची के माध्यम से चुनकर भी कर सकते हैं। अगर हमें आप टीम के माध्यम से खिलाते हैं तो प्रत्येक सही जवाब पर 100 अंक के गलत जवाब देने पर – 25 अंक और कोई जवाब न देने पर कोई अंक न कांटे और अपना प्रश्न/पहेली अगली टीम से पूछे सही जवाब पर 50 अंक गलत देने पर –25 अंक कर दें। अगर आप इस खेल को सभी बच्चों में बिना टीम के खिलाना चाहते हैं तो साधारण तौर पर 2 बच्चे से पूछें अगर वह नहीं बताता है तो वही प्रश्न अन्य बच्चे को पूछें अब आप उस दूसरे बच्चे से पूछें अगर वह सही जवाब देगा तो पहला बच्चा आउट हो जाएगा और वह दूसरा बच्चा गलत जवाब देगा तो वह स्वयं आउट हो जाएगा और पहला खेल खेलेगा इस प्रकार खेल की कड़ी को बनाए रखें। इस प्रकार यह खेल पहेली, प्रश्नमंच का संमिश्रण है।

1. प्रश्नमंच

बच्चों की उम्र का ध्यान रखते हुए एकदम आसान प्रश्न ही पूछे ज्यादा कठिन होने पर वह बच्चा या टीम नहीं बता पायेगी।

प्रश्न 1. णमोकार मन्त्र किसने लिखा ?

प्रश्न 2. एक बूँद पानी (अनछने) में कितने त्रस जीव होते हैं ?

प्रश्न 3. श्रावक के कितने कर्त्तव्य होते हैं ?

प्रश्न 4. णमोकार मन्त्र को कितने अन्य तरीके से पढ़ा जा सकता है ?

प्रश्न 5. साधुओं के कितने मूलगुण होते हैं ?

उत्तर – 1. किसी ने नहीं

2. 36450

3. 6

4. 18432

5. 28 मूलगुण

2. पहेलियाँ ही पहेलियाँ

इसके अन्तर्गत बच्चों से विभिन्न प्रकार धार्मिक पहेलियाँ पूछें व जिनके उत्तर आसानी से बच्चे बता सकते हैं। जैसे –

1. दो अक्षर का मेरा नाम, पाँच भाईयों का है धाम।
   मुझकों जो अपनाता है, वह नरकों में जाता है। **(उत्तर-पाप)**
2. मैं हूँ सब पापों का बाप, नाम बताओ मेरा आप।
   सारा जग मेरे आधीन, सब कुछ है फिर भी मैं दीन। **(उत्तर-लोभ)**
   एवं इसी प्रकार अन्य पहेलियाँ टीम या प्रत्येक बच्चे से अलग से पूछी जा सकती हैं।

2– **अब बताओ** –

इसके अन्तर्गत आपको केवल किसी तीर्थंकर, महापुरुष आदि के नाम की केवल मात्राएँ लिखनी हैं और बच्चों या टीम को उसे बताना है केवल दो मौका दिये जायेंगे। तीसरी बार में किसी अन्य को मौका दिया जाएगा आप इसमें हिन्ट भी दे सकते हैं।

जैसे –

ि – ा ी ाँ

हिन्ट– हर मंदिर में विराजित हैं हम इनके माध्यम से सब कुछ जान पाते हैं।

उत्तर – जिनवाणी माँ

लाभ :– इस खेल के माध्यम से विभिन्न प्रकार की पहेलियों के माध्यम से बच्चों का धार्मिक ज्ञान बढ़ जाता है व अन्य किसी के प्रश्न पूछने पर आसानी से उत्तर दे सकते हैं। जवाब देने के कारण बच्चों में आत्मविश्वास भी बढ़ता है।

तीर्थङ्कर पहचानो

व्यवहारिक नाम – तीर्थङ्कर पहचानो
धार्मिक नाम – तीर्थङ्कर पहचानो
उम्र – 5 वर्ष व अधिक
संख्या – जितने अधिक बच्चे हों।
संचालक संख्या – 2
निर्णायक – आप स्वयं
स्थान – जहाँ आसानी से सभी लोग बैठ जाएँ।
सामग्री – कुछ भी नहीं

इस खेल का नाम ''तीर्थङ्कर पहचानो'' है। जैसे कि नाम से ही स्पष्ट हो रहा है कि इस खेल में बच्चों को तीर्थङ्कर के नाम व उनके चिह्न पहचानना है। आप प्रत्येक बच्चे को एक तीर्थङ्कर के नाम या चिह्न के नाम की एक लिस्ट दीजिए अगर बच्चा बता देता है तो वह जीत जाएगा अन्यथा खेल से आउट हो जायेगा। इस खेल के लिए आपको नीचे लिखे हिन्ट को पर्ची में लिख लें और बच्चे से स्वयं उठवाएं ताकि इसमें कोई विवाद न हो।

1. ऋषभनाथ – जिन्होंने असि, मसि,कृषि का ज्ञान कराया था।
2. अजितनाथ – जिन्हें जीता नहीं जा सके।
3. संभवनाथ – जिसके लिए कोई कार्य असंभव न हो।
4. अभिनंदननाथ – जिनका चिह्न स्वभाव से चंचल होता है।
5. सुमतिनाथ – जिसकी सबसे अच्छी/श्रेष्ठ मति हो।
6. पद्मप्रभ – किस तीर्थङ्कर का चिह्न कीचड़ में होता है।
7. सुपार्श्वनाथ – इनके चिह्न से सभी मंगल कार्य शुरु होते हैं।
8. चन्द्रप्रभ – इनका चिह्न माह में घटता और बढ़ता है।
9. पुष्पदन्त – फूलों की पंक्ति को कहते हैं।
10. शीतलनाथ – गर्मी में जिसकी जरूरत होती है।
11. श्रेयांसनाथ – जिनके चिह्न की शुण्ड नहीं होती है।
12. वासुपूज्य – जिनके चिह्न के आगे बीन बजाने पर असर न हो।
13. विमलनाथ – एक प्रसिद्ध कपड़ा मिल का नाम।

14. अनंतनाथ – जिसका कभी कोई अंत न हो।
15. धर्मनाथ – इसे करने के लिये सभी मंदिर जाते हैं।
16. शांतिनाथ – पूजा, विसर्जन में एक पाठ करते हैं।
17. कुंथुनाथ – जिनका नाम एक तीन इन्द्रिय जीव के समान हैं।
18. अरहनाथ – अंतिम तीन पद के धारी तीर्थंकर हैं।
19. मल्लिनाथ – सबसे कम समय में केवलज्ञान प्राप्त हुआ।
20. मुनिसुव्रतनाथ – जिनके शासनकाल में राम को मोक्ष हुआ।
21. नमिनाथ – जिनका चिह्न नीलकमल है।
22. नेमीनाथ – जिन्हें बंधे हुए पशुओं को देखकर वैराग्य हुआ।
23. पार्श्वनाथ – जिसके सम्पर्क से लोहा भी सोना हो जाता है।
24. महावीर – जो बहुत वीर हो।

1. बैल – जिसके बिना खेती नहीं की जा सकती।
2. हाथी – सबसे विशालकाय जीव है।
3. घोड़ा – ऐसा चिह्न जो कभी नहीं बैठता है।
4. बंदर – ये चिह्न जंगल में सबसे ज्यादा उछलकूद करता है।
5. चकवा – ये चिह्न चांदनी रात में एक साथ-साथ होते हैं।
6. लालकमल – इनका चिह्न कीचड़ में होने पर भी पवित्र माना जाता है।
7. साथिया – शुभ कार्यों में इसका उपयोग होता है।
8. चंद्रमा – ये हमारे मामा भी हैं।
9. मगर – अपनी बातों के बीच इस चिह्न (जानवर)का नाम लेते हैं।
10. कल्पवृक्ष – ऐसा वृक्ष जो कल्पनाओं को पूर्ण करता है।
11. गैंड़ा – ऐसा चिह्न जिसकी खाल सबसे ज्यादा मोटी होती है।
12. भैंसा – ये चिह्न और काला अक्षर (=) बराबर होते हैं।
13. सुअर – जिसको अंग्रेजी में PIG (पी आई जी) कहते हैं।
14. सेही – जिसके शरीर पर कांटे पाए जाते हैं।
15. वज्रदंड – युद्ध में जिसका उपयोग किया जाता है।
16. हिरण – इनके चिह्न की आँखें बहुत सुन्दर होती हैं।

17. बकरा – जो रक्षा के लिये हमेशा पुकारता है। जिसकी कोई नहीं सुनता।
18. मछली – जो जल की रानी है।
19. कलश – रोज अभिषेक करते वक्त उपयोग में लाया जाता है।
20. कछुआ – जो सबसे ज्यादा वर्ष तक जीता है।
21. नील कमल – जो जल से भिन्न रहता है पर जल में होता है।
22. शंख – महाभारत की शुरुआत में बजाया गया था।
23. सर्प – जिसके काटने से शरीर में जहर फैलता है।
24. सिंह – जिसके चिह्न से हिरण को भय लगता है।

वैसे इस खेल के लिए बच्चों को तीर्थंकर के नाम व चिह्न बहुत अच्छे से याद होना चाहिए तभी बच्चे हिन्ट समझकर इसका सही उत्तर समझ पायेंगे।

लाभ :-इस खेल के माध्यम से बच्चों को तीर्थंकरों के नाम व चिह्न आसानी से याद हो जाते हैं। इन हिन्ट के माध्यम से बच्चे तीर्थंकर व चिह्न को आसानी से पहचान सकते हैं।

तंबोला/अक्षय निधि

व्यवहारिक नाम	–	Housy
धार्मिक नाम	–	तंबोला /अक्षय निधि
उम्र	–	6 वर्ष व अधिक
संख्या	–	जितने अधिक से अधिक हों।
संचालक संख्या	–	3 (1) शब्द बोलने (2) मिलाने को (3) देखने को
निर्णायक	–	सभी लोग
स्थान	–	जहाँ आसानी से सभी लोग बैठ जाएं।
सामग्री	–	Housy टिकिट, पेन, Housy Bord पेन

इस खेल का नाम ''अक्षर निधि /तंबोला'' है। यह खेल पूर्णतः Housy पर आधारित है। जिसे हम लोग मंदिर में पूर्णतः धार्मिक तरीके से खेल सकते हैं। हम स्वयं इस खेल को 3-4 बार खिलवा चुके हैं। अतः जिसे Housy खेलना आता है। वह स्वयं इसका संचालन करें तो ज्यादा अच्छा होगा। सबसे पहले सभी बच्चों को टिकिट दे दें। अब उन्हें इस खेल में मिलने वाले इनाम की घोषणा करें। जैसे कि –

(1) प्रथम पाँच अंक करने पर पाप काटो

(2) तीन लाईन पर – 1. सम्यग्दर्शन 2. सम्यग्ज्ञान 3. सम्यक्चारित्र

(3) चार कोने कटने पर – गति काटो

(4) सम्पूर्ण अंक के कटने पर (Housy) मोक्ष

इस खेल के लिए बच्चों को बोल दें कि जैसे ही उनके नंबर कट जाते हैं वे तुरन्त आपके पास आएं आप बच्चों को बता दें कि प्रत्येक नं. पर एक धार्मिक शब्द बोला जाएगा और प्रत्येक बच्चों को अपनी स्लिप के सभी नम्बरों पर आने वाले सभी शब्द याद करने हैं। चाहे तो टिकिट के पीछे भी लिख सकता है। इस प्रकार नम्बर कटने के बाद जब बच्चा सारे धार्मिक नाम याद करके बताता है तो वह इस खेल में जीत जाएगा।

नम्बरों पर धार्मिक शब्द निम्न प्रकार से हैं :-

1.	ओम्	2.	जीव	3.	रत्नत्रय
4.	गति	5.	महाव्रत	6.	काय
7.	तत्त्व	8.	अष्ट द्रव्य	9.	नवदेवता
10.	दसधर्म	11.	देवदर्शन	12.	बारहभावना
13.	जयजिनेन्द्र	14.	गुणस्थान	15.	कषाय

16.	षोडशकारण	17.	नमोऽस्तु	18.	वंदामि
19.	इच्छामि	20.	वंदना	21.	अणुव्रत
22.	शिक्षाव्रत	23.	संयम	24.	तीर्थंकर
25.	अरिहंत	26.	सिद्ध	27.	आचार्य
28.	उपाध्याय	29.	साधु	30.	क्षमा
31.	देवगति	32.	मनुष्य गति	33.	तिर्यञ्चगति
34.	नरकगति	35.	सम्यग्दर्शन	36.	सम्यग्ज्ञान
37.	सम्यक्चारित्र	38.	सर्वज्ञ	39.	वीतराग
40.	हितोपदेश	41.	जल	42.	चंदन
43.	अक्षत	44.	पुष्प	45.	नैवेद्य
46.	दीप	47.	धूप	48.	फल
49.	पाप	50.	पुण्य	51.	हिंसा
52.	झूठ	53.	चोरी	54.	कुशील
55.	परिग्रह	56.	रसना इंद्रिय	57.	चक्षु इंद्रिय
58.	कर्ण इंद्रिय	59.	घ्राण इंद्रिय	60.	स्पर्शन इंद्रिय
61.	क्रोध	62.	मान	63.	माया
64.	लोभ	65.	आहार दान	66.	औषधदान
67.	अभयदान	68.	शास्त्र दान	69.	पूजन
70.	जिनवाणी	71.	छत्र	72.	अनित्य भावना
73.	अशरण भावना	74.	संसार भावना	75.	एकत्व भावना
76.	अन्यत्व भावना	77.	अशुचि भावना	78.	आस्रव भावना
79.	संवर भावना	80.	निर्जरा भावना	81.	लोक भावना
82.	बोधिदुर्लभ भावना	83.	धर्म भावना	84.	जीव
85.	अजीव	86.	आस्रव	87.	बंध
88.	संवर	89.	निर्जरा	90.	मोक्ष

लाभ :- इस खेल के माध्यम से बच्चों को टिकिट के नंबरों के माध्यम से पाप, कषाय, गति, पञ्चपरमेष्ठी, बारह भावना, तत्त्व, इन्द्रिय, अष्ट द्रव्य, दान व अन्य सभी चीजों के नाम व संख्या आसानी से याद हो जाते हैं। टिकिट मिलने के कारण बच्चों को इस खेल को खेलने का अधिक उत्साह रहता है।

एक शब्द में उत्तर

व्यवहारिक नाम	–	एक शब्द में उत्तर
धार्मिक नाम	–	एक शब्द में उत्तर
उम्र	–	6 वर्ष व जिन्हें लिखना आता हो।
संख्या	–	जितने बच्चे हों।
संचालक संख्या	–	2
निर्णायक	–	आप स्वयं या जिसने प्रश्न बनाएं हों।
स्थान	–	जहाँ आसानी से सभी लोग बैठ जायें।
सामग्री	–	घड़ी, विभिन्न प्रकार के प्रश्न, सबके लिए पेन, कागज

इस खेल का नाम ''एक शब्द में उत्तर'' है। सबसे पहले बच्चों को चुनकर लाईन में बैठा दें व शांत रहने को कहें। अब जब वह बैठ जायें तब उन्हें बताएं कि इस खेल के जो प्रश्न हैं उनके सभी उत्तर एक ही शब्द से शुरु होते हैं। जैसे –'क', 'म' आदि से। अर्थात् प्रश्न के सभी उत्तर इन्हीं शब्दों से शुरु होते हैं। जब नियम पूर्णतः समझा दें उसे बाद में बच्चों को प्रश्नों के कागज को बांट दें और उन्हें 2 या 3 मिनिट की समयावधि दें। ताकि वे अपने उत्तर लिख दें। जो बच्चा उस समयावधि में जितने अधिक सही उत्तर देगा उसे उतने अंक दें और वह विजेता भी होगा। जो बच्चे लिखे नहीं सकते उनसे आप प्रश्न पूछ भी सकते हैं। अगर बच्चा समयावधि में बताता है तो उस ग्रुप में विजेता होगा। वैसे ''एक शब्द में उत्तर'' का एक नमूना नीचे लिखा हुआ है।

सभी प्रश्नों का उत्तर एक शब्द में ही दीजिये।

1.	जहाँ प्रतिदिन दर्शन के लिये जाते हैं	–	मंदिर जी
2.	एक तीर्थंकर का नाम	–	मल्लिनाथ
3.	मंदिर में कभी नहीं करना चाहिए	–	मस्ती / मजाक
4.	एक तीर्थ का नाम	–	महावीर जी
5.	एक तीर्थंकर का चिह्न	–	मछली
6.	बाल ब्रह्मचारी जिनके पाँच नाम हैं	–	महावीरस्वामी
7.	एक शास्त्र का नाम	–	मोक्षशास्त्र
8.	भग. पार्श्वनाथ को मोक्ष हुआ	–	मोक्ष सप्तमी
9.	कषाय का नाम	–	मान
10.	हम वंदामि किसे कहते हैं ?	–	आर्यिका माताजी

11.	नमोऽस्तु किसे कहते हैं ?	–	मुनि महाराज
12.	एक गति का नाम	–	मनुष्यगति
13.	दस धर्म में एक धर्म	–	मार्दव धर्म
14.	एक कल्याणक	–	मोक्ष कल्याणक
15.	सम्यक्त्व का विपरीत शब्द	–	मिथ्यात्व
16.	किसी जीव को सताना व ... हिंसा है	–	मारना
17.	सिद्ध भगवान जहाँ गये	–	मोक्ष
18.	सप्त व्यसन में से एक	–	मांस, मद्यसेवन
19.	भक्तामर के रचयिता	–	मुनि मानतुंगाचार्य जी

लाभ :- इस खेल के माध्यम से विभिन्न विषयों से सम्बन्धित प्रश्न के उत्तर एक अक्षर में देना सीखते हैं व एक निश्चित समयावधि में विभिन्न विषयों के बारे में अधिक से अधिक जानकारी मिलती है।

एक मिनिट

व्यवहारिक नाम	–	एक मिनिट
धार्मिक नाम	–	एक मिनिट
उम्र	–	4 वर्ष व अधिक
संख्या	–	32 बच्चे
संचालक संख्या	–	3
निर्णायक	–	आप स्वयं
स्थान	–	छत, मंदिर, भवन
सामग्री	–	घड़ी, कागज, पेज, घंटी

इस खेल का नाम ''एक मिनिट'' है। इस खेल के लिए दो बच्चों का चुनाव करना होता है फिर दोनों के बीच कुछ एक ऐसा कार्य करने को कहा जाता है जो अलग-अलग परन्तु एक मिनिट में ही पूर्ण करें और जो बच्चा ज्यादा बार करता है, वह जीत जाता है। वैसे इसके कोई खास नियम नहीं बस समयावधि का विशेष ध्यान रखना होता है। अगर इसे आप आखिरी तक विशेष (निपुण) बच्चे को चुनना चाहते हैं तो पहले 32 का चुनाव करें जिससे 16 जीते हुए मिलेंगे। फिर उन जीते हुए बच्चों में खेल खिलवाएं इस प्रकार 8,4,2,1 का चुनाव होगा। आप भी अपने मन से कुछ काम बच्चों से इस खेल में खिलवा सकते हैं। वैसे छोटे बच्चों को केवल बोलने के द्वारा और बड़ों के लिए बोलने के साथ लिखने के माध्यम से भी इस खेल को खेला जा सकता है। जैसे – 1 मिनिट में

1. शुद्ध णमोकार मंत्र बोलिए / लिखिए।
2. ॐ नमो अर्हते नमः बोलिए / लिखिए।
3. देवादि देव अरहंत देव सिद्ध भगवान की जाप बोलिए।
4. तीर्थक्षेत्रों के नाम बोलिए / लिखिए।
5. ॐ का उच्चारण कीजिये / लिखिए।
6. ह्रीं का उच्चारण कीजिये / लिखिए।
7. 24 तीर्थंकर के नाम बोलिए / लिखिए।
8. अरिहंत सिद्ध का नाम बोलिए / लिखिए।
9. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का नाम बोलिए / लिखिए।
10. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के शिष्य मुनिराजों का नाम बोलिए / लिखिए।

प्रतिभा शिखर

व्यवहारिक नाम	–	प्रतिभा शिखर
धार्मिक नाम	–	प्रतिभा शिखर
उम्र	–	5 वर्ष व अधिक
संख्या	–	32 या 64 बच्चे
संचालक संख्या	–	3
निर्णायक	–	अन्य कोई
स्थान	–	जहाँ आसानी से सब लोग बैठ सकें।
सामग्री	–	कागज, पेज, घड़ी, बहुत सारे प्रश्न, भजन पर्चियां

इस खेल का नाम ''प्रतिभा शिखर'' है। नाम से ही स्पष्ट होता है कि हम इस खेल के माध्यम से पाठशाला के प्रतिभाशाली बच्चों को अपने समाज में एक अलग स्थान दिला सकें अर्थात् जो प्रतिभा बच्चों में है उसे और ज्यादा प्रोत्साहित कर आगे बढ़ाया जाए। वैसे यह खेल खूब सारे बच्चों के माध्यम से ही खिलाया जाये। इसमें 32 या 64 बच्चे होना चाहिए। एक तरीके से यह विभिन्न खेलों की खिचड़ी है। जैसे इसके अन्तर्गत बच्चों के मध्य 1 मिनिट, अंताक्षरी, वाद-विवाद, तात्कालिक भाषण आदि के माध्यम से बच्चों का चुनाव किया जाता है।

1. एक मिनिट- सबसे पहले बच्चों का चुनाव पर्ची के माध्यम से करें। जब 32 बच्चे आ जायें तो उनके बीच 1 मिनिट का खेल खिलाया जाए। ताकि हम विशेष तेज/फुर्तीले 16 बच्चों को चुन सकें और अगला राउण्ड उन 16 बच्चों में पूरा करें।

2. प्रश्न मंच - पिछले राउण्ड में जीते 16 बच्चों के मध्य प्रश्नमंच करें या प्रश्नमंच को 2/3 बार में पहेलियाँ पूछकर 8 बच्चों का चुनाव करें। जो बच्चे पहले उत्तर दें उनका चुनाव अवश्य करें।

3. अंताक्षरी-पिछले राउण्ड में जीते 8 बच्चों के मध्य सामान्य अंताक्षरी खिलवाएं। चाहें तो खेल को मजेदार बनाने के लिए अंतरा, मुखड़ा, शब्द राउण्ड या अक्षर राउण्ड भी खिलवा सकते हैं। इस प्रकार चार बच्चों का चयन होगा।

4. वाद-विवाद - इसमें जो 4 बच्चे बचे हैं वे वाकई बहुत प्रतिभाशाली हैं तभी विभिन्न खेल में उनका चुनाव हुआ है। अब उन चारों बच्चों को ऐसा विषय दें जिस पर उन्हें पक्ष या विपक्ष में बोलना होगा। परन्तु विषय केवल एक ही होगा क्योंकि दो पक्ष वालों में से एक का चुनाव होगा और दो विपक्ष वालों में से 1 का चुनाव होगा। विषय अत्यन्त रोचक होना चाहिए।

ताकि वाद-विवाद में मजा आ सके। जैसे धन/धर्म में श्रेष्ठ कौन ?

5. तात्कालिक भाषण - वैसे तो वे 4 ही बच्चे अत्यन्त प्रतिभा के धनी हैं परन्तु जो विशिष्ट प्रतिभाशाली बच्चे हैं उनमें से प्रतिभा शिखर तक पहुँचने वाला कोई एक ही होगा अतः 2 बच्चों में से एक का चुनाव करने के लिए तात्कालिक भाषण करवाएँ परन्तु इनमें से 1 का चुनाव जनता के माध्यम से करवाएँ जो ज्यादा अच्छा होगा।

इस प्रकार जो बच्चा इन सभी में जीत जाता है, वही प्रतिभाशिखर तक पहुँचेगा और वह जीत जाएगा। आप इस खेल के राउण्ड बदल भी सकते हैं। आप इसमें मोनो एक्टिंग, नारे के राउण्ड भी रख सकते हैं।

- ❑ जब तक सूरज चांद रहेगा - मुनियों का सम्मान रहेगा।
- ❑ जब तक सागर में है पानी - मुनियों की है अमर कहानी।
- ❑ हैलो हाय छोड़िये - जय जिनेन्द्र बोलिये।
- ❑ नील गगन में एक सितारा - आचार्य श्री को नमन हमारा।
- ❑ वीर प्रभु का क्या संदेश - जियो और जीने दो।
- ❑ सत्य अहिंसा प्यारा है - यही हमारा नारा है।
- ❑ हर माँ का बेटा कैसा हो - दिगम्बर मुनियों जैसा हो।
- ❑ हर माँ की बेटी कैसी हो - चंदन बाला जैसी हो।
- ❑ जिसके जीवन में गुरु नहीं - उसका जीवन शुरु नहीं।
- ❑ राग में न द्वेष में - विश्वास दिगम्बर भेष में।
- ❑ ये वैरागी कहाँ चले - पापाचार मिटाने को।
- ❑ जैनधर्म किसका है - जो अपना ले उसका है।
- ❑ महावीर के संदेशों को - घर-घर तक पहुँचाना है।
- ❑ नई सदी का नया संदेश - अहिंसामय हो भारत देश।
- ❑ राम राज्य लाना है - शाकाहार अपनाना है।
- ❑ मानवता का करते नाश - अण्डा,मछली,मदिरा,मांस।

लाभ :-यह खेल अपने आपमें सबसे अलग है। अर्थात् इस खेल के माध्यम से विभिन्न खेलों में निपुण, प्रतिभाशाली बच्चों का चयन किया जा सकता है। इस खेल में प्रतिभा का भी सम्मान किया जाता है क्योंकि इसका नाम है ''प्रतिभा शिखर''।

जैनं जयतु शासनम्

व्यवहारिक नाम	–	जैनं जयतु शासनम्
धार्मिक नाम	–	जैनं जयतु शासनम्
उम्र	–	4 वर्ष से अधिक
संख्या	–	जितने ज्यादा बच्चे हों।
संचालक संख्या	–	3, एक बोलने के लिए, दो बच्चों को देखने के लिए।
निर्णायक	–	आप स्वयं
स्थान	–	खुली छत, मंदिर
सामग्री	–	कुछ भी नहीं

इस खेल का नाम ''जैनं जयतु शासनम्'' है। यह एक तरीके से जैनधर्म की पी टी है। सबसे पहले सभी बच्चों को समझा दें कि जब ''जैनम्'' कहा जाएगा तब बच्चों को अपना सीधा हाथ आगे करना है एवं ''जयतु'' कहने पर दोनों हाथ जोड़ना है। ''शासनम्'' कहने पर सीधा हाथ कंधे पर से ऊपर करना है व ''जयजिनेन्द्र'' कहने पर दोनों हाथ जोड़कर झुककर जय जिनेन्द्र बोलना भी है। जैन, जयतु, शासनम्, जयजिनेन्द्र, सावधान इन पाँचों शब्दों के बोलने का कोई क्रम नहीं होगा। मतलब आप जैसा शब्द कहेंगे बच्चों को तुरन्त शब्दों के अनुसार क्रिया करनी होगी। अगर बच्चा गलत करता है तो वह आउट हो जाएगा। अब बच्चों को खिलाया कीजिए और उन्हें बिना किसी क्रम के 5 शब्द (जैनं जयतुशासनम्, जय-जिनेन्द्र, सावधान) बार-बार बोलिए और बच्चों को उसके अनुसार क्रिया करनी होगी। एक संचालक बोलेगा व अन्य दो संचालक बच्चों को देखेंगे जो बच्चा गलत क्रिया करे, उसे आउट कर दें, इस प्रकार सभी उम्र के बच्चे एक साथ एक जगह सम्पूर्ण खेल मजे से खेल सकते हैं। आखिरी में जो 1 या 2 बच्चे बचे वे विजेता / उपविजेता कहलायेंगे।

लाभ :-जब बच्चे बैठे-बैठे वोर हो जाते हैं तो इस खेल के माध्यम से वे पुनः तरो ताजा हो जाते हैं, क्योंकि ये एक व्यायाम ही है।

गिनती लिखो

व्यवहारिक नाम	–	गिनती लिखो
धार्मिक नाम	–	गिनती लिखो
उम्र	–	8 वर्ष
संख्या	–	जितने ज्यादा बच्चे हों।
संचालक संख्या	–	2, एक गिनती बोलने के लिए, एक बच्चों को चुप कराने के लिए।
निर्णायक	–	आप स्वयं
स्थान	–	जहाँ आसानी से बैठा जा सके मंदिर या छत
सामग्री	–	कुछ गिनती व नामों का संग्रह, पेन व कॉपी

इस खेल का नाम ''गिनती/ शब्द लिखो'' है। केवल वे बच्चे ही खेल सकते हैं जिन्हें लिखना आता है। खेल से पहले बच्चों को विभिन्न प्रकार के भेद याद होना चाहिए उन्हें धार्मिक गिनती आनी चाहिए जैसे–1–आत्मा, 2– जीव, संसारी जीव, 3– रत्न, मूढ़ता, परिक्रमा, 4– दान, कषाय, कथा, 5– पाप, परमेष्ठी, महाव्रत, 6– द्रव्य, कर्त्तव्य, 7–तत्त्व, 8– कर्म, पूजन द्रव्य, 9– पदार्थ, नवदेवता आदि के भेद आना चाहिए इसके अतिरिक्त भी हो सकते हैं। इस खेल को हम दो तरह से खेल सकते हैं –

1. गिनती लिखो– संचालक महोदय केवल नाम बोलेंगे और बच्चों को उनके अनुसार गिनती लिखना होगी। जैसे–संचालक ने कहा–पाप, आत्मा, दान, कर्म तो बच्चों को 5148 लिखना होगा, फिर संचालक ने कहा–पदार्थ, कषाय, मूढ़ता, दान तो बच्चों को 9434 लिखना होगा।

2. शब्द लिखो– शब्द लिखो में संचालक केवल गिनती बोलेंगे और बच्चों को उन गिनती के आधार पर धार्मिक शब्दों के भेद लिखना होगा। जैसे संचालक ने कहा 3541 तो बच्चे लिखेंगे रत्न, पाप, कषाय, आत्मा, फिर कहा 7925 तो बच्चे लिखेंगे तत्त्व, पदार्थ, जीव, परमेष्ठी लिखना होगा।

उपर्युक्त दोनों प्रकार से खेल खिलाया जा सकता है और बच्चे कुछ नाम बदल भी सकते हैं। आप 50 या 30 गिनती या शब्द मुखाग्र या पहले से तैयार करके, बच्चों को बहुत सारे धार्मिक शब्दों के भेद याद करा सकते हैं। खेल को सरल बनाने के लिए 4 या 5 अंकों से ज्यादा गिनती या शब्द न रखें, इसे और अधिक समझने के लिए छोटी सी लिस्ट प्रारूप के तौर पर यहाँ पर दी जा

रही है।

गिनती व शब्द लिखो -

गिनती लिखो		**उत्तर**
पाप, पदार्थ, पुरुष	-	5963
परिक्रमा, पूजन द्रव्य, जीव, आत्मा	-	3821
दान, तत्त्व, कर्म, महाव्रत	-	4785
श्रावक कर्तव्य, नवदेवता, धर्म	-	6910
तत्त्व, रत्न, परमेष्ठी, कषाय	-	7354
दान, कर्म, आत्मा, संसारी जीव	-	4812
मूढ़ता, पदार्थ, द्रव्य, आत्मा	-	3961
तत्त्व, कथा, धर्म	-	7410
आत्मा, दान, पाप, कर्म	-	1458
मुक्त जीव, परिक्रमा, मूढ़ता, पूजन द्रव्य	-	2338

शब्द लिखो - ये आप स्वयं लिखे जो ज्यादा अच्छा रहेगा, ज्ञान बढ़ेगा।

3915 -

6437 -

4455 -

3356 -

2789 -

9318 -

4845 -

3536 -

1248 -

5412 -

लाभ - इस खेल के माध्यम से बहुत से धार्मिक शब्दों के भेद का ज्ञान तो होगा ही साथ ही साथ गणित विषय थोड़ा मनोरंजक हो जायेंगा।

धार्मिक शब्द ढूंढिये

नीचे लिखे शब्दों में से कुछ धार्मिक शब्द ढूंढिये जैसे पाप, कषाय आदि।

1.	रमा नमन नहीं आए ।	–	मान
2.	रिंकु शील बाजार गए हैं।	–	कुशील
3.	डाकिया खत पटक गया।	–	तप
4.	चलो भरत से मिल आए।	–	लोभ
5.	रोमा यातना से गुजर रही है।	–	माया
6.	भोला लचक कर चलता है।	–	लालच
7.	अजी वसुधा को ले आओ।	–	अजीव
8.	सबसे सम्बन्ध बनाए रखना	–	बंध
9.	क्यों जी वहाँ नहीं जाना है।	–	जीव
10.	अब संवरना छोड़ो।	–	संवर
11.	आज लड़का देखने आएगा।	–	जल
12.	युद्ध में गदा न उठाओ।	–	दान
13.	मुझे स्पर्श न करो।	–	स्पर्शन
14.	मौसम्बी में बिल्कुल रस नाही है।	–	रसना
15.	सच क्षुधा का नाश होगा।	–	चक्षु
16.	सर्वत्र सताए हुए जीव हैं।	–	त्रस
17.	मैंने वैद्य को बुलाया है।	–	नेवैद्य
18.	सफलता प्रयास से मिलेगी।	–	फल
19.	नर कभी रुकना नहीं चाहते	–	नरक
20.	चंद नहीं ज्यादा पैसे लाओ।	–	चंदन

नोट – इसके अतिरिक्त आप अपने मन से भी नए वाक्य बना सकते हैं।

विवरणिका देखो

इस खेल को खेलने से पहले बच्चों को बोलिए कि पूजन पाठ प्रदीप, जिनभारती संग्रह आदि कि विवरणिका देखकर आए हुए व शब्दों को सही रूप से पहचानकर लिखें जैसे –

1.	स्त्रो वी हा श्री म ष्ट क रा त्र–		महावीराष्टक
2.	म स धि ण र मा	–	समाधिमरण
3.	ठ लो ना पा आ च	–	आलोचनापाठ
4.	र भा बा व ह ना	–	बारहभावना
5.	पा द ठ न र्श	–	दर्शनपाठ
6.	जा व दे पू	–	देवपूजा
7.	थ र्श्व त्र पा श्री ना स्त्रो	–	पार्श्वनाथ स्त्रोत्र
8.	सा ल यि क मा धु	–	लघु सामायिक
9.	आ चा थ ना ली दि सा	–	आदिनाथ चालीसा
10.	भा रा व ग्या वै ना	–	वैराग्यभावना
11.	क्ता म मा भ म र हि	–	भक्तामर महिमा
12.	ण्ड नि ण का र्वा	–	निर्वाणकाण्ड
13.	ना री भा मे व	–	मेरीभावना
14.	सू त र्थ त्र त्त्वा श्री जी	–	श्री तत्त्वार्थसूत्र
15.	आ ध पा रा ना ठ	–	आराधनापाठ
16.	ती दु ह न वि ख र ण	–	दु:खहरणविनती
17.	वं आ र्य द ना चा	–	आचार्यवंदना

नम्बर ले डूबे

व्यवहारिक नाम	–	नम्बर ले डूबे
धार्मिक नाम	–	नम्बर ले डूबे
उम्र	–	5 वर्ष
संख्या	–	जितने बच्चों में जोड़ी बनें
संचालक संख्या	–	2
निर्णायक	–	आप स्वयं
स्थान	–	छत, मंदिर, जहाँ पाठशाला लगती हो
सामग्री	–	कुछ सरल संख्यात्मक प्रश्नों का संग्रह

इस खेल का नाम ''नम्बर ले डूबे'' हैं। सबसे पहले सभी बच्चों की जोड़ी बनायें व उनकी जोड़ी का नंबर निर्धारित कर दें। अगर 20 बच्चे हैं तो 10 जोड़ी बनेगी अब बच्चों की जोड़ी को 2 टीम में बांट दें। मतलब 1 से 10 नम्बर तक के बच्चे 1 टीम में व अन्य बच्चे दूसरी टीम में। टीम बनाने के बाद दोनों टीम के एक एक कैप्टन चुने जो अपनी टीम से पूछकर ही प्रश्नों का उत्तर देगें।

टीम का परिचय कराते हुए सभी बच्चों के नम्बर बता दें व आप अपने पास भी लिख लें। अब हमारा खेल शुरु होता है। आप टीम से प्रश्न करें। जैसे–कषाय होती हैं– तो टीम का कैप्टन कहेगा 4 तो (जवाब सही है) वह दूसरी टीम में से किसी नम्बर को out कर देगा। अब दूसरी टीम से प्रश्न पूछिए अगर वह टीम भी सही जवाब देती है तो पहली टीम का एक नम्बर आउट हो जाएगा। इस प्रकर जब टीम में 4–4 सदस्य बचेंगे तो सभी सदस्यों को अधिकार होगा कि वह टीम के कैप्टन का भी (नम्बर याद करके) out कर सकते हैं। इस प्रकार इस खेल में व्यक्ति केवल अपने नम्बर के कारण ही out होगा। नाम के कारण नहीं। इसलिये दोनों टीम के सदस्य नम्बर याद करें व ज्यादा से ज्यादा जवाब दे अगर टीम ने गलत जवाब दिया तो संचालक को अधिकार है वह गलत जवाब देने वाली टीम के एक सदस्य को out कर दें। इस प्रकार अन्त में जो सदस्य रह जाएगा वे ही इसके विजेता होंगे। इसके प्रश्न केवल संख्यात्मक ही होना चाहिए व सरल होने चाहिए तभी खेल में मजा आएगा।

जोड़ी बनाओ

व्यवहारिक नाम	–	जोड़ी बनाओ
धार्मिक नाम	–	जोड़ी बनाओ
उम्र	–	7 वर्ष से अधिक
संख्या	–	जितने बच्चे खेलना चाहें
संचालक संख्या	–	2
निर्णायक	–	आप स्वयं
स्थान	–	मंदिर या छत
सामग्री	–	पूजन व मंदिर से सम्बन्धित सामग्री जैसे कलश थाली, आरती, घड़ी आदि

इस खेल का नाम ''जोड़ी बनाओ'' है। इस खेल से पहले मंदिर, पूजन से सम्बन्धित सामग्री को एक स्थान पर इकट्ठा कर लें व प्रत्येक दो बच्चे की जोड़ी बनाएं। सामग्री के पास एक बच्चे को व अन्य एक बच्चे को अपने पास बुला लें। एक टेबिल पर सामान हो व अन्य दूसरी जगह उससे सम्बन्धित सामग्री की पर्ची हो। अर्थात् 1 संचालक सामग्री के पास 1 बच्चे के साथ खड़ा रहे। अब दूसरा बच्चा स्लिप उठायेगा व अपने साथी को इशारे से समझाएगा अगर उसके साथी ने समझ लिया तो वह सामग्री में से (उसे) सामान को उठाकर पहले वाले साथी को दे देगा फिर बच्चा दूसरा, तीसरा सामान की स्लिप उठाकर उसे अपने जोड़ीदार को समझाएगा और इस प्रकार निश्चित समय अवधि में दोनों बच्चों को ज्यादा से ज्यादा जोड़ी बनानी होगी जो बच्चे ज्यादा जोड़ी बनाएंगे वे ही विजेता होंगे। समय सीमा 1 या 2 मिनिट की रख सकते हैं। आप इस खेल को अपनी सुविधानुसार परिवर्तित करके भी खिलवाने का प्रयास कर सकते हैं।

सामान्य ज्ञान

आविष्कार एवं आविष्कारक

आविष्कार	आविष्कारक
टेलीविजन	जे.एल. वेयर्ड
सिलाई मशीन	वार थेमली थिमोनियर
रेडियम	मेडम क्यूरी
एक्स-रे	डब्ल्यू. के. रोटेंजन
स्टैनलेस स्टील	हैरी ब्रियरली
आक्सीजन	जे. प्रीस्टली
वायुयान	राईट ब्रदर्स
ग्रामोफोन	ऐडीसन
प्रिंटिंग प्रेस	केकसटन
घड़ी	ब्रेगुएट
टेली स्कोप	गैलीलियो
टाइप राइटर	सी. सोल्स
बैटरी	ऐलेस्सान्ड्रो बोल्टा
ट्रांजिस्टर	डब्ल्यू शोकले

यह भी जानिये

भारत का प्रवेश द्वार	–	मुम्बई
पर्वतों की रानी	–	मसूरी
समुद्र पुत्र	–	लक्षद्वीप
नवाबों का नगर	–	लखनऊ
दक्षिण का कश्मीर	–	केरल
बगीचों का शहर	–	बैंगलोर
त्यौहारों का शहर	–	मदुरै
फलों की नगरी	–	श्रीनगर
फलों की डलिया	–	हिमाचल प्रदेश
धान का कटोरा	–	छत्तीसगढ़
मंदिरों व घाटों का शहर	–	वाराणसी
मसालों का बगीचा	–	केरल
अरब सागर की रानी	–	कोचीन
भारत का दिल	–	दिल्ली
भारत का हृदय	–	मध्यप्रदेश
भारत का स्विट्जरलैंड	–	कश्मीर
डायमंड हार्बर	–	कलकत्ता

समय की महिमा

जब भारत में दोपहर के 12 बजते हैं –

शारजाह में सुबह के 11:30 बजते हैं।
लंदन में सुबह के 6:30 बजते हैं।
रोम में सुबह के 7:30 बजते हैं।
टोकियो में दोपहर के 3:30 बजते हैं।
न्यूयार्क में दोपहर के 1:30 बजते हैं।
पाकिस्तान में सुबह के 11:30 बजते हैं।
हांगकांग में शाम के 7:30 बजते हैं।
मास्को में सुबह के 9:30 बजते हैं।
पेरिस में सुबह के 6:30बजते हैं।
सिंगापुर में दोपहर के 1:30 बजते हैं।
सेन फांसिको में रात के 1:30 बजते हैं।

चिह्न तथा प्रतीक

❑ महाराजा	एयर इण्डिया
❑ लाल तिकोना	परिवार नियोजन
❑ लाल क्रास (+)	डॉक्टरी सहायता
❑ लाल प्रकार	खतरे का निशान, यातायात रोकने का चिह्न
❑ हरा प्रकाश	लाइन क्लियर, यातायात को जाने का संकेत
❑ काला झण्डा	विरोध प्रदर्शन
❑ बाँह पर काली पट्टी	विरोध संकेत, दुःख का प्रतीक
❑ लाल झंडा	खतरे का चिह्न, क्रान्ति का प्रतीक
❑ सफेद झण्डा	सन्धि या समर्पण का चिह्न
❑ पीला झण्डा	संक्रामक रोग से पीड़ित रोगियों के वाहन का ध्वज
❑ सफेद कबूतर	शान्ति का प्रतीक
❑ जैतून की शाखा	शान्ति का प्रतीक
❑ कमल का फूल	सभ्यता और संस्कृति
❑ एक दूसरे को काटती दो हड्डियाँ और ऊपर एक खोपड़ी	बिजली का खतरा
❑ झुका हुआ झण्डा	राष्ट्रीय शोक का सन्देश
❑ उल्टा झण्डा	राष्ट्रीय विपदा का प्रतीक
❑ चक्र	प्रगति का प्रतीक
❑ आँखों पर पट्टी बाँधे तथा हाथ में तराजू लिए स्त्री	न्याय का प्रतीक

राज्य, शहर व गाँव के नाम

कान है पर सिर नहीं	–	कानपुर
कोला है पर पेय नहीं	–	अकोला
हार है पर पराजय नहीं	–	बिहार
केश हैं पर बाल नहीं	–	ऋषिकेश
चेरी है पर फल नहीं	–	पांडिचेरी
द्वार है पर दरवाजा नहीं	–	हरिद्वार
गाल है पर चेहरा नहीं	–	बंगाल
जैन है पर धर्म नहीं	–	उज्जैन
राय है पर सलाह नहीं	–	रायपुर
नाटक है पर पात्र नहीं	–	कर्नाटक
सौर है पर सूर्य नहीं	–	मंदसौर
मोह है पर लगाव नहीं	–	दमोह
नीम है पर वृक्ष नहीं	–	नीमच
अमृत है पर पेय नहीं	–	अमृतसर
नाग है पर विष नहीं	–	नागपुर
दौर है पर दौरा नहीं	–	इंदौर
राष्ट्र है पर देश नहीं	–	सौराष्ट्र
रस है पर गिलास नहीं	–	बनारस
रात है पर चाँद नहीं	–	गुजरात

अद्‌भुत जानकारियाँ

- दक्षिण भारतीय राग शंकराभरण सुनने से पागलपन ठीक हो जाता है।
- हँसाने वाला विद्यार्थी मूर्ख नहीं होता।
- मुस्कान के वक्त चेहरे की 14 माँस पेशियाँ खिंचती हैं। चेहरा उदास हो तब 74–2=72 माँस पेशियाँ खिंचाव में आ जाती हैं।
- राग दरबारी के श्रवण से सिरदर्द में आराम होता है।
- गिलहरी शुद्ध शाकाहारी नहीं होती।
- ध्यान के लिये श्रेष्ठ समय रात्रि 2 बजे से प्रातः 8 बजे तक है।
- भारतीय समयानुसार पूर्णाहार का श्रेष्ठ काल दिन 10 बजे से 2 बजे तक है।
- फोन पर सबसे अधिक बोला जाने वाला शब्द 'मैं' है।
- हृदय रोगी मैं शब्द का सर्वाधिक प्रयोग करते हैं।
- पेप्सी में डाला गया दाँत 10 दिन में पूर्णतः गल जाता है।
- बिल्ली के एक कान में 32 माँस–पेशियाँ होती हैं।
- आँख खोलकर छींकना असंभव है और हँसते हुए सीटी बजाना।
- कुछ भी गुटकते समय श्वांस रुक जाती है।
- मानव शरीर की कार्यक्षमता सभी यंत्रों से अधिक 41 प्रतिशत है।
- मानव–मस्तिष्क की मात्र 11 प्रतिशत स्मरण कोशिकाएँ सक्रिय होती हैं।
- एक बार मुँह में गुटखा दबाकर सोने वाले का गाल फाड़कर टूथब्रश बाहर निकल आया था।
- गुटखे में रखी रेज़र पत्ती गल जाती है।
- मुंबई की होटलों में बर्तन मांजने वाले लगभग 3 लाख ऐसे लड़के हैं जो हीरो बनने घर से भागे थे।
- दाहिने हाथ से लिखने वाले सामान्यतः कुछ वर्ष अधिक जीते हैं।

- सिगरेट के धुएँ से रूमाल (गीले वाले) पर काले निशान पड़ जाते हैं।
- एक सिगरेट 18 मिनट आयु फूक डालती है।
- माँसभोजी शाकाहारी से 7 गुना खर्चीला होता है और 6 वर्ष अल्प जीता है।
- धूम्रपान से 10 वर्ष आयु क्षीण होती है।
- तम्बाकू में 4000 तत्त्व होते हैं,24 विष होते हैं और 42 प्रतिशत ऐसे पदार्थ होते हैं जो कैंसर उत्पन्न करते हैं।
- कैंसर पीड़ितों में से 20 प्रतिशत वे लोग होते हैं जो स्वयं निकोटीन का सेवन नहीं करते किन्तु धूम्रपान करने वालों के साथ रहते हैं।
- कैडबरी कंपनी की चॉकलेटों में सन् 2003 में जीवित कीड़े निकले।
- दिल्ली युनिवर्सिटी में आयोजित कोकाकोला प्रतियोगिता विजेता 8 बोतल पीकर सदा के लिये सो गए।
- खुला मुँह रखकर सोने वाला जीवन भर में 8 मकड़ी का मुँह में प्रवेश करा लेता है।
- सुनहरी मछली की याददाश्त केवल 3 सेकेण्ड होती है।
- एक चींटी पानी में 2 दिन जी सकती है।
- आधा चम्मच त्रिफला को छाछ के साथ प्रतिदिन लेने से मोटापा ठीक हो जाता है।
- जीरे वाला दूध पीने से कर्ण-रोग ठीक होते हैं। श्रवण-शक्ति बढ़ती है।
- एक स्वस्थ मनुष्य 5 सेकेण्ड में एक श्वास पूर्ण करता है। 14 सेकेण्ड में तीन और 60 सेकेण्ड में 12। यदि श्वासोच्छ्वास से णमोकार की 1 मालाफेरी जाए तो कुल 27 मिनट लगेंगे।
- 20 प्रतिशत मनुष्य क्रोधी ही होते हैं।

भारत में सबसे बड़ा, ऊँचा और लम्बा

❑ सबसे ऊँची चोटी	कंचनजंघा (28162 फीट)
❑ सबसे ऊँचा बाँध	भाखड़ा बाँध (740 फीट)
❑ सबसे ऊँचा प्रपात	गेर सप्पा प्रपात (कर्नाटक) 960 फीट
❑ सबसे ऊँचा पुल	चम्बल का पुल (960 फीट)
❑ सर्वाधिक साक्षरता वाला राज्य	केरल
❑ सबसे कम साक्षरता वाला राज्य	अरुणाचल प्रदेश
❑ सबसे अधिक वर्षा वाला स्थान	चेरापूँजी (मेघालय) लगभग 7500 मिली मीटर प्रतिवर्षा
❑ सबसे बड़ा शहर	कलकत्ता
❑ सबसे विस्तृत झील	वूलर झील (कश्मीर)
❑ सबसे बड़ा संग्रहालय	इंडियन म्यूजियम कलकत्ता
❑ सबसे बड़ी सुरंग	जवाहर सुरंग (1 3/4 मील वनिहल सुरंग जम्मू तथा कश्मीर)
❑ सबसे लम्बा बाँध	हीराकुण्ड बाँध
❑ सबसे बड़ा वन प्रदेश	असम
❑ सबसे अधिक गन्ना उत्पादक क्षेत्र	उत्तरप्रदेश
❑ सबसे बड़ा गुफा मन्दिर	एलोरा
❑ सबसे अधिक व्यास फैलाव वाला पुल	हावड़ा पुल
❑ सबसे बड़ा पशु मेला	सोनपुर का मेला (बिहार)
❑ सबसे बड़ी मानव निर्मित झील	गोविन्द सागर (भाखड़ा)
❑ सबसे बड़ा मरुस्थल	थार (राजस्थान)
❑ सबसे लम्बा प्लेटफार्म	खड़गपुर (प. बंगाल) 2733 फीट

❑ सबसे लम्बी नदी	गंगा
❑ सबसे लम्बा रेलपुल	नेहरू सेतु, बिहार में सोन नदी का पुल (10044 फीट)
❑ सबसे लम्बा सड़क पुल	महात्मा गाँधी सेतु (गंगा नदी 5.575 कि.मी.)
❑ सबसे लम्बी सड़क	जी. टी. रोड (1500 मील)
❑ सबसे बड़ा (लम्बा) डेल्टा	सुन्दरवन (प. बंगाल) (8000 वर्ग मील)
❑ सबसे घनी आबादी	केरल (655 व्यक्ति प्रतिमील)
❑ सबसे बड़ा चिड़ियाघर	कलकत्ता का चिड़ियाघर
❑ सबसे लम्बी सुरंग रेल	मंकी हिल और खण्डाला रेल्वे स्टेशनों के बीच (2100 मीटर लम्बी)
❑ सबसे बड़ा अभयारण्य	पेरिया अभयारण्य (केरल)
❑ सबसे पुराना पहाड़	अरावली पर्वत श्रृंखला
❑ सबसे तेज रफ्तार वाली रेल	शताब्दी एक्सप्रेस (नई दिल्ली–भोपाल अधिकतम अनुज्ञेय रफ्तार 140 कि.मी. प्रति घण्टा)
❑ सबसे अधिक दूरी तक जाने वाली रेल	हिमसागर एक्सप्रेस (गोहाटी–त्रिवेन्द्रम)
❑ सबसे विस्तृत हवाई अड्डा (नई दिल्ली)	इन्दिरा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा
❑ सबसे बड़ा पुस्तकालय	नेशनल लाइब्रेरी–कलकत्ता
❑ सबसे छोटा राज्य (क्षेत्रफल)	गोवा (क्षेत्रफल 3702 वर्ग कि.मी.)
❑ सबसे अधिक जनसंख्या वाला राज्य	उत्तर प्रदेश (11 करोड़ से अधिक)
❑ सबसे बड़ा राज्य (क्षेत्रफल)	मध्य प्रदेश (क्षेत्रफल 443446 वर्ग कि.मी.)
❑ सबसे अधिक वर्षा वाला राज्य	केरल (299.6 से. मी. वार्षिक)

भारत में प्रथम

❑ प्रथम समाचार पत्र	जेम्स आगस्टस हिकीज बंगाल गजट कलकत्ता जनरल एडर्वरीईजर (29 जनवरी, 1780)
❑ प्रथम टेलीग्राफ लाइन	कलकत्ता से डायमंड हार्बर (अक्टू. 1851)
❑ प्रथम रेलवे	बम्बई से थाणे (16 अप्रेल, 1853)
❑ प्रथम डाक टिकट	1 अक्टूबर, 1854 (कराँची में 1852 में)
❑ प्रथम इस्पात संयन्त्र	कुल्टी (प. बंगाल 1887)
❑ प्रथम सूती मिल	फोर्ट ग्लास्टर (कलकत्ता 1818)
❑ प्रथम पन बिजली स्टेशन	दार्जिलिंग (1887-88)
❑ प्रथम हवाई डाक सेवा	बमरौली से नैनी (1911)
❑ प्रथम विद्युत रेल सेवा	बम्बई से कुर्ला (1925)
❑ प्रथम बेतार (वायरलैस)	प्रसारण बम्बई (1927 में निजी कम्पनी द्वारा)
❑ प्रथम हवाई डाक टिकट का निर्गमन	1929 में
❑ प्रथम नाभिकीय रिएक्टर	अप्सरा (4 अगस्त, 1956)
❑ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम सभापति	व्योमेश चन्द्र बनर्जी
❑ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रथम महिला सभापति	ऐनीबेसेन्ट
❑ प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल	सी. राजगोपालाचारी
❑ प्रथम भारतीय एफ. आर. एस.	ए. कर्सेट जी
❑ इंगलिश चैनल पार करने वाली	प्रथम भारतीय महिला आरतीशाह
❑ प्रथम एवरेस्ट विजेता	तेनजिंग नार्गे
❑ प्रथम भारत रत्न प्राप्तकर्त्ता	डॉ. राधाकृष्णन

❑	प्रथम महिला राज्यपाल	सरोजिनी नायडू
❑	प्रथम मुस्लिम महिला–सुल्तान	रजिया बेगम
❑	प्रथम मुगल बादशाह	बाबर
❑	स्वतन्त्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री	पं. जवाहरलाल नेहरू
❑	भारतीय गणराज्य के प्रथम राष्ट्रपति	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
❑	प्रथम महिला प्रधानमंत्री	श्रीमती इन्दिरा गाँधी
❑	भारतीय गणराज्य के प्रथम मुस्लिम राष्ट्रपति	डॉ. जाकिर हुसैन
❑	नोबेल पुरस्कार विजेता प्रथम भारतीय	गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर
❑	संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा की प्रथम महिला सभापति	श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित
❑	भारतीय राज्य की प्रथम महिला मुख्यमंत्री	श्रीमती सुचेता कृपलानी (उ. प्र.)
❑	केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में प्रथम महिला मंत्री	राजकुमारी अमृत कौर
❑	भारतीय विधानसभा की प्रथम महिला स्पीकर	श्रीमती शन्नो देवी
❑	भारत की प्रथम महिला राजदूत	कुमारी सौ. वी. मुथम्मा
❑	एवरेस्ट पर पहुँचने वाली प्रथम भारतीय महिला	कुमारी बछेन्द्रीपाल
❑	अन्तरिक्ष में जाने वाला प्रथम भारतीय	राकेश शर्मा
❑	भारत का प्रथम फील्ड मार्शल	एस. एच. एफ. जे. मानेक शॉ
❑	स्वतंत्र भारत का प्रथम कमांडर इन चीफ	जनरल करिअप्पा

❑	स्वतंत्र भारत का गवर्नर जनरल	लार्ड माउण्टबेटन
❑	भारत का प्रथम ब्रिटिश गवर्नर जनरल	लार्ड वारेन हेस्टिंग्स
❑	भारत के अन्तिम ब्रिटिश गवर्नर जनरल तथा प्रथम वायसराय	लार्ड केनिंग
❑	मुगल साम्राज्य का अन्तिम बादशाह	बहादुरशाह जफर (II)
❑	प्रशासन को देखने वाला प्रथम मुस्लिम बादशाह	शेरशाह सूरी
❑	वायसराय की एक्जीक्यूटिव कौंसिल का प्रथम भारतीय सदस्य	ए. पी. सिन्हा
❑	मिस वर्ल्ड बनने वाली प्रथम भारतीय महिला	कु. रीता फारिया
❑	भारतीय जल सेना का प्रथम भारतीय सेनापति	वाइस एडमिरल आ. डी. कटारी
❑	परमवीर चक्र जीतने वाला प्रथम वायु सेना का अधिकारी	निर्मल जीत शेखो (मरणोपरान्त)
❑	अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में मुख्य न्यायाधीश बनने वाले प्रथम भारतीय	डॉ. नगेन्द्र सिंह
❑	आई. सी. एस. में सम्मिलित होने वाले प्रथम भारतीय	सत्येन्द्र नाथ टैगोर
❑	प्रथम भारतीय राज्य जिसमें साम्यवाद सरकार बनी	केरल
❑	सर्वोच्च नागरिक उपाधि	भारत रत्न
❑	सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं मूल्यवान हीरा	कोहिनूर

भारत देश के मुख्य बिन्दु

क्र.	नाम	राजधानी	क्षेत्रफल वर्ग किमी.	भाषा
1.	मध्यप्रदेश	भोपाल	2,97,085	हिन्दी
2.	राजस्थान	जयपुर	3,42,214	हिन्दी, राजस्थानी
3.	महाराष्ट्र	मुम्बई	3,07,762	मराठी
4.	उत्तर प्रदेश	लखनऊ	2,94,411	हिन्दी
5.	आन्ध्र प्रदेश	हैदराबाद	2,76,814	ऊर्दू, तेलगू
6.	पंजाब	चण्डीगढ़	2,50,362	पंजाबी, हिन्दी
7.	जम्मू-कश्मीर	श्रीनगर	2,22,236	कश्मीरी, डोंगरी, ऊर्दू लद्दाखी
8.	हरियाणा	चण्डीगढ़	1,95,984	हिन्दी
9.	गुजरात	अहमदाबाद (गाँधी नगर)	1,95,984	गुजराती
10.	कर्नाटक	बंगलौर	1,91,773	कन्नड़
11.	बिहार	पटना	1,73,816	हिन्दी
12.	उड़ीसा	भुवनेश्वर	1,55,782	उड़िया
13.	तमिलनाडु	चेन्नई	1,30,069	तमिल
14.	प. बंगाल	कलकत्ता	87,853	बंगला
15.	अरुणाचल प्रदेश	ईटानगर	83,578	मोनाया, आकामिजी
16.	असम	दिसपुर	78,523	असमी, बंगला
17.	हिमाचल प्रदेश	शिमला	55,673	हिन्दी, पहाड़ी
18.	केरल	त्रिवेन्द्रम	38,864	कन्नड़
19.	मेघालय	शिलांग	22,489	खासी, जयन्तिया, गारो
20.	मणिपुर	इम्फाल	22,356	मणिपुरी

21.	मिजोरम	ऐजाल	21,087	मिजो, अंग्रेजी
22.	नागालैण्ड	कोहिमा	16,527	नागा, अंग्रेजी
23.	त्रिपुरा	अगरतला	10,477	बंगला, मणिपुरी
24.	सिक्किम	गंगटोक	7,299	भूटिया, नेपाली
25.	गोवा	पणजी	3702	कोंकणी, पुर्तगाल
26.	छत्तीसगढ़	रायपुर	1,46,361	हिन्दी
27.	उत्तरांचल	देहरादून	51,125	हिन्दी
28.	झारखण्ड	रांची	76,677	हिन्दी

संघ राज्य क्षेत्र

1.	अण्डमान निकोबार द्वीप समूह	पोर्ट ब्लेयर	8293	अंडमानी
2.	दिल्ली	दिल्ली	1485	हिन्दी
3.	दादरा नगर हवेली	सिलवासा	491	मराठी, कोंकणी, हिन्दी
4.	पाण्डिचेरी	पाण्डिचेरी	480	फ्रेंच एवं तमिल
5.	चण्डीगढ़	चण्डीगढ़	114	पंजाबी, हिन्दी
6.	दमन तथा द्वीप	दमन	112	मराठी, गुजराती
7.	लक्षद्वीप	कवरत्ती	32	मलयालम

सबसे छोटे-बड़े पशु-पक्षी

❑ सबसे बड़ा पक्षी	शुतुरमुर्ग (आस्ट्रिया)
❑ सबसे छोटा पक्षी	हमिंग वर्ड
❑ उच्चतम पशु	जिराफ
❑ दीर्घतम जीवी पशु	नीली ह्वेल (500 वर्ष)
❑ सबसे लम्बी गर्दन वाला पशु	जिराफ
❑ सबसे विशाल सागर पशु	ह्वेल
❑ सबसे बड़ा सागर पक्षी	अल्वेट्रास
❑ सबसे बड़ा धावी पक्षी	स्विफ्ट
❑ पर विहीन पक्षी	कीवी (न्यूजीलैण्ड)
❑ विशालतम् थल-पशु	हाथी
❑ सबसे बड़ा मानुष जैसा एप	गोरिल्ला
❑ थोड़ी दूरी में सबसे तेज दौड़ने वाला	चीता
❑ सबसे बड़ी शिकारी पक्षी	भाडर (4 फुट लम्बा)
❑ सर्वाधिक बुद्धिमान् पशु	चिम्पांजी
❑ जो पक्षी कभी अपना घोंसला नहीं बनाता	कोयल
❑ रंग बदलने वाली सरीसृप	गिरगिट
❑ बिल्ली जैसा सबसे बड़ा पशु	सिंह

महत्त्वपूर्ण दिवस

दिवस	तिथि
गणतन्त्र दिवस	26 जनवरी
शहीद दिवस	30 जनवरी
अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस	8 मार्च
अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष	1975
वायुसेना दिवस	1 अप्रेल
नेशनल मैरी टाइम दिवस	5 अप्रेल
विश्व-स्वास्थ्य दिवस	7 अप्रेल
मई (मजदूर दिवस)	1 मई
कॉमनवेल्थ दिवस	24 मई
समग्र क्रान्ति दिवस	5 जून
स्वतंत्रता दिवस	15 अगस्त
अध्यापक दिवस	5 सितम्बर
राष्ट्रीय एकता दिवस	20 अक्टूबर
संयुक्त राष्ट्र दिवस	24 अक्टूबर
बाल दिवस	14 नवम्बर
नागरिक दिवस	19 नवम्बर
झण्डा दिवस	7 सितम्बर
मानवीय अधिकार दिवस	10 दिसम्बर
नौ सेना दिवस	5 दिसम्बर
किसान दिवस	23 दिसम्बर
विश्व पर्यावरण दिवस	5 जून
अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष	1979
अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा वर्ष	1980
अन्तर्राष्ट्रीय अपंग वर्ष	1981
अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष	1985
अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति वर्ष	1986
अन्तर्राष्ट्रीय बेघरों का वर्ष	1987

[redacted]

1. बिस्कुट का त्याग
2. केले का त्याग
3. सेव फल का त्याग
4. पापड़ का त्याग
5. ऊपर से नमक डालने का त्याग
6. चप्पल जूते आदि पहनने का त्याग
7. भोजन की थाली में से एक वस्तु का त्याग
8. क्रीम पाउडर लगाने का त्याग
9. लौकी आदि सब्जियों में से किसी एक का त्याग
10. खोवा का त्याग
11. किसमिस का त्याग
12. पिस्ता, बादाम का त्याग
13. गुड़ का त्याग
14. मिठाई पेड़ा का त्याग
15. पूड़ी-पराठे का त्याग
16. हरी सब्जियों को छोड़कर शेष का त्याग
17. तीन पहिया वाहन का त्याग
18. क्रिकेट नहीं खेलना
19. नींबू का त्याग
20. हरी या लाल मिर्च का त्याग
21. आईसक्रीम का त्याग
22. आँवला का त्याग
23. इमली अमचूर का त्याग
24. दही का त्याग
25. मूँगफली का त्याग
26. पोहा का त्याग
27. बेसन से बनी वस्तु का त्याग
28. एक बार मौन से भोजन करना
29. णमोकार मन्त्र की दो माला फेरना
30. रात्रि में कुछ नहीं खाना
31. एक घंटे मौन
32. 10 मिनिट तक प्रतिमा के समक्ष मौन बैठना
33. बिना दर्शन किये कुछ नहीं खाना
34. बिना दिये किसी के स्वामित्व वाली वस्तु नहीं लेना
35. झूठ नहीं बोलना
36. पानी छानकर पीना
37. अष्ट द्रव्य से पूजन करना

38. माता-पिता की सेवा करना
39. दो ही बार अन्न का सेवन करना
40. किसी का जवाब नहीं देना
41. चलते समय बात नहीं करना
42. 20 मिनिट किसी ग्रन्थ का स्वाध्याय करना
43. मंदिर जी में गुल्लक में दो रुपये का दान
44. ऊपर से घी नहीं लेना और न ही रोटी में लगाना
45. वैराग्यभावना का पाठ
46. मंगतराय कृत बारहभावना का पाठ
47. समाधिमरण पाठ करना
48. जिनवाणी को व्यवस्थित करना
49. किसी एक ग्रन्थ की जिल्द करना
50. किसी की निन्दा नहीं करना
51. अपने हाथ से न पंखा चलाना और न किसी से पंखा चलाने को कहना
52. मंदिर जी में अलमारी, पुस्तक रखने का स्थान आदि साफ करना
53. अपने हाथ से लाइट न जलाना और न जलवाना
54. आपस में जयजिनेन्द्र करना
55. गद्दे पर सोने का त्याग
56. तकिया नहीं लगाना
57. 1 जोड़ी से अधिक कपड़े नहीं बदलना
58. साबुन से नहीं नहाना
59. अंगूर, नाशपाती का त्याग
60. जामफल, आम का त्याग
61. सोड़ा-साबुन कपड़ों से नहीं लगाना
62. अन्तराय पालना, चींटी आदि मृत जीव आने पर भोजन का त्याग करना
63. कोई नई चीज नहीं खरीदना
64. आवश्यकता से अधिक कोई वस्तु होने पर उसका त्याग
65. चलते-चलते कुछ भी नहीं खाना
66. भात चावल का त्याग
67. बालों में तेल नहीं डालना
68. दर्पण देखने का त्याग
69. पिंड खजूर का त्याग
70. ककड़ी, संतरा में से एक का त्याग

संकल्प करें

1. अपनी प्रत्येक बात मुस्कराते हुए प्रारम्भ करें।
2. केवल एक रोटी गाय या किसी गरीब को दें।
3. एक पौधा लगाने का नियम लें।
4. किसी के काम के लिये मना नहीं करेंगे।
5. किसी से मिलने पर सबसे पहले जय-जिनेन्द्र, ओम्, नमस्ते से ही बात की शुरुआत करें, हाय हैलो से नहीं।
6. मंदिर, ऑफिस, घर के सभी पौधों में पानी देने का नियम लें।
7. टी.वी.देखने का त्याग करते हुए अपनी पसंदानुसार एक किताब पढ़ें।
8. प्याऊ निर्माण में सहयोग करें या किसी न किसी को पानी अवश्य पिलाएँ।
9. पूर्णतः शाकाहारी बनते हुए माँसाहारी वस्तुओं का त्याग जैसे-चमड़ा, रेशम, संपूर्ण सौंदर्य प्रसाधन का त्याग करें।
10. कोई भी वस्तु पॉलीथिन में न लेकर कागज के पैकेट का उपयोग करें।
11. सफाई व्यवस्था बनाने के लिए मंदिर, ऑफिस, घर, दुकान का सारा कचरा एक डिब्बे में ही रखें। सड़क पर कचरा बिल्कुल न फेकें।
12. अपने सारे काम स्वयं ही करें ताकि दूसरों को तकलीफ न हो।
13. जो पुस्तक आपने पढ़ ली हो, उसे किसी न किसी से बदल लें।
14. बच्चों के साथ बिताएँ (उन्हें कहानी सुनाएँ, घुमाने ले जाएँ जैसे भी बिताना चाहें)
15. पशुओं की देखभाल करें।
16. सब्जी बिना मोलभाव के खरीदें।
17. किराने के सामान में 1 वस्तु खादी ग्रामोद्योग से अवश्य खरीदें। जैसे-अगरबत्ती, शैम्पू आदि कुछ भी।
18. अपने द्वारा किए गए अच्छे एवं सराहनीय कार्यों को या दूसरों की अच्छी बात, अनमोल वचन या पसंदानुसार वाक्यों को एक डायरी में लिखें।
19. भोजन, नाश्ता पूरे परिवार के साथ ही करें अकेले नहीं।
20. आप अपनी मुफ्त सेवा दें या ऐसे की मदद करें, जिसे आपकी मदद की आवश्यकता हो जैसे-बच्चों को पढ़ाना, बाजार से सामान लाना, काम में मदद करना आदि।

विशेष अवसरों पर इन नियमों का पालन करना

1. महिलायें कपड़ों के बदले में बर्तन न लेते हुए उन्हें गरीबों में बांट दें।
2. बच्चों के पुराने खिलौनों को कबाड़े में न डालें अपितु उन्हें गरीब बच्चों में वितरित करें।
3. अपने हर जन्म दिवस, शादी की साल गिरह आदि पर एक पौधा अवश्य लगायें।
4. रिश्तेदारों में मित्रों में फोन कम करते हुए पत्र व्यवहार को ज्यादा महत्त्व दें।
5. एक न एक बच्चे की केवल एक महीने की शिक्षा का भार वहन करें।
6. अपने घर, कार्यालयों के सेवक के साथ आत्मीयता/अपनेपन से बात करें व सहयोग करें। उन्हें बाई, काका, चाचा, भैय्या का सम्बोधन दें।
7. अपने घर के बेकार चश्मों को किसी को दान में दें।
8. अपनी पसंद की पत्रिका के सदस्य बनें। उसमें लेख, कहानी आदि स्तम्भ में अपना सहयोग करें।
9. ऐसी संस्था में जो मानव, समाज व राष्ट्र सेवा से जुड़ी हों जैसे-अनाथाश्रम, वृद्धाश्रम, गौशाला जाकर एक दिन का खर्च वहन करें तथा कुछ घंटे बिताएँ।
10. बच्चों की कापी किताबें (सम्हाल कर रखें) न बेचकर उन्हें अगले साल किसी गरीब बच्चों को अवश्य दें।